तैं।कौहैकोविक्रमपरपक्षहोइदेऊतवमत्र
।नियहवातजरश्रीनिहैं।कालवृत
वराविप्रैनप्रेकत्र्यांकटारिप्रैनजैलोंच
प्रहीकोहोनिहै॥२७॥दोहा॥विहविनः
हलापुलीजवतक्वीरविलासु॥वैचैनवर्डन
लकुंचौलहघोसुवांमासु।टीका॥ [illegible]
नतीतोप्रचतुनाइकामैाम। [illegible]
प्रभाइकेदासार तुमेदु [illegible] ग्रहपाप्नोहजहें [illegible]
घरोईकाठो [illegible] तान्होनेघातैंकरोलिहु [illegible]
टोहिनापुछीकिहितवा [illegible]
हारिकूले
।पनहे।कैसेंहराजाोपचौलह्केघोषु [illegible]
तोवचैनोहिंग्रोइ [illegible] गुनीनुनि
कोऊकोहोनिषुक्रौमुनीनहोइ [illegible]
रकौतैकरकानमोवकरोतु [illegible]
ताविकोहेन्हुनाहोकौमिन्हुकोव [illegible]
तुरंवाहिप्रकाविनेनकि [illegible]

नो प्रातकौ पंकजु भौतियकौ सुसु फूल्यौ कद फुट
मिल्यौनौ ८७३ घर घर डोलतु दीन है जत
नजाचतु जाइ दियें लोभ चसमा चख नु लघु पु
वडोल माइ यह लोभ कौ अधिकाई परस
विककवि कौ उक्ति ठौर है ठौर घिघा
फिरे लघुता जित हौं ति त्या पु प्रकासे जा
वही परजाइ वडाई हि है भाँति दु
ऐसो फेरे चसमा न रुनै नतु पे भ
जद्दपि है ग्राति सूद्धिम हूं वर यहि त
र घनासे ८७४ कालवूत दूती विना जुर
नमान उपाइ फिरि ताकै टारै न सै पाकै प्रेमल
दाइ यह परस्ता कि क भौति प्रेम क परि
करिवे कौ उपाइ कवि कौ उक्ति
दाऊ कौ वनाइ चाहे कोउ सोतौ विनु
त क्यों हूं वनतु न वानि है त्यौं प्रेम मंदिर
लवूत दूती ना हि वीचदि यें विनु क है कैसे

नकौरोवकवादुग्यनोकुकिलोकुजुहोइसुहेऊ[illegible]
कोपस्योजुसुभाऊवैहैनिवैहैनिवैहैजगजोऊ
गटेवकोसिद्धसवादुढुरैनकितोदुउताकेरोव
८७॥दोहा॥जेतोसंपतिकृपननैकेतेतोसूमति
र॥वढतजातज्योंज्योंउरजत्योंत्योंहोतकठोर॥ट
॥यहपरस्ताविकऋपनकेजितनौसंपतितितनौये
तातोकोदूषनतकरि[illegible]॥कवित॥कोनदू
भाइकेदाइसौसूमनैं[illegible]कैसेंसंपतिपाइ॥त्योंव
रोईकाठोनविलोकियेसूमतिकोसरसाई॥ताहि
रिकसोचहियेकदुवातदहैवाविकेजियगाई॥जै
राजवैरेंतियकेउरत्योंत्योंगहैअतिहोकठिनाई॥
[illegible]॥पियविछुरनकोदुसहदुसहरसुजातप्योंसा
रजोधनलोंदेविपतितजतप्रानऊहिवार॥टी
हपरस्ताविकहदुसदोऊयेकचककविकीउक्तिनाइ
दमेसखीकोवचनसखीसों॥कवित॥नेहुलगोग
भावनसौंवसिवोससुरारिकोजीमेसुहानो॥पीहर
कोऊआयोचलावननाहीसमेसुनिज्योंअकलो[illegible]

सोवे रूप कुरूपन कोइ ॥ मन की रुचि जेती जितै तितै
रुचि होइ ॥ टीका ॥ यह परस्ताविक कवि की उक्ति न
भेद मैं सखी को वचनु नाइका सों ॥ टीका ॥ सुंदर
को ही तिहिं काम है जो अपने चित मैं न हि ग्यावे जो चित
कुरूपु चुभ्यौ तौ वहै ऊरवौं अति मोदु वढावे ॥ हो
सैमई से मैं सब सुंदर रूप कुरूपु न कोउ लखावे ॥
जेती जिहिं ठौर वढै रुचि सो तिहिं ठौर रतितौ रुचि प
मूठ चदौं वैंहू रहे परसौ पीठि कचनार ॥ रहे गोरे
॥ टीका ॥ यह परस्ताविक
राखिवौ तउ हियै पर हार ॥ टीका ॥
वि की उक्ति ॥ टीका ॥ काहू वेमूंड चढै रहि ये न येहा
चित मैं चतुराई जो कोमनतोर हियै जो गोरे परि तौ
अधिके गरुवाई ॥ मूंठ चढें हू परे रहै पाछे कि वंध न
तिके सन्निपाई दे वोर सौ जो गोरे हू परै तौ विहार
यापे रराई ॥ ८७० ॥ टीका ॥ भांवरि अनभांवरि भरे
कवार अपनी अपनी टेव को छुटै न सहज सु
यह परस्ताविक कवि की उक्ति ॥ टीका ॥ काहू
सो सौ सखी जिय मैं धरो सो ऊ लाय

आइ सैतौ ओगुनगहा करै।। लोकलोकलोपैयेव
हाकोपी कजा हि ठीक वतायेको नाहि चौकेनेर
।। लाजनकेकोएको नेकौनहि टकौनकटेको
सुनौ वैठेना वदियैमहा करै।। संगतिप्रसंगतेवु
वुरौ भलौ होइ देवी सन्ना च्यसंगतिकोसंगति
रै।। ९७।। दोहा।। वटतवटतसंपतिसलिल
सरोजु वटिजाइ।। घटतं घटतसु निफिरिघटै
मूलकुम्हिलाइ।। टीका।। व्रहपर स्लाविक क
उक्ति।। कवित्त।। सदनसरोवरमैं सुषकीहिलो
संपतिसलिलु ज्यौंहीं त्यौंहीं सरसातु है।। पुरु
टसवु जगातु वसानतु है मनकूं सरोजु त्यौंहीं
अधिकातु है।। जवओनिपरे कोउ आतपुत्रादि
जलको प्रमानु फिरि निघटतु जातु है।। कहे क
व्रहकेमनलुवटेनौसुवटेनौ क्यौं हूं पेनघ
मूलकुम्हिलातु है।। ९८।। दोहा।। सैमैंसेमैंसु

लानपरेकछू आजु लोकाकू नपायलहो है ना
अगाधाइ हातलगिकैसेंहूंकोउ नपावतु थाह है मेर
सापनुके मनवूडे अनेक अग्रवंभोमहोहै ७
गनुकौंवह प्रेमसमुद्रपगारसदोहै ६५
दोषुलगेसवनुकहतिहै तैवैंन कुटिलवंकधु
भयेकुटिलवंकगतितैंन यहपरस्ता
संगकोदोषुलगेयह दृष्टांत कविकौ उक्ति
और तेजैसेइ संगरहै सुभलौविधि २ ६९
गतिदोषुलगेसवकौंविधिहै यह आदि अनादि
सकैहूजगमैंयरवातप्रतत्रपूवीननिअंगतें
भेकुटिनिकोसगुपाइकैनैननुहूंगतिवंकगहीहै
संगति सुमति नपावही परेकुमतिके
साहु भेलिकपूरमैंहींगनहोइसुगंध
अर स्वाविकजो दुरवुद्धिके ठारमैपरस्रोताकोसं
नाहींहोततताकोदृष्टांतकविकौउ

स्मगरैं येकसौ येवां निहैं॥ ज्यों ज्यौं वटवारि लेहै त्यौं
नवत दोउ सकल प्रवीन यवात उरज्यौं निहैं॥ औरु
ठिन उरोज अरुनी चन रच्यौ करै ठरहत जैरकाहू
कौं निहैं॥ संपति लहत त्यौं त्यौं च्यौं रहत तैं नैं नफैरि
नर महोत भैयै विभौव निहैं॥ १७॥ दोहा॥ वडेन कू
विनु गुननु विरद वडा॰ पाइ॥ कहत धतूरे सौं कनकु
गहैंनौं नजाइ॥ दोहा॥ यह परस्तावि कविकौ उक्ति॥
॥ वेडो जोवनायौ जगदीस सो वडौ ई ह्वै हैं ताहीस वुजगु
रतु वडाइ कौं कोउ कविक सवहै तै सौं ईलहतु मोनु कौं
रैरे ख्यो कैयौं ने के यौ वरताइ कौ छोटो जो पे वडे गुन विनु
वडो होतु नाऊं को वडाई महिमंडल मैं पाइ कौ छोटो पे वस
घनूरे उ कहावतु है क्यौं न पहिरतु को उ गहनौं गढ
१९॥ दोहा॥ गिरि तै उचे रसिक मन वूडे जहां हजार॥ वे
पसु नरनि कौं प्रेम पयोधि पगार॥ दोहा॥ यह परस्तावि
इकौ अधिकाई कविकौ उक्ति॥ कवित्त॥ जाको प्रमां

ञ्जौ गरसैा विधिताकौ वटे जगते सोइ तोरा ॥ ना

विनु जानै अजान के पेलत आपु लहै नहि थोरा॥

सरो गतै काहू कपूतनि छांडै लोकपूर । ग ।

रा ॥ सीतलताई सुगंध घटै यह कोउ वरोजि

निभोरा॥ ९९१ ॥ केसे छोटे नरनु ते सरत व

नुके काम ॥ मटौ नाद माभौ लातु कौं काहि चूहावे

॥ दोहा ॥ यह परस्ता ॥ छोटे तैं वडै कौ गरजन से

कौउकि ॥ कवित ॥ जाकौ जितो जगदीसर ञ्जौ

कै फ़ वे सिर ते तोइ भारो ॥ वात विचारि यहै

अवृथा मति सोचु विचारो ॥ छोटे ते कामु ।

तो असा हैहू सु के पचिहारो ॥ कोटि करौ परि चूहावे

माहूं मटौनो नहि जातु नगारो ॥ ९९२ ॥ दोहा ॥ सं

सुदेस नर नवत दुहु निइकवानि ॥ विभवसतर

नर नर मविभौ कौ हानि ॥ दोहा ॥ यह परस्ता

नर नर मविभौ कौ हानि ... सुदेसनर रहै सदां

।।ससुरनैंसरम्यो विचारि सुखु मानि हियैंकनैरे
ां ऐसोवहू सुरहथीजां निकैं।। कौहैं कविकै स्वरानो
सुखवल्लो कैवेकों लोभललि मागनजगतुल्ला
ज्यां निकैं ।।५८।।दोहा।।सेवसुहाईलगतसेवेसु
ग्रेठां मे।।गौरमुवैवैरी लसैत्र्यलनपीतसितस्याम।।
...।।यह अन्योक्ति ग्राहकठौरकौप्रभाऊजुआइप्रापतहो
सुयाहौही लगे।।कवित्त।।नीकैकैंसंगत्रलीकोउ
कौलगैयहवातप्रतिज्ञानिहारी।।वौरसुहायैंवसैतैं
येलगैंसवहीऊमगेंढविभारी।।कैसोवढावतिमै
हियैंनवनागरिकैमुखव्याहमेंगारी।।गोरेलि लारलैं
वहुलीसितरातीहरीपियरीअरुकारी।।५९।।दो
नीतल्लतरलसुवासुकोघटैनमहिमामूल।।पौनस
ज्यौंतज्यौसोराजांनिकपूल।।६०।।यह अन्यो
कीउ आठेगनौहैंभलोमा। सुँ — करनें

करौ तु वात जग कुरलता तजो नदीन दया।

दुखी होउ गो सरल हिय वसत त्रभंग लाल।

चाहतु

यह भक्ति को वचन भगवान सौं

हौं कृपनें हिय मांझ वसाये तु मैं प्रभु जैसें तैसें कौं

नकु वात करौ सिगरो जग सोचित यै वह चाह तें

सें हौं कुटलाई तजो न कृपानिधि जो न तुहीं कृपनें

जिय जैसें दीनदयाल कहावत हौ उर सूधो में वंवि

होतु बैसें पर कौन रहेवौ सें पौं सुनरव

कुसुर है धीज ताबि रूप रहचौं लगि लगै लागन

सव जग चांनि यह पर स्ताविक सूं मैं नैनी

पद्मपे बरतु अधिक भयो कवि कौ अहि

सुंदरी सुहाई सुकुमारि ससि वदनी को सोभा

निकाई कवि कहै हेको ववांनि नैनत जिठां लो ता

सुनि हरि विहाति सवै क्रति संगाति याकैं चाईवैसर

सैवं

यनेंघरिआवेंतोसबकीपूजाकरीये॥
जातेंअतितसबकोगुरुहे।तबकागक
ही मित्रकछपयामूसाकीपूजा बिसेष
करी॥जातेंयहबडोधर्मात्माहो।दया
कोपात्रहे॥हिरणकयाकोनामहे॥सम
स्तमूसेनकोराजाहे।याकेगुनकीस्तुति
सेसनागसहंश्रमुष कदाचित्नकरिस
के॥यहकहिचित्रग्रीवकीकथासुनाइ
जेसेचित्रग्रीवकेबंधनछिडाये॥यहसु
निमथरआदरसोंपूजाकरियहकही।हि
रंन्यकअपनोइहबनआइबेकोकारन
कहे तबमूसाकहतहे॥सुनो॥तआद
चंपानगरीमेसंन्यासीकेमठहे।तहांचू
डाकर्नसंन्यासीरहे॥संन्यासीभिछाको
अंनराविआनेमेंधरिराख्यो॥आपुसोवे॥
सोवहअनकूंकूदिकदिषाउ॥पीछेवा
चूडाकरणकोमित्रवीणाकर्णआयो
तादिनवास्योबातेंकरतामेरेडराइबेको

लागी रोवौ ॥ तब बी गा करनै कही मेरी ॥
बात नांही श्रु नत है ॥ सु तुम्हारो चित्त क
हां है ॥ तब चूडा करनै बोल्यो ॥ मित्र तेरी
बात सों बिरक्त नांही ॥ परि हे बिणा मू
सा मेरी भिक्षा कों भक्षत है ॥ तब बी
णा करनै कही ॥ या मूसा कौ बल थारो
एतो ऊंचो कूदतु है सु कौ ऊ कारण है
॥ श्लोक ॥ नाकस्माच्छुवतिवध केम षत्तु
अचुंबति ॥ पति निर्दमालं गप हेतुस्तत्र
भविष्यति ॥ टी० ॥ कटठ दे ज्ञाते तरुण
स्त्री बूढे भर्त्ता कों गाढो आलिंगन दे कै
मप करि चुंबन करै श्रु कौ नेकु कारन
बिना न करै ॥ यह श्रुनि चूडा करण क
हतु है ॥ तथा कौ गौड देस मैं एक कोसा
बी नाम नगरी है ॥ तहां चंदन दास एक
बनियां बसै ॥ सो वृद्ध श्रुभ्रु वै कौ धन के
मद करि काम ब्याकुल भयो ॥ तब का ऊ
एक बनियां की बेटी लीलावती नाम वि

तहैं॥ गोदावरी नदी कैं तीर बडो येक सेंवरि को रूष है॥ तहां दसों दिसा कौ पंछी अनेक आइ विश्राम करैं। तहां येक समैं प्रातकाल चंद्रमा के अस्त होत॥ लघुपतनक नाम कवा॥ जाग्यो सो एक जमके रूप व्याध आवत देष्यो॥ सो न जानिये आगें कहा होइ जब वह व्याध आपणे निकट आवत देष्यो तब व्याकुल होइ नि चिन्त्यो॥ २३॥ टी०॥ जातें इह कही है नय॥ तथा शोक मूर्ष ही कों व्यापतु है। पंडितन कौं न हि व्यापतु॥ अरु जो विषई संसार है तिन कूं सो क भय की पोचा हिये॥ २४॥ टी०॥ नित्य उठि विचारै मरण: व्याधि: सोक: इनम हिमरैं आज मेरे मति कछु होई॥

यकरिएकवातकही॥१०॥टी०॥
अरुजोसुवुधीहोयसोकाव्यसास्त्र
कोविनोदकरिदिनगमावै॥औ
रजोमूर्षहोइसोकलहनिद्रा:क्रोध
इनकरिदिनगमावै॥तातेंतुम्हारे
कोतूहलकुं।संतोषकोंचित्रकथा:
अरुसुबुधिकछुवाकीकथाकहे
तऊं॥तबराजपुत्रवोलेकहोजुत
बविष्णुसर्माकहीसुनऊंपहलें।
मित्रलाकथाकहतऊं॥१२॥टी॰
जोउपायकरिहीनहोइ॥अरुद्रिव्य
करिहीनहोइजोवाकेवुद्धिहोइ
तोवहवुद्धिकरिसर्वकार्यसिद्धि
करहि॥जैसेंकवा:कछुवामृग:
मूसा:इन्हबुद्धिहीकरिकार्यसा
ध्यो॥तबराजापुत्रकहतहेयह
कैसीकथाहै॥तहांविष्णुशर्माक
हतहे॥१३॥टी०॥विष्णुसर्माकह

चंदकौप्रकासअंधकारकौहरै॥जैसें
बुढाई रूपकौंहरै॥जैसैहरिकथाप
पकौं हरै॥जैसैंजाचंगणासबगुणकौं
हरैं॥ तातैंहूवौरकेअंनकरिपेट
काहेनभरैं॥यह मृत्यकौकारणहै॥जु
परायेअंनकरिपेटकौंसंतोषकरै॥
यहनीतिबडोदूषणहै॥जोथोरोप
दिपंडितकहावै॥मौलकौलीयै॥
मैथुनकरै॥ पराधीनभोजनकरै
एकेवलदोषहैं॥औरऔसैंप्राणी
कौजीवनमरनतुल्यहै॥बहुतदि
नपरदेसमरहै॥परायैंभोजनकरैपर
घरसोवै॥अरुरोगी॥इनकौजीवन
मरणतुल्यहै॥जौमरैतौ विश्राम॥
यहविचारकरिवहऔरेपरकौअं
नहीलैनलाग्यौ॥जातैंलोभबुधितैं
बुधिचलै॥ लो ॥लो

मंथरबोले ॥ मित्रहिरन्य कतुमवक्रसं
ग्रहकीयो ॥ ताकौयहदोषहै ॥ श्लोक ॥
उपार्जितानामर्थानी ॥ त्यागएवहिर
ष्यणं ॥ तडागोदरसंस्थानां ॥ परिवाह
मिवांभसा ॥ टी० ॥ मंथरकहतहै ॥ सुनो
होजातेंकष्टकोउपार्ज्योंधनकोदान
करिये ॥ इहहैवांकीरष्या ॥ जैसेंतावज
लकस्निरिये ॥ पीछेंपानीकाटदजि
तंबहीवरहै ॥ अरुअनेकष्टकरिपा
योद्रव्य ॥ प्राणकुतेगरुवो ॥ ऐसेद्रव्य
कीएकोगतिलनीहेजुदानकरिये
ओरबातकीविपत्तिहै ॥ अपनेंअर्थ
छांडिपरायेअर्थधनबिढवै ॥ सुजैसे
वेगारीनरवहिवेकोदुषपावे ॥ फल
कछुनांही ॥ औरद्रव्यकोदानभोगुनां
ही ॥ तिहिद्रव्यकरिजोधनीकहावत
हैतो ॥ वाधनकेरिहमकुधनीकाहेन
होहि ॥ दांनभोगनवाकोनहमको

वसे षयहुजुगये तें वाकों अधिक डषा जा
ते बचन सद्दत्तं दंनां॥ बै बिनां ज्ञांन॥ छिमा
सहत सूरहैं॥ न्यागम दिन धनां ये न्या रि
डुर्ल्लेनहैं॥ जातें नीति बिषयहृक हौहै॥
जो सें ग्रहुसदा करिये॥ अति संग्रहनको
जो अति संग्रहे तें धनुषकरि स्यार ओछुदै
मूवो॥ त बहिरन क कहोयहै केसो कथा
है॥ मंथुरुक हतुहै॥ किल्यान कटमें बिर
धनाम न्या धरहै॥ सुयदिन सिकार कों व
धपवें तके बन में गयो॥ जाइ मृगमारयो॥
मारि घर कों आवत पेंडमें यक सूकर देषि
रिषि मृग कों भूमि परि राषि सर करि सूकर
मारयो॥ त वसूकरि है आयुगजें वत्त होय॥
व्याधके गुह्य स्थाल बिषे मारयो॥ जातें व्या
धमूवो॥ तातें नीति बिषकहै हे॥ पांनों क
रि अतिनि करि॥ बिषकरि॥ दशो रकरि॥
मुषकरि॥ राकरि॥ पवैं तें परि॥ इतनेमे
मैंनै मरन पायपांगी

घेरावनामस्यारत्रायो॥ आहारफिरत मृगसूकरव्याघ्र॥ एतीन्योदेषे॥ विचारतन्नयो॥ बहुतषाबेकोपायो॥ जैसेंदेहकोंअनविचारेअकस्मातदुषआवेतैसेंसुषकुंआवै॥ अरुसुषकोदीनताकरे॥ कष्टसहेंसुअधिकश्रेष्टइनकेमासकरिबहुतदिनमेरेअहारहोइहे॥ एकमासमनुष्यतें॥ दोइमासमृगतें॥ दोइमाससूकरतें॥ एकदिकों॥ अहारधनुषकीजिहकरिहों॥ तोपहलेधनुषकीजिहिषाउ॥ यहविचाकरतधनुषकीजिहिकोगोसाषात॥ जिहटूटीगोसाजोरसोछातीमेलागयो॥ लागतहीस्यारमुवो॥ ततेंहोंकहतहोंअतिसंग्रहनकीजेऔरजुषाइ॥ जुदेइसोइधनकोधनीजांनिये॥ अथवामूढ़ैपरवाकीअस्त्रीवाधनुकोभोगअैरकोउकरें॥ अबयहरहोजोबातगई॥ २१

ताकोनबिचार॥जोतेजुबस्तपाइयतहो
इ॥सुनाहीपाइबेलाइकाताकोंवांछोजो
गई॥गईबस्तताकोसोकनकरै॥आपदा
तेमोहनपावे॥तातेंमित्रतूसदामोहते
रहतहोह॥जोतेंमनुषशास्त्रकूपढि
पढिमूर्षहोतहैं॥तातेंक्रियावंतहोइ
सोपंडित॥जेसेंरोगीकोंनीकेंबिचार्यो
ओषदनामहीलीयेंरोगकोनासहोइ॥
षायेतेंनासहोइ॥तातेंमित्रयादसोंप्री
तिकरिये॥जातेराजा॥कुलवधू॥ब्राह्मण
सेवक॥मंत्री:दंत:केस:नष:मनुष्य:॥
येसबठोरछोडेसोत्रानपावे॥यहजा
निबुधिवंतहोइसोनछोडे॥जोछाडेतौ
कपूतकोमतहै॥औरकाग:कपूत
मृगयेअपनीठोरनछांडे॥अपनेहीठो
रमरें॥औरसिंह:सापुरुष॥हाथीअैठो
रछांडिजाइ॥तहांईबडाईपावे॥जातें
सूरअहंकारीवाकोंआपनोनपराये॥

जादिसमैं जाइ सोई आंपनो ॥ बाङबलक
रि आपनो करै ॥ जैसें स्यघ जाबन मैं जा
इ तहांही हाथी मारि ॥ वाके लोकुतें आ
पनी ही प्यास बुझावै ॥ जैसें कूवा मेंको
मींडक ॥ सरोवरको मल ॥ आपही उपजै
जैसें उदिमी पुरषकों सब संपदा आय
ही आवै ॥ और सुष आवै तो लोग वैड
ष आवै तो लोग वै ॥ जातें सुष दुष चक्र
की नाई फिरत है ॥ जातें जो उद्यमी हो
य ॥ उद्यमी होय ॥ चिंतातें रहित होइ
क्रिया बिधिकों जाणे ॥ जाकों दुषन
व्यापै ॥ असे पुरुषकों लछिमी आपु
ही आवै ॥ और सूरमा अर्थकुं बिनाब
डो मनमें सुपावै ॥ उ चो पद पावै धनवं
त लोभी होय तो कंअ वज्ञा कोंपावै गु
णत्ते स्वभाव ही तें नई जैसी सिधकी सो
भा जैसें सोनें कूं केअलंकार करि नहोइ
व करवो जो बडो मनमानुदीप्य तो सिं

घकोमोसनमानुहोतहै॥ तातेंहिरन्यक
धनगयेंसुषगये दुषकाहकोंमानलहै॥
जातेंधनकी गतिगेंदकीसीहै॥ छिनवेंह
हाथआवे छिणमेंनसाइ॥ जातेंनीतिवि
षेंयहकहीहै॥ दृषिमेघकीछांह॥ नीचसो
प्रीति॥ ह्रिरनाजकी भूमिजोबनकोमद
धनु॥ इनकोंभोगथोरहीकालहै॥ जातेंज
बहीजन्महोतहै॥ तबहीमाताकेस्तन
दूधतेंभरतहैं॥ औरजिनहंसस्वेतकीये
सूवाहरेकीये॥ मोरचित्रबिचित्रकीये
सोमेरकंजीवनकोउपाइकरिहै॥ और
धनकोकौतकसुनो॥ उपराजतेंदुषराषि
येदुषसों॥ बकतबषेतोमोहकरै॥ धनक
बकसुषनकरै॥ औरजोधर्मकोधनबांछ
है॥ जातेंजोधनकीबांछाछाडेसोईभलो
बहैसबतेबडोधर्महै॥ जातेजोकीचलग
इक्षोवे॥ तातेजुनलगावेसुभलो॥ औरजै
सेंमासआकासमेंपछीषाइ॥ भूमिमेंबाघ

स्यारषांई॥ जलमैंमछरीषांई॥ तैसेंधनकौं
सर्वत्रभयहै॥ औरराजाते॥ चोरते॥ अग्नि
ते॥ दुर्जनते॥ धनकौंसदाभयहै॥ औरद्र
व्यकौउपराजिबौदुष॥ तामेंयहबडौ॥
दुषजितनीयंछ्यातितनौंहोइ॥ जातेंब
डेकष्टकरिधनपावेजे॥ बडेकष्टकरि
राषिये॥ गयेतेंबडौदुष॥ तातेंधनकीबां
छानकरिये॥ बांछाकेंछाडेंसबेगकुर
जहातेबांछाकीन्हीतहांतेसबकभयो॥
जेबांछाकीनीतोआगेंऔरहोइ॥ जो
बांछाडेतोसुष॥ जोभावीलिष्याहोइसो
ईहोइ॥ जोभावीनांहीसुनहीं॥ आगेंबहु
तकहाकहिये॥ हमारेंस्नेहतेंमित्रह
महिमिलिरहारहे॥ जातेमरणताईप्री
तिरहे॥ जोगउपजे तबहीनसाय॥ दान
निसाकदेहिं॥ ये असाधपेनहोइ॥ तबका
गकेतहे॥ तबकागकहतहे॥ मित्रमं
थरत धंन्यहे॥ आऔकोलाइकहे॥ जा २५

दा तैंमहांनहीआपैतेंउद्घारिबेकोंसमर्थ
होंहि॥जैसेंहाथीकीचमैंअटकैतो
हाथीहीपैंकढै॥औरमूमिमेंसोईछ्रु
रषसक्तिकरिबेलाईकहै॥साधनमें
सोईनहो॥जाकेंघारतेंजाचग॥आ
रुसरनागत॥अरुअतिथ)निरास(
होइबिमुषनजांय॥तबयहबिचार
करितीन्यों॥कागकछूहामूसा)आ
पनीइछ्याअहारक्रीडाकरिसंतुष्टनये
एकत्ररहहि॥तहांआगेंचित्रांगना
मा मृगकाऊकोडरपायेआयमिल्यो
वाकेंपीछेंव्याधाआनदेष्यो॥देषिमंथ
रजलमैंपैठो॥मूसाबिलमैंगयेकाग(
रूषपरबैठो॥तबकागहरिलोदेषेतो
कोउनांही॥तबकागबोलो॥तबका
गबचनसुनिसबएकठोरबैठे॥तब
मंथरकही(मित्रमृगनीकेहो॥सुषते
आये॥अहारकरऊ॥सुषतेपानी(

पीरह्यौ॥ इह बनमें रह्यौ। सनाथ करह्यौ
तबचित्रांग कही॥ व्याधके डर पाये
तुम्हारे पास आयो। होंतुमसों मैत्री य़की
ये चाहत हौं। तब हिरन्यक कही हम
सोंमित्रता है हीं॥ जातें पुत्रसों संबंधी सों
और जासौं परंपरा चली आइ होइ। औ
र जो। आपदातें राषिलेइ॥ ये चारयौं मे
त्रे है। तातें जैसें आपनें घररहियें तैसें रहौं
य़ह सुनि मृग पानी पीयो। आहारु करि
सुषतरि बैठौ॥ तब मंथर कही मित्र कों
न करि डर पायें है। तब मृग कहतु है मि
त्र या निर्जन बनमें व्याधा आयों है। और
कलिंगदेसमें रुकमांगद राजा रहतु है
सु दिग बिजै करत चंद्रभागा नदी की
तीर डेरा कीयें है॥ सु कालि प्रात ही
या सरोवर कों आयौ चाहतु है। यह सु मे
न्यो॥ तातें ईहां को रहिबौ भलो नांही
य़ह जांनि बूझि येसो करह्यु। मंथर

डरकरिकही॥तामेंश्रोरमरोवरजीव
काकमृगकही मलीवातजाकू॥तब
हिरन्यककही॥यापानीमेंरहेतोउब
रोपिंडैमेंजातकेसेंउबरिहो॥यहकही
हेजुपानीकेजीवकोंपांनीमेंबलुहे॥
गरउपरिरहेतिनकोंगढहीबलु॥प
यादेकोंश्रपनीमूमिबलु॥राजाकों
श्रापनोहीबलु॥मित्रमंथरयहउपदे
सकरि॥जेसेंबनियांपुत्रश्रापनी
श्रीकेरतनयांनपीडतदेषिश्रापुही
डपीलयो॥जेसेंतुमकूडपीकोहो॥
मंथरकहतहे॥यहकेसीकथाहे मसा
करतहे॥ कनोजदेसमें॥वीननगरीमें
बीरसेननामराजाहे॥तिनबीनपुरनग
में॥तुंगबलनामपुत्रश्रधिकारीकी
यो॥सोतरुणमहाधनी॥नगरमेंफि
रताएकबनियांकीस्त्रीदेषी॥देषिश्र

रि बिरह करि दुषी भयौ ॥ दूती घर गई
लीलावती कूं राजपुत्र कौ देषि का
मव्याप्त भई ॥ वाही के ध्यांन मैं रही
जातैं स्त्री के को उ प्रिय है न को उ अ
प्रिय है ॥ जैसें गाइ बन मैं नये नये त्रि
ण चाहे ॥ जैसे स्त्री नये नये पुरुष चा
है ॥ पीछै दूती गई ॥ जाय राजपुत्र के
स्मैं चारु कहे ॥ दूती के बचन सुनि
लीलावती कह्यौ कूं पतिव्रता है
जातैं स्त्री सोई पतिव्रता जु आपनैं
घर बार मैं समझै चतुर होइ जो पुत्र
वंती होइ ॥ भरता कौं प्रिय होइ ॥ अ
रु जो भर्त्ता कौं प्रिय होइ ॥ सोई पति
ब्रता ॥ सो अस्त्री न होइ जातें भर्त्ता
सुषी नांही ॥ अग्नि साषि करि ब्याहै
सु भर्त्ता ॥ स्त्री कौं गति है ॥ तातें अ
हो दूती जु भर्त्ता मो कौं आग पादे रसु
में करौ ॥ तब दूती बोली अहो यह

वाततौमत्यही॥ उनिकहीदे सत्यय
हबात॥ तबहृत्तीआपकहीराजपु
त्रसौं॥ तबराजपुत्रकहतहैनृत्ती
कौंमैंउपाइदेउ॥तबहृत्तीकह्योउपा
यकरिये॥जातेंजोउपायतेंकार्यहो
इसुपराक्रमतेंनहोइजैसेंऐकस्या
लहाथीकौचमेंअरकाईमास्यो॥
राजपुत्रकहीयहकैसीकथाहै॥हृ
त्तीकहतहै॥ब्रह्मारंन्यबनमैंऐकक
र्पूरतिलनामहाथीरहै॥ताकौदे
खिसबस्यालबिचारी॥जोयहहाथी
कैसेंऊंमरैतौहमकौंमासच्यारिकौ
आहारहोइ॥तहांऐकवृधस्यालक
हीयाहिउपायकरिहौमारिऊं॥आ
गेंवहस्यालहाथीकेनिकटजइंड
वतकरियहकहीदेवहमकौंसु
दिष्टिकरऊ॥तबहाथीकहीतूंकौं
नहै॥

स्यातहैं॥सबबनवासीमिलिहैंतम
येपठयेहैं॥याबनमेंहमारेराजानां
हीं॥ तातेंयाबनकेराजातूहोऊ॥तु
मसबगुनयुक्तहो॥कुलीनहैं॥बंधयु
क्तहोइ॥आचारवंतहोइ॥प्रतापी
होइ॥धर्मात्माहोइ॥नीतिकोज्ञाताहो
इ॥ इनगुनयुक्तहोइसुराजाक
रिये॥ औरजोपहलेंराजानीकोहो
इ॥ तबधनकोरस्त्रीकोसंग्रहकी
जे॥जोराजानीकोहोइतो॥संग्रह
कीजे॥ औरप्राणीकोमेघआधा
र॥तैसेंराजाआधार॥मेघबिनप्र
जाजीवेपनराजाबिनानजीवे॥जा
तेंदंडकेडरतेंधर्मतेंसबधर्मरहत
हैं॥जातेंदुर्बलरोगी॥दलिद्री औ
रमनरताकीसेवाऔरराजाहीतक
तहैं॥जातेंजेसेंजनमनटरें॥तेसेंवे
गिचले॥अनेकेकुकरियेयस्क ३०

हस्यारचल्यो॥ हाथीराजकेलोभ
तेजिहपैडैस्यारगयो। तिहीपैडैचल्यो
मारगमेंजातकीचमेंअटक्यो॥ तब
हाथीबोल्यो। मित्रस्यारअबकहा(
कीजे॥ होतोअटक्यो॥ तबस्यारक
हीमेरीपूछकेकेसपकरिआऊ॥
जिनकीतोप्रतीतिकीनी॥ जातेंसा
साधुसंगतिकीजैतोभलोहोइ॥ अ
साधुकीसंगतिकीजेतोहाथीकी
सीगतिहोइ॥ तातेंहोंकहतुहों॥
उपावकरिये॥ तबहस्तीकह्योया
कोंतुमचाकरराषो॥ वाकेकहेचा
रुदंतनामबनियाकोपुत्र॥ राजपु
त्रहचाकरराष्यो॥ सबकार्यमेंवा
कीप्रतीतिकीनी॥ होतहोतएकदि
नआनुकरिचंदनलगाइ॥ बस्त्र
अलंकारपहरि॥ बनियासोंयहक
ही॥ जुहोंआजुतेंएकमास॥ गोरि

स्याले ... बनबासीमिलिहैंतम
तो ... मेंहमारोराजानां
... जातूहोऊतु
... हैबंधजु
... तापी
... हे

PANCH TANTRA

G

ज्य
कीज्य
र॥तिसोंरा
जाजीवेपनराज ... जा
तेंडंडकेडरतेधर्म ... नरहत
हैं॥जातेंउबलरोगी ... लिप्रीत्रे
सेनरताकीसेवाश्रीराजा
तहैं॥जातेजेसेलग्ननटरेंतेसे
गिचले॥श्रलेषकुकां

30

कोंचाल्यो॥ पाछैंतीनकुंमित्रचलेजा
तजातबनमेंएकेंव्याधमंथरएकस्यौ
पकरिधनुषतेबांधिघरलैचल्यो॥ आ
गेमूसा। काग। मृग। एतीन्योनवडात
दुषपायो॥ हिरन्यकविलापकरन
लागो॥ अजऊंमैंएकदुषकोपारनां
हीपायो॥ यामोकोंइसरोदुषआइपऊं
चो॥ औदंसाहोइतबदुषतपरिदुष
आइपरे॥ स्वभावहीतेंजोमित्रहोइ
सोपुनितैंपाईये॥ तातेंवहसहजअ
हीमित्रता॥ बडीआपदातैंनछूटै॥
जातेमातासोंनस्त्रीसों। नभाईस्यौंअ
सोविस्वासनहोइ॥ जैसोसहजसने
हीमित्रसोहोइ। अहोमेरअभागपतैं
अपनेकीयेकर्मकोफलुईजनमया
ये॥ अथवायादेहीकोंअबहीनासहो
उ॥ तौनलोहै॥ औरसोकतो। नयतो।
सत्रुतो। इनतैंमित्रराखे॥ प्रीतिहैसुप्र

प्रीतिको पात्र है। श्लोक॥ आपदाराति
क्यरक्षं॥ प्रीतिविश्रंभभाजनं॥ केनरत्न
मिदंश्रृष्टं मित्र नित्यक्षरद्वयं। टी०॥ ये
सोयहद्वै अक्षरकोरत्नभयकिनअ
ज्याहै और मेवीजुहै सुआषिनकेसु
षकोरसायनहै॥ चित्तको आनंदकरै
सबसुषकोपात्र॥ असीमैत्रीसज्जमि
त्रसोकुलैननांही॥ और मित्रसंपदा
मेंलोभतैं द्रव्यकीबाछातैंभयतै इ
हभांतिवक्रतैं मिलापकरै चित्रांग
सोंकही॥ अरुलघुपतनकसोंहीरन्य
ककही॥ मित्रसुनौ जौलौंयहव्याधव
नमैतैंनिकसै तौलौंयाकेछूटबेको
उपायहोइसुबेगिकरऊ। तबमूसा
कही चित्रांगतूपांनीकेतीरमृत्यक
सोपरिरहि॥ कागतूमबिचित्रांगकी
पीठपरिबैठिषोदतरहो। तबवहनि
षादमथरकोछांडिमृगकोजैहै तब 36

मंथरकेबंधनकाटिहैं।तबयहबचन
सुनिम्रगअरुकागदोन्यूंपानीकेती
रजायऐसीयैकरी॥ब्याधपानीपीक
रिरूषतरिबिश्रामकरिबैठो॥तबपा
नीकेतीरम्रगपस्योदेष्यो॥तबकाती
लेम्रगकोचल्यो॥इहबीचिहिरन्यक
मंथरकेबंधनकाटे॥तबमंथरजाइज
लमेंपैठो॥म्रगव्याधकोदेषिउठिनाठ्यो
व्याधफिरिआइरूषतरिदेषैतौकूर्म
नहीं॥कछुहाकेबिनदेषेबिचारनलाग्यो
कहकहैयामोकोंऐसीहीबूझियेजा
तेंमैंबिनुबिचारेंकामुकीयौ।जातेंयहक
हीहैनीतिबिषैंजुसाधकोंछाडिअनया
यकोजतनकरै।ताकोहाथकछकोजाय
तबआपनेंअभाग्यतेंब्याधनिरासह्वै
इंकटगमेंगयो।वेचारयौंमित्रआपदातें
छूटि।आपनीठौरगये।यहकथासुनिसं
तोषपाइ।राजापुत्रन्हकहींवैसबसुषी
भये।तातेंहमारोमनोरथसिधभयो।तब

विलसमीकहौ।यहतुम्हारैमनोरथसि
धभयौ।औरयहहोऊ।सज्जनजनकौ
मित्रलाभहोउ।देसमेंलछमीअधि
कहोउ।राजाअपनेंधर्मकरिस्थित
होउ।प्रथ्वीकोप्रतिपालकरऊ।सा
धूजनकेमनकेसंतोषकूंसबहीसों
प्रीतिकरो।जैसेंतुम्हारेमनसंतोषकों
नवजोबनस्त्रीहोऊ।श्रीमहादेवजी
सकललोककोकल्याणकरऊ।।१
इतिश्रीहितोपदेसमित्रलाभकथा
निचयप्रथमनिरूपनं।।१।।इतिमि
त्रलाभ।।१।।अथसुहृद्भेदनिरू
प्यते।।आगेराजपुत्रनकहौ।अहो
गुरमित्रलाभतोहमसुन्यो।अबह
मकोसुहृदभेदसुनिबेकीइछाहै।
तबविस्नुसर्माकहतुहै।एकसमें
सिंघसोंअरुबरदसोंवनमेंबड्यो
स्नेह।सुतौनीस्यारनिउनकोस्नेह
परिछेदहरिकरवायो।तबराजपु

नन्दकहीयहकैसीकथाहै॥ नि
सुसर्माकहतहैसुनौंदक्षणादेसमें॥
सुमंततिलकनागरहै॥ तहांएक
बर्धमानबनियाकपुत्रबसै॥ जदपि
वाकूंतधनुहै॥ तौऊऔरबनियाकै
बहूतधनदेषि॥ वाकौंइछ्याभई॥
जुऔरधनउपराजौं॥ जातैंआपतैं
घटिदेषि॥ कौनकौंनगर्वहोइ॥ अ
धिकादेषिआपुकौंकौंनन्दरिद्री
जांनैं॥ औरजाकैंबहूतधनहैसोह
त्यारोऊपूजियेऔरनिर्धनकोचंद्र
माकोवराबरिबसउचोहोइ॥ तौवा
कौंजनपूछै॥ औरजाकैंउछाहनहो
इ॥ जैसैंपुरसकौंलछमीनमिलै॥ ऐसें
तरुणीकौंवृद्धनरुचै॥ औरआल
सीहोइ॥ रोगीहोइ॥ जनमभूमिनछां
डिसकै॥ थोरेपायेसंतोषकरै॥ सदा
भयकरै॥ यछप्रकारबनाईकौंनसा

वे॥ जातें प्यारी ही संपदा तें सुष श्रुष
माने॥ ता कौं बिश्वता ऋ
षि कनदे षि॥ श्रौर जा कै न
पायनां ही॥ आनंद नां ही॥ अरु प
राक्रम नाहीं॥ सत्रु कों श्रुष दे श्रेसे
पुत्र मति काऊ के होइ॥ तातें यह
कही है जु॥ न पायौ होइ ताकौं ज
तन करिये॥ जु पायो होइ श्रु बना
इजे॥ वाहू धन पात्र कौं दान कीजे
जो श्रन पायौ न चाहिये॥ पायौ जो न
राषिये॥ तौ वह श्रापही जाइ॥ बाधे ध
न जो पात्र कौं दीजे॥ तौ वाकौ काजे
कहा व्यर्थ है॥ नीति बिषे यह कही
है॥ तिह द्रव्य कौ कौन काज॥ जे न
दीजे न षाजे॥ तिह बल कौ कौन का
जे॥ जिह पै धर्म न करे॥ तिह मरी
रत कौ न कार्य॥ जातें जितेंद्रिय न हो
इ॥ श्रौर जैसें प्यारे ही प्यारे श्रंजन॥ ३९

कारजकौ नासदेखिये। तिसैं ही या सरी
रको दिन २ नास होइत है॥ तातैं ऐकौ
दिन दान॥ सत्कर्म। बिद्या अभ्यास।
इनकरि सून्य न करिये॥ जातैं एक ही
एक जलबूंद परैं घट भरिये। तैसी हीग
ति बिद्या की अरु धन की है। और जाकौ
दिन बिना दान भोग जाइ। सो पुरुष जी
वत ही स्वास लेत मृतक जांनिये। जैसैं
लुहार की धवनि॥ यह बिचार करि बनि
कपुत्र॥ संजीवक नंदनाम नरद गाडी
मैं जोति कैं। बकत समदा बेंच दाइ। वनि
जकौं कास्मीर उत्तर षंड कौं चल्यो॥ श्लो
क॥ कोतिभार समर्थानां॥ किं दूरं व्यवर
सायनां॥ को बिदेस सु बिद्यानां॥ कः पः
प्रियबादिनां॥ टी०॥ जातैं समर्थ है ति
नकौं कौंन भार। साहसी कौं नकौंन देस
दूरि। पंडित कौं न कौंन बिदेस। जो प्रि

सबचनकहैं॥ ताकेकोंनसत्रु॥ तबयेंहुंमैं
जातसुरुर्गीमनामपर्वतपर॥ संजीवक
कोपावटूटो॥ पावटूटैतेंगस्यो॥ वाकों
द्द बिबर्धमानबिचास्यो॥ जोनीतिसुउ
द्यमकरै॥ फलसोईजोबिधाताकेमन
मेंरहै॥ तातेंडुषनकीज्ये॥ तातेंदुषकीये
काजसिधिनहोइ॥ तातेंडुषछांडिआ
गिलोकार्यहोइसुबिचारियें॥ यहबि
चारुकरि॥ वाबेलछांडि॥ आगेंच
ल्यो संजीवबरदबडेकष्टकरिउठ्यो
कहौ॥ श्लोक॥ निमग्नस्ययथोदध्यौ
परबतातिलस्यच॥ तक्षकेनापिदष्टस्य
आयुर्मर्माणिरक्षति॥ टी०॥ समुद्रमेंप
स्योहोइ॥ पर्वततेंगस्योहोइ॥ सांपका
टोहोइ॥ तोजीआयुर्देहोयतोजीवै॥
आगेंसंजीवकबनमैंतिणषाइ॥ पांणी
पीकरि॥ पुष्टिहोइआनंदतेंगर्ज्योहो 42

तिसवनमैंपिंगलकनांमसिंघराजकरै
जहिपिअधेषुनांहीं॥राजकौसंसकारनां
ही॥तबहूअपनेपराक्रमतैंसिंघमृगरा
जकहाये॥सोसिंघुएकसमैपांनीपीवेकूं
जमनाकेकांछिनगयौ॥तहांसिंघुजेसो
कबहूनसुन्यौतैसोसबदसुन्यौ॥सुनिक
रिबिनिपानीपियेअपनेठौरग
यौ॥जायमनमैंयहविचारी॥यहहैकह
नबमैंत्रीकेपुत्रकरटकअरुदमन
क॥येदोऊस्यार॥राजाकौदेषिविचारत
नये॥तबकरटकसूंदमनककही॥मि
त्रकाहेतेंयहबिनुपानीपियेआयसुचि
तहोयबैठौहै॥मिरविचारयाकौसैवान
करियै॥याकोबाततूजनसौंकोकाज्यैं।
जातेंहनहमारोअवगपाकौरो॥तातेहमह
धिडषपायौ॥औरदेषिजेसेवाकरिधनु
चाहततहैं॥सुकैसेहैंतिनअपनेबस्पकें
ससीरसोपरायेबसिकीयौ॥औरपराये

आधीन करि॥ जाडा बाय घाम कौ मनुष
सुन्यौ॥ ये कष्टं सह्या पड षत पसा करि
सहै तो कौन सुष न पावै॥ और रह तनै दे
मै फल जनम जानिये॥ जो पराये आधीन
न करिजिये॥ जे पराये आधीन है जीवत हैं
ते मूये कौ न जानिये सेवक है॥ और जिन
सुधाकर हहि सांति षेलत है॥ आउ जा
हि गहि वैठि बोलु मति बोल दिहर हि
भांति आसा करै॥ तातै मूर्ष धन पाइ वठ
पर्हि परि गुणी गुणी पराये आधीन हो
त है॥ जैसी वेस्या कौ अलंकार और के का
ये कौ होत॥ और स्वभाव दैते चलु वुरी बा
तउपरि मन राषै॥ औ सेवाकर कौ सेवा॥
करि परि कौन दिष्टि राषै॥ सेवा कौ वकत
मांनै॥ काहे तै जा कौ केचो हीन कौ मत है
जीव कौ मत है॥ सुष कौ उपसद्त है॥ ता
तै सेवक सो और कौन मूर्ष है॥ तब दम
न के कहत है॥ मित्र यह बात मन मे धरि

ये॥ जोतें जतनकरिबडे ठाकुरकी से
वाकौं नकरिये॥ जो बेगिहीं प्रसन
कैं सेवककी कामनापूरीकरे॥
औरदेषिसेवानकरै॥ ताकौं चमर
। छत्र। घोरे॥ हाथी॥ इनकी संपतिक
हातेंहोइ॥ तबकरटककही॥ तबहीं
हमकौंया बिचारसौं कहा॥ तातेंजो
जिहकौं कामनहोइ॥ सुजेकरे तौजै
सेंकीलकेंउपारतबांदरमुयो॥ तैसें
वाकीगतिहोइ॥ दमनककहीयह
कैसीकथाहे॥ मगधदेसमेंधर्मारन्य
बनकौंनीरे॥ सुभदंतनामकायथक्री
डास्थलकौ आरंभरच्यो॥ तहांएककाठ
चीरिकेजबधारोमारह्यो॥ तबबीच
एककीलसोदेराख्यो॥ तहांएकबन
कौ बांदरषेलतआयो॥ सुकालकरि
ग्रस्यो॥ वहकीलापकरिबेसिहल
वनलाग्यो॥ तहां हलावतें बांदरके

दान्योपोताकाठकैचीचपरे॥ आगैंउन
जतनकरिकीलाठपाख्यो॥ तबवाकेदो
न्योपोताचापेगये॥ तातैंबादरमूवो॥ सू
हौंकहतहौं॥ बिनकाजकीचेष्टानकरि
ये॥ तबदमनककह्योतोठाकुरकीचेष्टा
सेवककोजानीचाहिये॥ करटककह्यो
प्रधानमंत्रीसबकाजकरै सुयहबि
चारै॥ जातैंजुसेवकऔरकोअधिका
रनकरै॥ हषिजोठाकुरकेकाजको
परायोअधिकारकरैसुदुषपावै॥ जैसे
स्वानकेकाजकोपुकारतगदहामार्यो
दमनककह्योयहकैसीकथाहै॥ करट
ककहतहै॥ पूर्वदेसमैंकासीनाम
गरीहै॥ तहांएकसुकलहंसनाम
धोबीरहै॥ सुवहयेकदिनबहुतरा
त्रिऔरमतक्रीडाकरतसोइगयो॥
वाकौंचोरपैठो॥ आगनमैंगदहा
बांध्योरहै॥ कूकरबैठोरहै॥ चोरकौ

दषि गदहे कूकरसों कह्यो॥ अरे होइ
ह अवसर तेरो काजहै॥ तू भूसिक
रि ठाकुर कोंजगावत काहे नांहि त
ब कूकर कह्यौ॥ मेरो कार्य तूही क
रि॥ तू जांनत है जे सेंयाको घरु राष
त हों॥ यह अब बहुत धनी भयो॥ मो
कों चाहत नांहि॥ पाविको नाही देत॥ ता
तें सेवक को आदर ठाकुर न करे जो
लो ठाकुर मे आपदा न आवे॥ तब ग
दहा कह्यौ सुनि रे बावरे कूकर॥ जब
ठाकुर कों काम परे तब मांगे सु कहा
सेवक कह्यौ सुनि रे गदहा जु काम ही प
रे सेवक कों चाहै सु कहा ठाकुर है प्र
भु सेवकनि को भरणपोषण॥ ठाकुर
की सेवा॥ धर्म को करिबो॥ संतति को
उपराजिबो॥ ये बातें और सों न करवा
इजे॥ तब गदहा कह्यौ तू पापी है स्वा
मी को कार्य नाही करत॥ जैसें स्वामी

जागेतैसेऊकरिहै। जातेंसूर्यकोंपी
ठिपाछेंकरिघामलीज्यै। आगेंधरि
आगितापिजे। स्वामीसबहीभावसे
रजे। परलोकनिःकपटकैसाधिये
यहकहिगदहापुकार्‌यो। तबधो
बीवहसब्दसुनिकेंकाचीनींदजागे
गदहालाठीमार्‌यो। तातेंहोंकहत
तहोंऔरकेकामकोंअधिकारआपु
नकीज्यै। तातेंमित्रहमारेकार्यस्वा
वजकोषोजिबोसुकरिये। आजुस्वा
वजषोजिबेकोकामुनाहीं। हमआ
जुषायेपाछेंमासबहुतजबस्योहैक
रटककहीतौतूअहारहीकोसेवा
करतहै। यहतोभलीनाहीं। जातेंमि
त्रउपकारकरिबेकोंसत्रुकोनुरोक
रिकेंराजाकीसेवाकरियतहै। सेव
सबकोंजनाहींमनरहै। औरराजाकेंआ
छेबहुतलोकजीवे। सोईजीवन

जानियें॥ नातरु बगुला आपनौं पेट नांहीं भरतु॥ और सुनि देषि ऐक सेवक पांच कौडी करि पाइयत ऐकला षटका करि पाइयत॥ ऐकला षक्रन पाइजे जातें मनुष्य सब ही बराबरि नांहीं परंतु जो और कौ सेवक होइ सो कछू नांही॥ और जो सेवक न होइ सोई पहलें जीवतनु में गनियें॥ श्लोक॥ वाजिवारण लोहानां॥ काष्ट पाषाण वाससां॥ नारी पुरुष तोयांनां॥ अंतरं बहु अंतरं॥ टी०॥ जातें घोरा। हाथी॥ लोहा। काठ। पाथर। कपरा। पानी। स्त्री। पुरुष॥ इन में बहुत अंतर॥ देषि कै करथेरे लीक मासल पटानो॥ हाइ याइ। संतोष न मांनें॥ असें धु आगें गही स्यु रल्हाडे रहाथी कों जाइ मारै॥ तातें बडे ऊ कष्ट में आपनें बल अनुसार कार्य करै और देषु गरूर सेवक कों अंतर कै करपूरखई

मुषपसारैपेट दिषावै॥ तबटुकरापावै
हाथीथानहीबांधैजबबैरबकत।
जाइरलाईजे। तबजोगुषाइ॥ औोर
ग्यानसहित॥पराक्रमसहित।जससु
हित।अहंकारसहित॥एकोघडीजी
वे॥सोईजीवतजांनिये॥ नातरुकाग
नांहीबकुतदिनजीवत॥जातेंजोआ
पनोहितअहितनंजानेंऐसेपुरुष
अरुपसुकहाअंतर है॥जैसोसापतें
सोपुरुष॥ तबकरकैकहीहमतुम।
राजप्रधाननांही॥ हमहिअरुऐसे
बिचारसोकाजेंकहा॥दमनकपुनि
कहतहे॥जातेंमंत्रीसमेंपाई॥आपनी
करणीतबडोहोय॥छोटेकुंहोइको
उजन्महीतेंस्वभावहीतेंभलोबुरोहो
इ॥जैसेंपर्बतपरपाथरबडोजतनक
राइजे॥ गिराइजेतेंसुषहीगिरै॥जैसें
प्राणीबकुतेंगुणकरिबडोहोइथो ४९

रेहीदोषकरिनष्टजाहि॥तातैंबडाई(
कौजतननकीज्ये॥तबकरटकक
हीतूकहतहैकहा।तबपुनिकही
याहमारोठाकुरसिंघु॥काहेतैंड
रपिकैंबैठोहै॥तबकरटककही
तूजानतहैकाहेतैंडरप्योहै॥दमन
कनककह्योयाकोकहाजान्योहै॥
॥श्लोक॥उदीरितार्थःपशुनापिबु
ध्यते॥हयाश्चनागाश्चवहंतिनोदिता॥
अनुक्तमप्यूहतिपंडितोजनःपरेंगितज्ञा
नफलाहिबुद्धयः॥टीका॥जातैंपंडित
विनाहूकहेंजानें।पशुपुनिकहेतैंजा
नेंघोराहाथीजितचलाइजेतितचाले
मनोपशोजोदेषतहीजाणें॥तातैंयाको
बुधिबलकरिऐसेडरमेंवस्यकरिहै॥
जातेंअस्त्रावकेबचनकहै।आदरकैजोगपु
रिषुकौ।आपनोबलजानिबसकरै।ऐ
सेदोयमोपंडितनकेहिये॥मित्रतू

नहींजांनैंहि॥जातैंजो बिनुबुलायेजाइ
बिनपूछेंबकतबातैंकहै॥ आपुकौंरा
जाकीमयाजांनें॥ अरुबधीजांणिजे
रमनकाकहींमित्र। हौंसेवककैंकाहेनजा
नउ॥ देखिजातेसबवस्तभलीहै। अरुबु
रीयोहै॥ जुजाकौंभावेसोईताकौंनीकी
नभावेसोईबुरी॥जातेंजाकीजेसीप्रकृ
त्पहोइ॥ताकौंतिहीभांतिबसिकीज्य॥
औरनबठाकुरपूछे॥ इहाकौंनहै। तब
कहेराजामेंहों॥ कहाआग्याहोतहै॥
तबराजाआग्यादेइसोकरै॥ औरजाकौं
घोरीत्रिस्नाहोइ॥धीज्येहोइ॥सयांनो
होय॥सोजेसेंपरछांहीनछांडै॥तैसेंस
वानछांडै॥ आग्यापाइउजरनकरै॥
अरुराजाकेनिकटरहै॥करदककहै
अबजोतूराजापासिजाहितौ॥ अनौ
सरजानिअवग्याकरिहै॥ तबउनिक
हीहैतौऐसीयें॥तबठाकुरकीनि

कटसेवानछाडे॥जातेंलोककेडरतें
उद्यमछाडे॥सोकपतजांनिये॥अ
नीतीकेडरतेंजोजनकोंछाडतहै
॥अरुदेषिविद्याकरिहीनहोइ॥अ
कुलीनहोइ॥मलीनहोइ॥असेकजे
राजाकीनिकटसदारहे॥तोराजाम
याकरे॥जातेंराजा॥स्त्री॥लता॥इनकी
जोनिकटरहेताहीसोंमिलहि॥तक
रटकहीतूकैसेंजानें॥उनिकहीं॥जो
ठाकरहरिहीतेंसेवककोंआवतो
देषिहसे॥आदूतेंबातपूछे॥पीछि
पाछेंसराहे॥अपनेंभलेसेवकगु
मेंगनें॥विनकुसेवामयाकरे॥दो
षकुकोंगुनकरिमानें॥तबठाकुर
कीमयाजांनिये॥औरजबदेवेके
आजुकालिकहिकहिकालगावे
अरुआसाबढावे॥देइनाही॥जबजां
नियेजकुमयाहे॥

ए करि मानैं । यह मया को लक्षण है
जब गुनऊ कौं दोष करि मानैं तद कु
मया । तब गुन को गुन करि मांनै दो
ष को दोष करि मांनै । तब बराबरि
जांनिये । यह जांनि असे ही मेरो नलो
मानिहि तैसीयै करिहै । और जो मय
नो मंत्री होई सु राजा कों नीति उप
जे जो अपति सु आगे ही प्रगट कहि
जनावै । और नीति तैं होई जो संपदा
तेउ आगे जनावै । तब करटक क
ही । तब ऊ समय बिनु न कहिहौ ।
जातें समय बिनु बृहस्पति कहै तौ
अपमांनु पावै । दमनक कही मि
त्र मति डरपहि । है बिनु समैं न क
हिहौं । जातें आपदकाल मे राजा
अमार्ग चलै । और जो कारजु न करै
न ताकि यै सो करै तौ मंत्री बिन पूछैं ऊ
राजा ऊ सो कहै । अरु जो असे समै ऊ ५८

मंत्रीन हिहै तौ मंत्री काहेकौ॥ जातें जि
हगुन तें षाबेकौ पाइजे॥ अहिहै तौ मं
त्री काहेकौ॥ जातें जिहके गुन तें षाबे कौं
पाइजे॥ अरु बहाई जे॥ तौ मित्र मौकौं आ
ग्या देहि॥ करटक कही जाऊ। दमनक य
ह बिचार करि चल्यौ। जाइ राजा पिंगल
कके निकट॥ कब डरतें इरिगा डोंन यौ
तब सिंघ देष्यौ॥ देषि हरही तें आइ सौं बु
लायौ॥ तब राजा सौं डंडवत करि बैठौ॥
तब राजा कही बजै तैं दिन देषे हौ॥ तब द
मनक ही राजा के हमारो कछु कार्य ना
ही॥ तब कुसमय पाय सेवक आयौ चा
हौ॥ यह जानि हौं आयौ॥ जातें कानुषु
जाइबे कौं दांत षोदिबे कौं त्रिणकु सौं
कार्य हो त है। जाकौ हाथ यावु बुधि है
असे सेवक एक दिन काजि आवै। जदि
पि तुम बकुत दिन मंत्र न पूछौ॥ तब हमा
री बुधि नाही घटी॥ जातें

मेंबांधिये॥काचमाथेधरिये।तबवेच
तेकाचसुकाच॥मणिसुमणि॥और
अपमानकूंभयेजाकोधीजरहै॥ताकी
बुधिनघटै॥जातेंअग्निजोगाडामैंबा
लिजै॥ज्वालाहरीहीजाई॥तातेंरा
जासर्वथाविवेककरै॥जोराजावि
सेषकरिसेवककीसेवानजांनैं।तो
सेवककोसेवाकरिकोंउछाहनब
धे॥औरतीनिप्रकारकेमनुष्यहैं॥
एकउत्तम॥एकमध्यम॥एकअधम
सो सुसेवकहोइ॥ ताकोंतैसोहीकाम
सोंपिये॥तातेसेवक॥अरुअलंका
र॥जहांबूझियेतहांराखिये॥जातेंमा
थेकीमणिपावबांधेतोनसोहै॥और
जोरत्नसोनेमेंबूझियेसोरांगमेंसोभा
नपावे॥जदपिपावनबांधेमणितोन
बोलै॥पैबांधणहारेकोंलोकतोबाव
रोकहै॥जोराजासेवककी॥बुधिन

क्तिपराक्रमनीकेजांने॥तिहराजाके
वहुतसेवकहोइ।जातेंधोरें॥हथ्य
रा॥बीना।बांनी।पुरुषस्त्री॥एजेनले
केहाथहोंहितोनीकेलागहिं॥नातरु
उपहासकोंहै॥ औरसेवकभक्त हो
इ॥समर्थनहोइतौकोंनकार्यकोंऔ
रसमर्थहोइ॥ अरुदुष्टइकरेतोव
हकोंनकाजेको॥राजामेतोरोनक्रहे
अरुसमर्थहो॥जातेंराजाकी कुमया
तें मंत्रीकीवुधिहीनहोइ॥तबनले
मनुष्यराजाकेंनरहैं॥तबनलेमनु
ष्यकेगाढेनीतिनरहै॥नीतिकेंगा
येसुवलोकदुषीहोइ॥जिहकोरा
जा मया करे॥ताकोंसवमानहिजं
तेंनीतिकीबातलखिकाकाकीसु
निये॥जहांश्रयेकोउजियारोनांहीं
तहादीयाकोकरितुहैं।तबराजा

कही अहो दमनक तुम्हारो प्रधान
मंत्री के पुत्र ॥ का ऊ कष्ट कैं कहे ब
ऊत दिन हमारै पासि नाही आये
सु तुम कों ऐसे न चाहिये ॥ अबै जो
कछु कह्यो चाहौ सो कहो ॥ दमनक क
ही राजा हों कछु पूछ्यो चाहत हों
राजा कही पूछो ॥ राजा तुम प्यासे नि
के निकट जाइ बिन पानी पीये फिरि
आये ॥ स चिंत होइ बैठे हे सु काहे तें
सिंघ कही । जदपि हमारे मन की बा
त और से कहिबे लाइक नांही ॥ तब
ऊ तोसों कहत हों ॥ सुनु या हमारे बन में
कोऊ अपूर्ब जंतु ॥ आयो है ॥ तातें य
ह ठौर हम छाड़ि हैं ॥ तुम ऊ वाको स ब
द सुन्यो होइहे ॥ जैसे वाको सब्द है तै
सो वाको बलु होइहे । यह सब्द ह
म ऊ सुन्यो है ॥ वातें डरबु किये ॥ तोऊ पृ६

सुमंत्रीनांहरजुपहलनेहीगौरछिडावे
औरसंग्रामकरनकोहै।।औरसेव
कीपरछा।।करिये।।जातेंजुधिबल
सेवकश्री।।इनकीपरछाआपदा
समयपायजे।।तबसिंघकहीमेरेम
नमेंबडीआसंकाहै।।तबदमनक
कही।।मनहीमेंऐसीनहोय।।जो
तुमराजसुषछाडिहोसुहमसोंबातें
कहो।।तबसिंघिप्रगटकरिकही।।
राजाजोलौंहौंजीवतहौं।।तिलौंतुमपें
मतिकरो।।मोकोंआज्ञादेउ।।जिसेंकर
टकआदिदैऔरसबबुलायजे।।तातें
आपदामेंसबगयेकछुकरिबोकरि
नहै।।तबराजादमनककरकटसोंअ
बुलाये।।बिकृतमनमानदीयो।।उनदो
नोंकहीतुमनिश्चिंतसों।।तुम्हारेभयो
कोनासकरिहौंयहकहिदोन्योंचले
पेहेमेंजानककरटकद

मित्र या मेयु को नास द्रम पे होइ है बि
नदीयु है । यह बात बितु बिचारे
ही या राजा पे यु मद क्यु लीया । जा तें का
र जो बिन संवारे का हूं कों कछु नल
जे [illegible] जातें राजा कों किपा मेरु
स्मी नु षे । राजा के पराक्रम में जय
बसे । राजा के क्रोध में काल बसे । रा
जा में सब देवता को तेज बसतु है ।
राजा बालक होइ तो हू मनष न जा
नि जो । अवग्या होत है । सु बडे देवता
को मनष को रूप लीयें रहतु है ।
तब दमनक कही । मित्र सुपर हो ।
सु मय को कार्य दमन जानो । यह सिंघ
बरद कों सब दरजनि डरायो है । बर
द कों दमनक पातु है । सिंघ वरदक से
करि है । करकट क ही ऐसी बात
ही है । तब ही वासो कादे नक ही । दम ५२
नक कही । या बात तब दमनक है

तोहमकोंप्रसादकाहेकोंदेतो॥ यातेंसे
वकठाकुरकौंनचिंतनकरै॥ जोठाकु
रकौनचिंतकरै॥ तोसेवककीदधिक
र्नकीसीगतिहोइ॥ करटककहीयह
कैसीकथाहै॥ दमनकहतिहै॥ आबूपर्व
तऊपरिएकमहाबिक्रमनामसिंघरहै
ह जबैंसोवै॥ तबएकमूसासिंघकोकेस
वालनिकेअग्रभागकटैदेषि॥ मूसेके
विनपायेबिचारतभयो॥ यहहैकैंनउप
यकरौं॥ यहबातअन्यत्रऊकहीहैसत्रु
नान्होसोइपराक्रमकरिनपाईये॥ वाकेमा
रनकोंजोबाहीसारिषोहोइसोराषियो॥
यहबिचारकरिसिंघुगावकीनिकटआ
ई॥ एकुदधिकर्ननामबिलारआदर
देकरिमासआहारदेकैंआपनीकंदरा
मेंआनिराष्यौ॥ तबवाकेडरतेमूसावा
हरिननिकसे॥ तबयेवहसिंघुसुषसो
वै॥ निश्चिंतभये॥ जबमूसादे —

दश्रुनैतबविसेषकरिभयभ्रोजनुदे।
आगैमूसाम्रूषकरिउषीभयो॥एक
दिनमूषकेंव्यापैंबाहरिनिकस्योच
रनलागेपो॥तरिबिलारपकरिमूसाम
रिषायो॥पाछेसिंघुमूसाकोसबदन
शुनेनिःचिंतभयो॥तबविचारनलागो
अबयाबिचारकोकछूकाजिनाही
यहजांनिबिलारकोकछूकाजिनाही
यहजांनिबिलारकौंकछूषावेकोंन
दे॥तबबिलारमर्नेलागो॥तातेहौंक
हतहौंठाकुराश्चिंतनकरिये॥आगे
दमक।करटकदोऊसंजीवनाम
बैलकेनिकटगयो॥जायकरियेक
रूपतरिकरटकगर्बसोंबेगो॥द
मनककह्योरिवृषभ॥यासेनाप
तिकरटकयाबनकीरषाकोरा
जापिंगलकपगयोहै॥जेतूरहो
चाहत्तोबेगिआऊ॥नाहीतरुया

बनछाडिदो॥हरिककुजं सा॥तबयह
श्रुनिबुधिकरिदा॥नसंजीवककौंमयेसह
तनेरैन्श्राइ।करटकसौंजुहारकी
यो॥जातेयहकहीनीतिबिषें॥ब
लतेबुधिकौबलअधिकहै॥बिनु
धिहाथीकुबाधीयतहै॥महाबल
केमारेबिकारहुहै॥बिनुबुधिह
मारीयहदसाहोतहै॥तबसंजी
वककही॥ संजौअनयपावतौचलो
तबकरटककही॥ तूयहडरछाडि
दो॥जातेंजोत्रिणकौंनतोरै॥जेरूष।
गदोहोइ॥जाहिमारिगिरावे॥ताते
बडोबडेहीसोंपराक्रमकरे॥श्रा
गेवेदोऊस्यारसंजीवककौंचारेरा
षिराजापेंगये॥राजाकें निकटजा
इप्रणामकरिबेठे॥राजाबन।
कौंश्रादरकरियहकहीदेष्योव
ह॥दमनककहीहाजीदेष्यै

पनिराजा न्यौ तैसो इहवली है रा
जसावधान होइ बैठि ज्यो ॥ और रा
जा सबदही ते नइ रिये ॥ सबद कौ
कारन बिचारिये ॥ सबद कौ कार
न बिचारे एक कुटनी की बडाई भ
ई ॥ तब राजा जाय कही यह कैसी
कथा है ॥ करटक कहत है से
ल नाम पर्वत मै एक श्री मतना
म नगर कै निकट घंटाकर्न नाम
एक राषस रहे है ॥ तब यह बात स
म सत लोक मै ॥ कहत सुनि येरा
स रहत है ॥ एक दिन घंटा लीये
पेरू मै चोर मारिआ सो ॥ तब ह घ
टा बादर न्ह पाई ॥ बादर सब मि
लि घंटा बजावै है ॥ तब वा नगर
के लोक मानस मारयौ देषि ॥ घंटा
को सबद सुनि यह बिचारी घंटाक
र्न रिसाई कै मनुष्य षात है ॥ यह

बातदेषिकुटनीसबदकोकारनबि
चार्यो॥ देषैतोबांदरघंटाबजावत
हैं॥ यहबातकुटनीसत्यंकरिराजा
सोंकह्यो॥ राजाजीबहुतद्रव्यखरचौ
तौघंटाकरनकोमार्यो॥ तबराजा
कुटनीकोबहुतद्रव्यदीये॥ तबवा
कुटनीबांदरनकोकछूषावेकीसा
मग्रीलेबनमेंगई॥ बनमेंजायतहां
लीपिकरिचौकपूर्यो॥ वहसामग्री
लेबांदरनिकेंआगैधरी॥ तबबांद
रघंटाछोडिषानलगे॥ तबवहकुट
नीघंटालेचलतरही॥ घंटालेसहर
मेंआयराजाकोंदई॥ तहांसबलो
कवाकुटनीकीपूजाकरनलागे॥ ता
तेंकहतहौंसबदहीसोंनडरिये॥
पाछेराजाकीआग्यापाइसंजीवक
मिलायो॥ तबसंजीवककनकसैं
मिलितहोहीरह्यो॥ आगेंहोनक

कदिनस्तवधकर्ननामराजाकौभाई
आयौ तबवाकौआदरकरिबैग
रिपिंगलकवाकेअधारकौपसुमा
रिबेकौचल्यौ तबदमनबीचिसंजी
कवोल्यौ राजाआजुमृगमार्यौ
ताकौमांसकहां राजाकहीदमन
ककरटकजानैं संजीवककही बि
चारियेकेनांही सिंघकहीनहोइहै
तबसंजीवपुतिकही राजावहमास
उनाहीषायौ राजाकहीषायौको
है हमरैनित्यपाहीरीतिहै तबसं
जीवकहतहै राजाकौबिनजनायें
षातषरचतहै सोअनीतिकरतहै
राजाकहीऔरकहौ संजीवकक
हीऐसीनबूझिये जातेंगऊरवो
जनायेंबिनुसेवककछुकाजनक
रै आपदाकौबीतेबिनपूछेकुंकरै
चिंतानांही औरमंत्रीऐसेहोंगे

जैसो कमंफलु॥संग्रहबक्ततकरै।षरचैं थोरो॥जो एको छिनकार्यबिनागमा वे॥तौमूर्षकहिजे॥जोएको घडीराजा की व्यर्थषोवे तौदरिद्री होवे॥औरमं त्री सोईभलोजुएक एकदामकरिरा जाकुंभंडारबढावे॥जातेराजाकेजीन कुतेंअधिकभंडारहे॥अरुधनकुतें। भलेमनुष्य राजाकीसेवाकरतुहे॥ध नहीनभये घरकीस्त्री त्यागतहे॥औ रकीकहाकहिये॥राजमेयहप्रधान कोउषहे॥षरचबक्ततकरै॥रक्षान करे॥अधर्मकरिधनउपराजे॥भंडार हरिराषे॥येधनकेनाशकेकारणहे॥जा तें अपनें उपावबिनुबिचारेंजोअधिक षरचकरै॥तौकुबेरकुसोधनहोइतौन रहे॥यहबातसंजीवकीसुनि॥स्तबधक र्णककही॥सुनिभाई एदोउकरटक॥ दमनक॥बक्ततदिनतैंअधिकारीहे॥

ोरसंधिबिग्रहकेकरनहारहै॥ जुकाय
कोअधिकारीहोय॥ सुद्रव्यकोअधिका
ीनकरिये॥ जातेंब्राह्मणजोद्रव्यपा
हलोरहै॥ अुबडेउकष्टनहोइ॥ छत्री
मागनहीहत्यारहिषावे॥ सगोसबले
रहै॥ जातिकोनातें॥ घरकोसेवकजो
अधिकारीकरियेतो॥ अपराधऊको
डरनमानें॥ स्वामीकोअवगपाकरिअ
पनोबिचारकरे।उपकारीजोअधिका
रीकीजेतोअपनोउपकारबिचारिसब
लेरहै॥ जोलरिकाहतेकष्टछांडिदियामि
त्रहोइ॥ अुजोअधिकारीकीजियेतोव
हआपुहीकोराजाकरिमाने।अरबु
नकरे॥ कहेकहाभयोजोराजाभयो॥
हमारोसंगषेल्योहै॥ जातेसबबस्त
इछाकरे।बुधिहीनहोइ॥ सुषकोनाम
चाहे॥ अरकीओरकरे॥ मंत्रीकेद
है॥ तातेनीतिमेंयहकहीहै॥ जोलों

त्री बहुतनपी डियेतोलोंअपनोंद्रव्य
नदे। जैसेंदुष्टमुषकोपीलबिनुचायेन
निकसे।। ज्यातें बारंबार अधिकारीको
डंडदीजे। तोद्रव्यदेइ जैसेंमोन्नानकी
धोवती। ऐकहीबार निचोरें सबजलनछां
डे। जैसेंबारंबारगाढोअंचिये। तैसेंज
लदेइ। यहसबजांनिकरिजैसेंवूझिये
तैसें करे।। तबराजापिंगलककही।।
यहतोहे येदोऊमेरोकह्योनाहींमानत
तबसत्व्यकर्नकही।। यतोनवूझिये।।
दृषिनीतिविषेंयहकहीहे। अहंकारी
कोजसजाइ।। विषमकपटतेंमत्रीजा
य।। क्रियाहीनकोकुलजाइ। लोभी
कोधर्मुजाय।। कुविसनतेंग्यानजाइ।
नीचकरजेकोसुषजाइ। अरुराजा
कोमंत्रीअसावधानहोइ। ताकोराज
जाइ।। श्लोक।। आज्ञाभंगोनरेंद्राणां
मानषंडनं। प्रथक्‌सज्याचनारीणां।

असत्वबधमुच्यते ॥ ॥ राजाकीआ
ज्ञाभंग ॥ ब्राह्मणकोमारणंमरण ॥ स्त्री
कौध्यंनसेज्या ॥ एतीन्योबिनहथ्या
रिमारेबराबरिहैं ॥ औरजोपुत्रज्ञान
आग्यानमाने ॥ तौराजाताहूकोदं
डदेइ ॥ जेऐसीनकरैतौमनुष्यनमें
अरुराजामेंकहाअंतर ॥ अरुचित्र
मेंलिष्यायतुहैराजा ॥ जैसोचित्रको
राजाजैसोबहुराजा ॥ औरचोरतेंअ
धिकारीतेंसत्रुतें। अरुअनेकानतें
राजाप्रजाकीरष्याकरैजैसेपिताबाल
कीरष्याकरै ॥ भाईहमारोबचनसर्व
यामनमेंराषिये ॥ हमआजुपायोहै
यहथानकोषांनहारोसंजीवक ॥
अधिकारीकरिराषिये ॥ यहबातरि
घशुनिसंजीकअधिकारीकीयो ॥
पाछैपिंगलक। अरुसंजीक। दोऊ
सबबंधुछांडिकेतेकालबरषस

गुपसेंवदृतघ्रीतिमोंरहे। आगेंजब
वहसंजीक। आसेंसेवकनकोंपावे
कोंनहे॥ तबदमनक। करटकदोऊ
आपनमेंबिचारनलागे॥ दमनककं
ही मित्रकरटकअबकहाकरिये॥
यहतोहमारोकीयो॥ तातेंआपनेकी
येदोषतेंपुछितात्रबोनब्रुझियें। यह
बातकहीहे। एकोंमेंसुनीहे। येकञ्च
नेंतेंपाकेंछुवेंकरिहृतीमेंनकरि॥
संन्यासीमनिलेबेकोइछाकरि। एतो
निआपनेदोषकरिडुषीभये॥ करट
ककहीयहकेसीकथाहे॥ दमनक
कहतहेंकंचनपुरीबिक्रमादित्यरा
जारहे। तिहिनग्रमेंराजाकीआग्याप्र
हएकनाउमारिबेकोंठोरलेचले॥
तहांकंदर्पकेतुनामसंन्यासी॥ औ
रएकसाधसहितयहबातकही। यह
नाउमा

उकौ बस्त्र पकरै। तब राजा के सेवक
न्ह कही का है ते मारि बेला इ कनाही
कंदर्प केतक हत है स्वर्गिलै षाकौं ब्रु
रकरि। साधु। हत्ती। साध। ऐती म्योडुषी
भये॥ तब राजा के सेवक पूछत है कै
सें डुषी भये॥ संन्यासी कहत है॥ सिंघ
लदीप कौ राजा जी मुंत रुहै॥ ताकौ पुत्र
कंर्दर्प केतु मे हौं॥ ऐक समें क्रीडा के।
बाग में गयाथा॥ तहां पोहप के व्या
पारी आये बाग में आइ उतरे॥ तिन
के मुष में यह बात सुनी॥ जु इहां समु
द्र मे अधियारी चौदसि ऐक कन्य
रूपवान उगट होत है॥ वाके हेम (लि)
की रत्निक रिमका सित॥ सेज पर बै
ठी॥ सब आभरण पहरै॥ तांडिमी
समान वीना बजावत॥ ऐक कंन्या
देषियत है॥ तब यह बात मे सुनी है
सु निकरि विचार तरह्यो॥ जु के सकु

देषीजाइ॥ तबवेब्योपारी समुद्रकी
पारकेचोहिथचढिब्यापारकोंलेच
ले॥ तबहोंपनिबोहिथचढिउन्हबनि
यानकीसाथचल्यो॥ जातउसहीगेर
गये॥ वहांजाइकरि मेऊंकंन्यादेषी
आधीदेहपांनीमेंदेषी॥ आधीऊपरि
ताकीसुंदरतादेषिहेबोहिथउपरथे
ताकोंलेनसमुद्रमेंपैठे॥ आगेसोनें
केनगरमेंजाइकरि॥सोनकेमहलमैं
सेजपरिबैठीदेषी। उनिहोदेष्यो॥ देषि
करिहतीपठाई॥ हतीआइतबमेंआ
वतहीपूछी यहकंन्याकोंनुहै॥ तबउ
तीमोसोंयहकही॥ यहकंदर्पकेलि
नामविद्याधर॥ समस्तनिकोराजा॥त
कीबेटीरतनमंजरीहै॥ यहब्रतांतक
तबआपसमेंअंन्योअन्यप्रीतिभ्रहतेत
हकीये॥ ऐकसमैंवासोंक्रीडाकरतहे
तबऐकांतमैमोसोंयहकही॥ हेस्वाम

आपनी इच्छातें यहां सब भोग करो ॥ औ पर
या चित्रमें जु लिषी है स्वर्ण लेषा नाम वि
द्याधरी ॥ सु याहि क बद्धभ तिछुवो ॥ सु ऐ
क दिन होत होर दिन सकै या ॥ कौ तक ते
वा कौ स्तनमें छुयो ॥ तब वह स्वर्णा की चित्र
लेषा ऊ औसो लात करि मास्यो ॥ जा सो मैं या
सोर ठ देसमें आइ पस्यो ॥ तब तेहो विर
ह के उषक रिमं न्पासी भयो ॥ सु फिरत फि
रत या नगरमें आयो ॥ यहा का लिकी रा
ति अहीरको घरसो वृत में औसी दिषी है
पहलें सा ज अहीर मित्र सों मिलि म दपी
वृत ॥ आपनी स्त्री कुटिनी सों बातें कर
त देषी ॥ तब वाहि अहीरी कों नीकें मा
रि या जसों बांधी ॥ आप सो इ रह्यो ॥ तब
आधी राति नाऊ निकुटनी आइ वा स्त्र
ही कों कहत है ॥ अहो सषी तेरे विरह
करि वह महा मदा पुरष मूवो चाहत
है ॥ जातें चंद्रमा के उदय ते ॥ अं धका

रब्यती तन्नयेतेकामदेवजोबनवंतपुरु
षनकोताकि ताकितारनमारतुहे।ता
तेहहथासौमोहिवाधि।तूवाकोज
लोमनाईआव॥ तबदेकुटनीवांधी॥
अहीरीनहागई॥ तिनपेकरहेअहीर
जाग्ये॥ जागिकरियहबातकही॥ कोअ
अवरजारपासकाहेनाहीजात।जब
या बातकहेनबली॥तबउनिकहीते
रेगर्बुनयेहे॥तूमेरेंबुलायेंमाहीबोलति
यहकहिछुरीकरिवाकोनाककाट्यो
पीछेसोइरह्यो॥पीछेसोईरह्या॥पीछे
आईअहीरी॥ वासे।कहीइतीकह्या
स्मोर॥इतीकही।मेरोमुहोनुकहत
हेदेषतनाही॥ तबअहीरीआपको
बाधिवहछोडिदीन्ही॥वहनाईनिका
टीनाकलेआपनेघरआई॥तबप्रात
हीनाईवासोंछुरहडीमागी॥तबवहि
यकबडोछुराआनेदीने।

इ कहि छुरा घरमें डारि दीन्हौ । तब नाइ
नकुं का रि उठी । इन बिन अप्राध मेरी नाक
काटी । नाक हाथ लेचौतरें न्याय पुकारी ।
आगे वृद्धि रामसौ राके पूछें यह कहे अ
रे पापी औसौ कोन है । जो मोसी पतिव्रता
कों कलंक लगावे । इधिक कहा कहौं
मेरो ब्रह्मचार आगे दिक्पाल जानत है
मेरो धर्म चंद्रमा सूर्य वायु अग्नि आकास
पृथ्वी जल इंद्रिय जम जल दिन रात्ति दो
न्यो संध्या । ये सकल मनुष्य के चरित्र जान
त है । जातें जो हों सत्य पतिव्रता हों । तो मुर
मुष जैसो है तैसो होउ । यह कहै अहीरी
दीवा जालि अहीर कों मुष दिषायौ ।
जैसो हुतौ तैसो टिवाके पायन परयौ
अब या साधु मेरे संगि है । ता के समाचार सु
नों । यह वार है वर्ष इन ग्रमें बहुत
व्यै आयौ । इहां आइ रात्रि वे षा के घरि
रहै तो वृहि वे सां अपने घर के वार में

कोठेसोंवेतालकलकरिबनायेंराष्यौ
वाकेमाथेपरएकअमोरत्नराषे।व
रतनकेलोभतेंइहअसाधआधीरा
त्रीउठिकरिवारतनकोहाथपसार्यौ
रतनलेनलाग्यो। तबरतनछुवतही
वेस्याकेलुछिटकाई॥ छिटकावतही
वाकेदोऊहाथबंधेगये॥तबअसाधु
पीडाकरिदुषीभयो॥पुकारिउठ्यो॥त
बयासोंकुटनीकह्यौ॥पूतमलयपर्व
ततेंउपायआयेहो जोकछूदब्यरतन
सुमकदेऊगे तबहीछूटऊगे॥ नातरुय
हसोहरामजादोहेजुमारिहीडारिहै
तबइहसबरतनद्रव्यदीन्हो॥अबय
हसर्वसुषोइहमारैंसाथिलागोहै
यहसमस्तवातसुनिराजाकेसेवक
निन्यावकीयो॥ तातेंहोंकहतुहों॥
इन्हेंआपनेदोषतेंकष्टपायो॥तैसें
याहमारेकीयोदोषुहै।यहसुषन

करिये॥ तबकरटकघडीयेकबिचा
रिकही॥ मित्रदिनचारिदेषु॥ जोके
सीहोतिहै॥ दमनककहीजैसेमैइन
सौंप्रीतिकरवाइहै॥ तैसैंसुहृदभेद
करिकरवाइहै॥ जैसोंबहचतुरकू
ठीयेबातसाचीकरिदिषावे॥ जैसें
चितेरोसमस्तभूमिनीचीऊंचीचित्रमें
दिषावे॥ जातेंजाकीवुधिकाजिकी
वरियांनघटे॥ सुत्रापदाकौंतिरैजै
सेंअहीरीदोइहजारषसमकेआगें
देषतहीराषे॥ करटककहीयहके
सीकथाहै॥ दमनककहतहै शर
कानगरीमेंएकअहीररहै वाकीवऊ
बिभचारिणी॥ सुगावकेकोटवारसों
रहै॥ श्लोक॥ नाग्निस्तृप्यतिकाष्टानां
नां॥ नापगानांमहोदधिः॥ नांतकःसर्वभू
तानां॥ नपुंसांवामलोचनां॥ टीका॥ जातें
अग्निकाठकरि॥ समुद्रनदीनकरिका

लमनुष्यनकरि॥स्त्रीपुरषनकरिये
वास्योइनकरिकबहुत्विप्तनही॥१
श्रोरदानकरि॥मानकरि॥शुश्रूषा
वकरि॥सेवाकरि॥हथ्यारकेत्रास
करि॥साश्त्र केउपदेसकरि॥इन
मेकाउंकरिस्त्रीकीरषा नहोइ।
वह एकदिनाकुटवारकेबेटासे
बिभचारकरतही॥तिहिसमेकु
टवारश्रायो॥ तबकुटवारकोश्रा
योदेषि कुटवारकोबेटाकोगमें
राष्यो॥ राषिकुटवारकोमिलो
मनायो॥ इहीबीचिश्रहीरीकोम
र्दश्रायो॥ वाकोदेषिकहीकुटवा
रतुमहाथलागीलकुलेकरिरिसा
तह्हातेनिकसो॥उनिश्रैसीयेकरी
श्रपनेघरश्रायो॥तबश्रहीरस्त्रीसों

तजातहे॥सुकाहते॥त

तिहै॥ कोटवारकौंनकुंकारनश्रय
नेंबेटासोंरिसानें॥ तबवाकोंबेटा
मारिबेकेडरसोंहमारेंश्राइपैगयो
वाकेबिनुदेषेरिसातजातहै॥ यह
कहिवाकोंठीमतेंमनुवाकोंकाढि
दिषायो॥ तातेंयहकैसीकहीहै॥
जुपुरषतेंश्रीनकोंभोजनह्वनो॥ बु
धिचोगुणी॥ बलछगुणो॥ कामश्रा
ठगुणो॥ जातेंहौंकहतहौं॥ काजु
कीबरयाजाकीबुधिफुरैसोई
भलो॥ तबकरटककहतहै॥
हेतोश्रोसीये॥ तबहुइनकीप्री
तिबहुदिननकीजमीहै॥ एकोंसे
छूटिहै॥ दमनककही॥ उपायक
रिछिडाइहै॥ जातेंजोकाजेनपाय
तेंहोइ॥ सोबलतेंनहोइ॥ जातेंए
कहिकागिसोंनेकश्यचकरिका
रोसापमार्‍यो॥ करटककहीय

हकैसीकथाहै। दमनकहतहै कनेऐकरूषपरऐककागअरु कागिनीरहैं॥ वाहीवृषपरयेक कारोसापरहे॥सोवहकागनकै बालकखाई॥सबहीखाये॥तब कागीकोपुनिगर्भरह्यो॥तब उनिकागसों कही॥स्वामीयहवे रखाडिये इहांकारेसापतेंहमारे बालकनउबरिहैं॥श्लोक॥दुष्टा भार्जासठंमित्रं॥भृत्यश्चोत्तरदाय क॥ससर्पेचगृहेवासो॥मृत्यरेवन संसय॥टीका॥जातेदुष्टस्त्री॥कप टीमित्र॥सेवकउत्तरदेइ॥जाघर मेंसर्परहै॥ऐचारयोमृत्यकेका रणहैं॥अरेप्रियतूमति डरहि॥ब हुतबारमेंयाकोअपराधसह्यो है॥ अबहौयाकोंमारिहौं॥तब कागिकही॥ यामहाबलीयासो

बैरतुम्हकोसेकरिहौ। कागकही
तूयाचिंतामतिकरहि। जातेजा
केबुधिहैताकेबलुहै। जाकों
बुधिनाही। ताकैबलकाहेकौ।
जातेबुधिकेबलकरिमहाबली
सिंघु। ससेमास्यो। तबकागीक
हीयहकैसीकथाहै। कागकह
तहै। मंदारपरबतउपरि। ऐकदु
र्दनामसिंघरहै। सुसबपसून्हकौ
मारतहै। तबसबपसूमिलिसिंघ
सौंवीनतीकरनलागे। मृगराज।
सुनौ। तुमसबपसूकाहेकौंमार
तहौ। तुम्हारेअहारकौएकऐक
पसुनित्यआनिदेहिगे। संघक।
हीभलीबातऐसेयेहोऊ। तबए
कऐपसुनित्यपाहुरहै। तबए
कदिनबूढेससाकीवारीआई
तबवेससेबिचास्यो। हेजीवत

हीडरकोत्रासहूरीकरैजेमरननश्चिं
तहैह॥तोसंघसोंदीनआषोंसकादे
को॥यहबिचारकरि॥हलवैहलवै
चल्योतबसिंघकेंजाइपहुच्यौ॥तबसिं
घरिसाइकरिकह्यौकाहेतूबडोतोंअ
वारेआयो॥ससोकहीयामेरोअपराध
नाही॥मारगमेंमोकोंओरयेकसिंघ
पकरिरह्यो॥मैंवासोंअनेकसपतक
रितुमकों॥कहनआयोहों॥सिंघयह
वातशुनिरिसाइकरिक्रोधसोंकह्यो
बेगिचलिमोहिबताऊ॥वहकहांहै
तबससावाकोंलेगयो॥लेजाइ॥गह
रेकूवाऊपरिगाढोकियो॥ससोकहीदे
षियाभीतरसिंघुहै॥यहकहिवाहीसिं
घुकीपरछाईदिषाइ॥तबसिंघुबिना
बिचारेही॥वाकोंमारिबेकोंवाकूवा
मेंपर्यो॥परतहीमूवो॥तातैहौंकहत
होजाकेबुधितासीकेबलु॥तबकागि

कही सुनौ जु ईहा उपाय वूझिये सो
करौ ॥ इहां निकट ही के सरोवर ॥
मै ॥ राजाकौ पुत्र स्नान आइ नित्य
ही करतु है ॥ सु वह सौनेकी साक
ली उतारि राषतु है ॥ सु तू ले करि
या सर्पके षोडरे मै राषु ॥ वह जब
स्नान करन लागौ ॥ तब सौनेकी
सूत्र उतारि जु ई धर्यो ॥ इह बीचि
काग निवह साकली ले आई ॥ आ
नि सापके षोडरे मैं धरि आई ॥ तब
राजाकौ पुत्र देषै तो साकली नाही
काग ले गयो ॥ तब राजाके पुत्रके
सेवक षोज करन लागे ॥ षोजत
षोजत वा षोडरे मै साकली देषी
अरु साप देष्यो ॥ तब सापकौ म
रि साकली ले आये ॥ तातें हौ क
हतु है ॥ उपाव करि हौ ॥ इसु प
राक्रमतें न होई ॥ तब करटक क

हीत्रैसीहैतौजाङ्या।।पैहमेउमकौंकुमल
हैङ्या।।तबदमनकचल्यौ।।पिंगुलकौंकै
निकटिगयौ।।जायजुहारकीयौ।।राजा
कौंआयपासिबैठौ।।बैठियहबात्तकु
हौ।।राजाजटिपिउमहमकौंनाहौचा
हतौ।।तबहौतैंहमारौअपमानहोतदे
तौहूहमकौंजिपाहआयेहौ।।जातैराजा
कौंजदिआपदाहौहुा।।तबराजाअमा
गैचलौअरजबकौयेकाजेकैसमूटल
तजौंणां।।तबसेवुगा।।राजाकौंहित्रूहोइ
सौबिनपूछेंहूकहै।।अरुराजाभोगक
रिबैरूं।।मंत्रीकायकरिबैकौं।।जौराजाकौ
कोयैनशाहसौमंत्रीकौंदोषआवै।।राजा
तैंदेषिमंत्रीयनकौयहब्योहाररहै।।
बरूप्रानजांहि।।अथवाकौऊअपनौं
मूढकौटो।।मंत्रीसौऊसहौ।।जबकौऊरा
जाकौंराजलीयौचाहौ।।तबबहबात्तसु
निकरिमंत्रीचुपकरिनरहै।।राजासं

कहै। तब पिंगलक वासों आदर क
रि। बुलाइ पूछत है। तुम कहा कह्यो
चाहत है। दमनक कहीयह संजी
व क तुम सों न बूझिये। ऐसी कीयो
चाहतु है। सदा मेरें आगे तुम्हारी नि
दा करतु है। राजा कौ प्रताप। तखा
दमंत्र नास करि है। यह कहि राज
लीयो चाहतु है। आपही राजा भयो
चाहतु है। यह सुनि राजा भय करि
सुनि चुप कै रह्यो। दमनक पुनि क
ही। राजा तुमसब मंत्री बिडारि क
रि। यह एक सब ही मंत्री कीये। यह
तुमसलीन करी। जातें मंत्री बहुत
बाटे। तब लछिमी दोई मैं एक कौं
छांडे। जातें स्त्री के कहैं न कुतना
रन सह्यो जाय। औरजो राजा एक
ही मंत्री कौं प्रधान करै। तो वा मंत्री
कें अपान उपजे। आलस तें राज्य के

कार्जमैं विरक्तहोइ॥तातैं राज्यकी
इछ्याकरै॥राज्यकीइछ्यातैंराजाकौं
मारै॥औरविषस्योमिल्योअनगेर
तैंचल्योदंत।दुष्टमंत्री।येतबहीदूरि
करियेहि।नराषीयहि।औरजोयेक
हीमंत्रीकोआधीनहोय।तोवाकौं
राज्यबिगरै।राजाआपदाकरिदुषी
होइ।जैसैंआधरोइसरेमनुषबिना
नचलिसकै।औरमंत्रीजबबढाइ
जेतबबुरोतर्कैतातैंप्रभुतातैंबिका
रउपजै॥वहसंजीवकअपनीइछा
तैंसबकार्जकरतहै॥यहबातऐ
सीनबूझिये॥आगैंराजाजीतुम्हारै
बिचारुसोईप्रमाण॥जोतेऐसेपुर
षलोकमैंनाही॥जोपराईअस्त्रीकौं
सकामहोइनदेषै।तातैंवहतेरौ
राज्यलयोचाहतहै।तबसिंघबिचा
रिकरिकही।हैतोऐसीये।तोऊस

जीवकपरमेरौबहूतश्रेष्ठहै। जातें
जोआपनोप्रियहै सुजोकपटकरै
तोप्रियहीहै जैसोबहूतदोषकरि
सरीरप्रियहीहै औरजोबुरौऊकरैतें
प्रियहोइशुअप्रियकैदेनहोइ जैसें
अग्निजोघरजारैतौऊअग्निबिना
न नसरै दमैंकपुनिकहौ।राजायाही
तोदोषुहै जातेंजाहीकौराजाबढा
वे बहूतमयाकरै ताहीकोलछि
मीआराधे बेटाहोउ।मंत्रीहोउ।कि
औरकोऊहोऊ।सोईगऊरजाकौं
राजाबढावै। औरशुनु।जुबातशुनत
नीकीलागे सुजुनीकीबातहितहो
इसोईकहै नीकीबातकोकहनहारौ
शुननहारेतहांहोइ तहांआगेंबहू
तसंपदापावै राजातुमघरकेसेवक
छाडि।यापरदेसीकौबहूतअधिका
रकीयो सोयहनहूजियेयेजातेंबि
च्यात्रैसोवंधुनांही।व्याधिसोसत्रुनां

ही।पुत्रसोस्नेही नाही॥ आपसो ब
लु नाही॥ राजा सुनो घर के अपराधते
और कोउ परदेसी आनि निवाजिये
तो॥ सर्बथा करि कारिज में भेद उप
जें॥ अरु सिंघु कहत है॥ यह बडो आ
श्चर्य॥ जाके मैं निवाजो॥ इह भांति
मया करो॥ सु मेरो बुरो कैसो करि
है। दमनक कही राजा किनी सेवा
करियै तो दुर्जन आपनी प्रकृत्य न
छांडै॥ जैसें कूकर की पूंछ। सो भा
ति ति लगाइजे॥ अरु सेकिज्ये। तो
ऊ टेढी पै होइ॥ नीच को अधिकार
करि बढाइजे॥ सनमानु दीज्ये। तो
हू भली न ताको॥ जैसें बिष को रूष
अमृत करि सींचियै तो कमीठे फू
लन लागै॥ तातें हौं कहत हौं [illegible]
भलो बांछियै ताको बिन पूछें [illegible]

त कहियतु की बात असी ये है ॥ यह साधु को धर्म है ॥ जाते नीति मैं यह बात कही है ॥ ऐसी सो जो आपदा ते निवारै कर्म सोई जाते अपजस न होइ ॥ स्री सोई जो आमै रहै ॥ बुधिवान सोइ ॥ जाको साधुजन आदर करि है ॥ मंत्री सोई जो गर्व न करै ॥ बुधि सोई जो त्रिस्ना छाडे ॥ मित्र सोई जो हितकारी होइ ॥ पुरष सोई जो जितेंद्रिय होय ॥ ताते राजा संजीवक ते उपजि है दुष सो जे चेतन होइ ॥ बिनासन कहै तो हमारो दोष नाही ॥ जाते राजा काम भोग मैं आसक्त करिकै अपनो काज रहि न जानै ॥ आपनी ही इछा मात्तो रहै हाथी सो ॥ तब अहंकार करि जब दुष पावै ॥ तब सेवकन कै माथे दे ॥ अपनी अनीति न जानैं ॥ यह सु

निपिंगलकअपनेंमनमेंबिचारत
भयो॥ तोऊऔरकेंकहे॥आपनें
बिनुबिचारेंप्रसादतथादंडनकी
जे॥जातेंगुनदोषबिनुबिचारें॥सा
स्तिप्रसादनकीजे॥जैसेंगर्बतेंस
र्पकेमारिबेकूं॥सर्पकेमुषमेंहाथ
कोउमेलेतोवाहीकोनासहोइ॥
अबप्रगटकहतुहें॥संजीवककों
इहांबुलाउं॥दमनकही॥राजावा
कोंबुलाये॥मंत्रभेदकरिहे॥जातेंय
हश्रुपक्षमंत्रीनीकेबीजनीकराषि
ये॥जातेबीजजोषोरोउफूटेतोअं
कूरकोनकरे॥औरमंत्रसबहीअंग
रिगुप्तहोइ॥तोऊबहुतकालनरहि
सके॥जैसेंकातरजोधा॥सबअंगसं
जोगपेहरेंऊ॥सत्रकेडरबहुतका
लसंग्रामेंरहिनसकें॥आगेंजासेव
ककोदोषदेषेहोय॥तोवाकोवहदो

षविनुछांडेवठाढ्जे सोवहनीतिनां
ही यहनबूझिये जोनैयेकबेरजि
हकोदोषदेषिये तासोंहमसैंप्रीति
करियेतोमरणपाइये जैसेपक्षिरि
गर्लेगयेंमरें औरजोउपरिकाम्नित्यो
रहै अंतरकरदुष्ट तामनुष्यतेस
बअनर्थउपजे जैसेंसकुटिनीराजा
दुर्जोधनकोमंत्री अरुसकटार रा
जानंदकोमंत्री तबराजायहकही
विचारयहहमारोक हाकरिसकै
दमनककही याकेअंगपसगवि
नजानेकैसेंकहिजाय अंगतेंछो
टीऊबडोकार्जकरे जातेंदेषुएक
पंपीहै समुद्रव्याकुलकीयो सिंघ
कहीयहकैसीकथाहै दमनक
कहतुहै समुद्रकीतीरएकपपीहा
आपणीस्त्रीसहितरहै तहांवाकी
स्त्रीप्रसूतिसमये भर्तारसोंक

ह्यो॥स्वांमीमेकौंअंडाराषिवेकौठौरनी
कोसीकरौ॥तबउनिकहीयहठौरमेंले
हो॥तबअस्त्रीकहीयहठौरसमुद्रकौलेहै
गिआवतहै॥तबपीपीहाकहनलाग्यो
हंमकौंलहरिआइहै॥हमहूकौनेउपाइ
करिदुषदेहिगो॥जबयहसिअस्त्रीकही॥
स्वामीतुमससमुद्रसौंकैसेवैरकरोगे॥जमरी
सक्तिदुषबिनासकरनकौंदैकिंनांही
यहबिचारकरिकौ॥जेकरैसुदुषनपावै
तबअरताकेबचनकरिउदांदीअंडा
राषसमुद्रहूमांहिपपीहाकौसक्तिदे
षिवेकौं॥अंडालहरमैंवारे॥तबवहअ
स्त्रीशाककरिमरतासौंवोली॥वेडोक
ष्टभयो॥अंडासमुद्रलेगयो॥तबपपीहाक
ही॥किप्रियातूमतिडरपहि॥अंडाहौलैआ
बहौलैआइहौं॥यहकहिपंछीसबमि
लाइकरि॥गुरुड॰सौंकही॥गरुड॰श्रीना
रायणसौंकही॥तबश्रीनारायणकौ

श्रागपायाई॥ समुद्रश्रगादीवे पर्य
हूसंतोषपायो॥ तातैहोंकहतहों
श्रंगप्रसंग बिनजाने॥ पराईमति
नजांनीजाय॥ हमकैसेंजानहिंगे
जयाहमकौमारनश्रावतहै॥ तब
दमनककही॥ तबसीगकेश्रग्र
तुम्हारैंसन्मुषकरि॥ पूछतगइ
हैतबहीजांनिहो॥ दमनकराजा
स्यइतनीबातकहिकरिसंजीव
कके निकटिगयो॥ उनिसंजीव
वक श्रादरसो दमनकपूछ्यो॥
मित्रकुसलहै॥ दमनककही॥
परसेवककौकाहेकीकुसलहै॥ स
जातेंसंपति श्ररुपराधीन चित्त॥
कबहुथिरनाही॥ श्रनुजीबेकु
कीप्रतीतिनांही॥ बिसेषजोराजा
कोसेवक॥ कहतिनकौचित्त
कैसेथिररहैइ॥ श्रोरद्रव्यपाइ

केकौंननगबैसयो॥संसारीऐसो
कोनहै॥जाकेआपदानमई॥को
नकोमनुश्रीनकरिनाहीहस्यो॥
राजाकोनकोमित्रभयो॥कालके
बसकोननाहीपस्यो॥कोनऐसो
जाचकहैजिहबडाईपाई॥दुर्जन
केफासमैपरकोनछूटोहै॥मित्रक
होतो॥दमनकरहतहै॥मित्रहैला
गपहीनहै॥दुषजैसेसमुद्रमैबूड
तसायश्रलंबनदेष्यो॥दिषिकरि
नपकरिसकोनछाडिसकै॥तैसें
हौंनकहिसकों॥नबिनकहेरह्यो
जाय॥जातेंजोकहोतोराजासोंह
मारीप्रतितिजाइ॥जोनकहोतो
तेरोबुरोहोइ॥तातेंकहाकरोंक
हाजाउ॥हैदुषसमुद्रपेपस्यो॥यह
कहिसासछाडिबैठो॥तबसंजीव
ककही॥जद्यपिराजाकीबातनं

कहिये ञियतोउमनकीवा
तप्रगटकरिकहै दमनक
नीरैहोइकैंकानमेंकही जउद
पिराजाकीबातनकहिये तोऊ
तूमेरीवत्ती तितेंआयोहै मेरो
पासरहैहै तातैहोंअपनोंपर
लोकराषिबेकूं तेरोहितजा
निकहिहो सुनियहराजरत
रेपरकुद्रिष्टिहै सुमोकोयह
एकांतमेंकही आजुसजीवक
कोमारि सबपरिवारत्रिपति
करिहै यहसुनिसंजीवकबहु
तउदासभयो उषपायोदमन
कासुनिकही उषमतिकरहि
जुकछूआगेंहूकियेसुबिचार
करउ संजीवकएकछिनबिचा
रिकही यहजिनकहीतिनचली
कही जातेंओंनीचहीतेंरमें अरु

राजाकुपात्रहीकोपटावै॥धनुकयन
हीकोरहै।मिथपहारमेंउषरमेंबंकुर
तबरिषहै।मनमेंबिचारतभयो।य
हदमनकआपहीकहतहै॥किश्रो
राजाकोबिचारहै।यहबातजानीन
जाइ।जातेंउत्तमआश्रपाइकरिबुरो
जमलोहीमतुहै।जैसेंमलीनकाजर
ञीनकेनेत्रमोंनलोईलागो॥अथ
वाराजाईकेहाकेहै।औरसेवकसा
वधानव्हैसेवाकरैतौसेवातकराज
केक्रोधनपैजे॥यहआश्चर्यनांही॥
जातेंदेवताकुकीप्रतिमा।सेवक
कोंघारेंअपराधक्रोधकरै।तातें
यावातकोजकारनपाइक्रोधकरै
ताकोक्रोधवा का रनगयेंजाय
औपरिबिनकारनहीक्रोधकरैता
कोंमनुष्यकैसेंप्रसनकरिसकै।य
हमनमेंबिचारि॥ दमनकसोंप्रग

टकही। अहोराजाकोदमकहा अपरा
धुकीयो। जातेराजा तुमसौ ऐसीकही
अथवाराजा बिनकारनऊंबुरोकरहि
दमनककहीयाहतैंमलीजांनी सुनु
राजाकीसेवाअतिकठिनहै। जोगेस्वर
ऊसैनंनिर्वरहे। जातेभलौचतुरमित्र
ऊकोकीयोनुपकारक। बुरोकरिजा
नहि। असुओरऊकोकीयोअपका
रहूको। कबऊभलोकरिजांनै। ताते
राजाकोमनु। कछुकरिबसिकीयो
नजाइ। ओरअसाधकोसतउपकार
करियेतौव्यर्थ। मूर्षकोंसौहितबचन
कहियेतौव्यर्थ। जाकेबिचारनांहीत
कोंसौतिबुधिसिषाइजेतौव्यर्थ। औ
रचंदनकेरूषमेंसाय। जिहपाणीमैं
कमल तहागाह। गुनकोनासकर
नहारमूर्ष। तातेंजहासुषतहांदुषहै।
दमनककही। यहगाकरमनमेंसरस

उ टिलहै॥ यहमोजानी॥ जातेंआन्न
देषि हरही तैंहाथउगाह॥ आषिआ
दकेआसूआनि॥ कहूवैविबेकूआ
सनटारिदेह॥ अरुगाढोआलिंगनु
प्रियबार्त्ता हितसौंपूछै॥ मनभीतरि
ति कपटी॥ बाहरिमीठो॥ यामैंआ
चउर॥ यहऐसोउर्जनकुअपूर्बना
चकहातेंसीषोहै॥ देजातेंसमुद
रबेकू जिहाज॥ अंधकारकोदीप
गरमीकोबीजना॥ मातीहाथीआ
स॥ इहभांति श्रुवस्तुनाही॥ जाको
धाताउपावनांहीकरिदीयो॥ और
उर्जनके चित्तकी रत्याबिधाताक
रिसक्यो॥ यहमेरैंमनिआवतिहै त
बसंजीवककही॥ हौंधानकोषान
रो॥ काहेतें सिंघकेपस्यो॥ बडोउष
यो॥ मासौकाहेतेराजारिसांनो॥ राजा
सौंसदा डरिये॥ राजाको.

मेंगहोइतोकोंनमिलाइसके जैसैंफ
टिककोकंकण फूटैतोकोनजो
रिसके औ वज्रकोतेजु अरुराजा
कोतेजुऐदोनुकठिनहें परिवज्रको
तेजऐकहीकोमारे दूसरोराजाको
तेजु कुलग्रामदेस सबहीकोमारे
तातेंसंग्रामकरियेसोभलो दीन
भाषिजेसभलीनाही जातेंसूरमा
कोदोइवातभलीहें जोमरेतोस्व
र्गजागवे जीतेतोसुषभोगवे अब
यहजुधकोसमयोहे जोजुधनकरि
येतोमरणनिश्चेहे जुधकरियेतो
संदेहहें आपुवावोमारियेकव
हआपकोमारे तबदमनक कही
जववहतोकोपूछनगाइ सुषपसा
रिदेषे तबतो कमहोइसुकं
रियहि देषुहे
नहोइ तोनु

गिनकोतिजजाय॥तबराषकोसबैहुवै
ऐवातैंसबगुप्तकरदियहै॥नातरनतु
मनहम॥यहकहिदमनक॥करटक
पासिगयो॥उनिकहीकहाकरिआ
यो॥दमनककहीडकेमारकरवा
यो॥करटककही॥यामेसंदेहकहा
जातेदुष्टकेकोनबंधुहै॥बकतमानै
कोनरिसाइ॥धनकरिकोननगुषया
वै॥मानतेकोननपंडितहोइ॥ओर
धनीहोइअरुसुधिबुधिहोई॥साऊ
असाधनिकेसंगतेअसाधहोइ॥दुष्ट
कोसंगकहानकरै॥जैसेआग्नित
हांरहैतहांहीजरावै॥आगेंदमन
कपिंगलककेंनिकटजाययहक
ही॥अहोराजाआयेहोवहपापी॥तु
मसोवधांनहोइवैगो॥यहकहिजै
सेंसंजीकसोंकहीहुती॥तिहीभा
तिसिंघुबेंगास्यो॥संजीवकआइजु

हारकरि॥ तुहीभांतिसिंघदेष्यो॥ देषिक
रिजथासक्तिपराक्रमसिंघसोंकीयो॥
तबदोनूंसंग्रामभयो॥ संग्रामहोतरसिं
घहिंसंजीवकमार्‍यो॥ आगेपिंगलसं
जीवककोमारि॥ कछुसोककरिरहो॥
अरेहामेंकोंनदारुनकर्मकीयो॥ जा
तेंसबेमिलिकरि॥ राज्यभोगकरहि
पापुराजाकेमाथे॥ जातेंधर्मकेछाडें
राजाहोइ॥ जैसेंसिंघहाथीमारे॥ मृग
राजकहावे॥ औनीभूमिगये॥ नीको
सेवकगये॥ वडीहानिहोइ॥ तोकुभू
मिऔरहोइ॥ पैजलोसेवकबहुरिन
पाईये॥ तबदमनककहीराजायहक
हांकीनीतिहे॥ जुसत्रुकोंमारिपछि
तातहे॥ यहबातनबूझिये॥ जातें
पिताहोइ॥ पुत्रहोइ॥ भाईहोइ॥ मि
त्रहोउ॥ जोराजाकोंमारिबोताके
तोराजानकोंसर्वथामारे॥ औरजो

धर्मात्मा होइ॥ सो तु अति दया न करै जो दया करै तो हाथ कौ द्रव्य औरकौ कछि नाइ लेइ॥ और संन्यासी कों सब त्रि छिमा है॥ गुण है॥ राजा जे अपराधी कों छिमा करै तो दोष है॥ और राज्य के लोभ तें॥ अहंकार तें जो स्वामी की पदवी आपु कों चाहै॥ जाकों मरन अंत॥ नरक प्राप्ति होइ॥ और राजा जो दयावंत होइ॥ ब्राह्मण सबै वस्त षाई॥ अस्त्री तंत होइ॥ सेवग सत्रु होइ॥ मित्र दुष्ट होइ॥ अधिकारी असावधान होई॥ जो कीयो उपकार न मानै॥ ए सब ही हरि छाडियै॥ और राजा बिष तें छाडि यहि॥ राजा नीति असी जैसी बेस्या॥ कबहु कठिन॥ कबहु कोमल॥ कबहु क्रूर करै॥ कबहु सांच कहै॥ कबै दयावंत
कबहु लोभी॥ कबहु

हीयरचि बक्रत करावै सबैरा बक्रत मि
त्र बक्रत धन चाहै इह भांति अनेक
रूप राजा करे तौ ही सुष पावै इह भा
ति दमनक के समझाये राजा सोक छा
डि सिंघासन बैठो दमनक संतोष पा
इ कही राजा तुम्हारो जय होउ अरु
सब लोक कौ कुसल होउ यह कहि
सुष सौं रहो तब बिस्नुसर्मा राजपु
त्रन स्यौं कही सुह्रद भेद सुन्यौ तुम
राजपुत्रन कही हाजी सुन्यो बक्र
त सुष भयो बिस्नुसर्मा कही और
यह होउ तुम्हारे सत्रुन कौं परसुह्र
द भेद होउ सत्रु दिन २ छीन होउ
साधन कौ सदा सुष होउ बालक इ
हि कथा रूपी बाग मैं सदा षेलउ

आगे जो बिस्नुसर्मा और कथा

कोबिचारकीयो॥ तबराजपुत्रनकही
जो तुमदिनीकोलागेसोईकहतुहो बि
ष्णुसर्मीकह्यो विग्रहसुनौ हंसनसोंम
रुमोरनसों जबबैरउपज्यो॥ तबकाग
मयूरकीकैतिहोइ॥ हंसहराये॥ तबराज
पुत्रनकहीयहकैसीकथाहै॥ बिष्णुस
र्मीकहतुहै॥ कर्पूरदीपमें॥ पदमकेलि
नामसरोवरहै॥ तहां हिरंन्यगर्भनामरा
जाहंसरहे ॥ सुसबजलकेपछीनमिलि
राजाकियो॥ जातेंजहांनीतिकोग्याता
राजानाहीहोई॥ तहांकीप्रजानठह
राइ॥ और राजाप्रजाकीरछाकरै॥ प्र
जाराजाकोपठावै॥ बढाइबेतेराखि
बो अधिकहै॥ जातेंराखियेनांहीतोब
ढाइकहा॥ एकसमैवहराजासोंनेंके
कमलनुपरिसुषबैठेरहे॥ परिवारि
सहित॥ सभासहित॥ तहांकोनेक
दीपतें बगुलाआयो दीर्घमुषनाम

नाम करिवेगे तबवाकौं देषिराजाक
ह्यो दीर्घमुषतुमहरितें आयेंहौ उहाके
विसेषिसमाचारकहो तबबगुलाक
हतुहे राजाऐकबडीबातहे उहेक
हआयोहे जंबूदीपमेंऐकबिंधिना
मपर्वतहे तहांबिचित्रबर्ननाममयू
रपछीनकौराजाबसतुहै वाकेसेवक
मोकौंबनमेंचरतदेषि पूछनलागे
तूकौंनहरिकहातेंआयो तबमेंक
हीकर्पूरदीपकौराजाहंसचक्रवर्ती
हिरंन्यगर्भनामताकौहौसेवकहौं
ष्यालतेंऔरदेससांतरदेषिवेकूआ
येहौं तबउनिकहीकहोधौं तुम्हा
रेअरुहमारेदेसमेंकौनदेसकौनराजा
भलो तबमेंकहीरिकहाकहउहे
बडंतअंतरहै कर्पूरदीपसाक्षात
स्वर्गलोकहै राजाहंसहंसरीयदहै
इहांवुरेदेसमेंउभकहाकरतहौ।

चलोहमारेंहीदेस॥तबमेरोबचनसु
नि॥उनिपंछीनक्रोधकीयो॥जातेंसा
पकोंदूधपाईयेतौबिषहोइ।तैसोमू
र्षकोंनलोउपदेसदीजेतोक्रोधहोइ॥
औरमलेहीकोंउपदेसदीज्येबुरेकोंन
दीजे।जातेंआग्पानीवादरकोंउपदे
शदीयेंपछीनकीठोरछूटी॥राजाकही
यहकैसीकथाहै॥बगुलाकहतहै॥
नदीकेतीरपर्वतकेहेठबडोएकसे
वरिकोरूषहै।वारूषपरिषोंधमेंपंछी
नरिषाकालमेंसुषसोंरहेतहांएकस
मेंजैसीनीलकीरासिहोइ॥ऐसेअति
स्याम॥मेघनकीआकासतेंबडीवर्षा
भई॥तबरूषतरिबादरबर्षातेंदुषी
आइबैठे॥उनबांदरनकोंदुषीदेषि
दयातेंपंछीनकही॥अरेबादरहम
अपनीचोंचनकरित्रिनएकत्रकरि
आपुकोंघरकीयोहै॥तुम्हारेतोहा
थपावहहि॥ऐसोकाहेमरतहो॥यह

मुनिक्रोधकार बादरक्त बिचार्यो ऐसें
ही सुषी षोधामें पैठि हमकों हसतहै
है उबषी तो जाउदेषहिंगे पीछेंबषी
केगये सबबांदर रूषचढि षोधासो
टिडार्यो वातक सबहमकों मारे ताते
हों कहतहों जो बातकों भेदनजांनें
ताकों उपदेसनकरिये तबराजा हंस
कही तो आगेकैसी भई आगेंक्रो
धकरि पंछीन कही तेरोराजा किनि
राजाकीयोहै मेऊं कह्योतेरो मयूर
किनराजाकीयोहै यहसुनि मोकोंमा
रन उठे मेंऊ आपनो पराक्रमदिषा
यो जातेपुरुषकोंअरसमें छिमावू
किये जबसत्रु अतिक्रोधसों मारन
उठे तबपराक्रमहू किये जैसें औरस
नें स्त्रीकोंलज्या आभरण है क्रीडाकों
मेंदिषाई आभरणहै यहसुनिराजा
कह्यो जो अपनो अरुसत्रुकोबलु
नुबिचारेसंग्राम करे सोदुषपावे

जैसैंसहकोदोषगदहामास्यौ॥बगुलाक
हीयहकैसीकथाहै॥राजाकहतहै॥
हस्तिनापुरमेंऐकबिसालनामाधोबी
रहै॥ताकेयेकगदहालादैबऊत॥बि
नुषायेंदूबरोहोइमरनलागो॥तबव
हिधोबीबाघकोचामबाधिबनकेनिक
टिहरेथानकेषेतमेंछाडिआयो॥धान
षाहषाइमोटोभयो॥बाघजांनिकोउनि
कटनजाय॥ऐकदिनयेकरषवारोभू
रोकवरवोटतीरकमानछेपिरह्यो॥व
हगदहावाकोदेषिगदहीजांनिपुका
रतवासौंसामहौआयो॥तबवहिजान्यो
यहतौगदहोहै॥यहजांनिकरितीर
करिमास्यौगदहामुवो॥तातेंहौंकह
तहौं॥बातबिचारिकहिये॥तबराजा
कहीआगेकहो॥तबउनपंछीनकही
अरेदुष्टबका॥हमारेदेसमेंचरतहै॥ह
मारीयेनिंदाकरतुहै॥यहबातहमकौं
सैसहैतबकहीरमूर्षतेरोराजाअति

सूको है वाकौ राजा न बूझिये जाते जो
सूखो होइ सुहाथ ऊकी बस्त न राषिर
के सो पृथवी के से राषि है जाते रा
ज्य वाकौ न बूझिये तक वाको मीडक
ऊ वाकौ सराहे ताहम सो कहत है उह
ही चले जाते फल फूल छाया सहित
बडौ रूष सेइये जौ फल नांही तो छा
या तो न जाय अरु नान्हे कौ सेवा न क
रिये बडे कौ आसरौ करिये जाते कल
वारि के हाथि हाथि होइ धरा होइ तौ लोग मदे क
है नीच के आसरे ते बडे छोटे दीषि
बडो ठाकुर होइ ता के नाम ही बडा
ई पाईये जैसे चंद्रमा के नाम ते ससा
सुषी भये मैं कहीयह कैसी कथा है
तब उन कही ऐक समै यव बर्षा बिन ब
बे प्यास मरत सब हाथीन के जुथ
ति सो कही स्वामी कहा उपाव कीजे
नी नांही तब उन कही ऐक बडो

सरोवर है चले॥ तहां वा सरोवर के ती
र॥ स्वसा सर्ब रहे॥ ति हाथीन्ह के पाव
तर चापे गये॥ तहां ऐक सिली मुष ना
म ससे बिचारे॥ जे ए हाथी नित ही आ
इहें॥ तो ऐको समान बचे॥ यह सुनि
बिजै नाम ससा कही॥ मत डरपकरो
या को उपाव हों करिहो॥ यह कहि च
ल्यो॥ पेंड में जात बिचारयो॥ कैसें हों
हाथीन्ह से गाटो होइ बात कहें॥ ज
तें छुवत ही हाथी मारें॥ सूघत के सा
प काटे॥ राजा पालक मारे॥ दुर्जन
हसत ही मारे॥ तातें हों परवत चढि
हें तब कहिहों॥ जब उनि परबत च
ढि दिषाइ दीन्हों॥ तब गजराज कही
तू कोंन है कहां ते आयो॥ तब ससा
कही॥ मैं चंद्रमा को सेवक हे॥ तेरे
पासि पठयो हे॥ हाथी कही के हा क
ये सो कहो॥

द ऐसें कहे ॥ अरु इंद्र पुनि मारिबे नां
कह्यो ॥ तातें जो चंद्रमा कही है सो चं
हि है ॥ ये ससा मेरें चंद्र सरोवर के रख
वारे हैं ॥ तुम मारि षेदन लो नाहीं कि
यो ॥ वै मेरे राषे हैं ॥ याही तें मेरो नाम
ससांक है ॥ इतको बचन सुनि डरा
इ गजराज कही ॥ इहिं बार बिन जांनें
आये ॥ अब न आव हिंगे ॥ देषिया स
रोवर में चंद्रमा रिसु करि का पतु है
तू आइ दंडवत करि छिमा कराइ
जाह ॥ तब वै राति कों लै जाय पानी
में प्रतिव्यंब दिषाई ॥ गजराज तें दंड
वत कराई ॥ ससे कही राज बिन जां
नें इह अपराध कीयो है ॥ ईह बा
र बकसिये ॥ यह कहि हाथी बिदा
कीनों ॥ तातें कहत हो बडे के ना
म ही तें सिधि होई ॥ तब मै ऐसी क
ही ॥ जो हमारो ठाकुर बडो प्रतापी

है॥ यहसुनिसबमोकोंराजापासिपक रिलेगये॥ मोकोंदिषाइराजाकोदंड वतकरिकह्यो॥ राजदेष्योयहछुषह मारेदेसमेंचरे॥ हमारीनिंदाकरेतहै राजाकहीयहकोनहै॥ कहातेंआयो है॥ पंछीनकही हिरंन्यगर्भराजाको सेवकहै॥ कर्पूरदीपतेंआयोहै॥ तबवाकोमंत्रीगीध तिनपूछी॥ ते राराजाकेमंत्रीकोनुहै॥ मेंकहीस र्बग्यनामचक्रवाकहै॥ बूझियेंआ पनेंदेसकोहै॥ जातेंआपनेदेसको होइ॥ कुलआचारकरियुक्तहो इ॥ अकोरनलेई॥ जुधनीकेंजानें बसनकनेंनहोइ॥ काछकरिदि ढहोइ॥ सास्त्रजानतोहोइ॥ परंपरा चलिआयोहोइ॥ प्रसिधहोइ॥ द्रव्य उपराजिजानें॥ ऐसीमंत्रीकहिये आपवाकरिये॥ ३९

वाबोल्यो कर्पूरदीपनाम्कोंदीपजं
बूदीपदीमें तेऊदीपउम्हारोहीरा
ज्यहै राजाकुं कहीयहवातश्रेसी
यहै जातेंराजाउनमत बालकर
धनीस्त्री ऐजोण्याइबेलाइकनहीं
ताहिबांछे जोपाइबेलाइकता
हिकेंछांडहि तबमेंकहीजेउम्हा
रेराजाकीठकुराइतिवातनिही
होइ तोइमारोऊराजासारेजंबू
दीपकोराऊरहै तबमवाकही
केजांनियं मेंकहीजुधतंजांनि
यें तबहसिकेराजावोले जाइश्रा
पनेराजाकोंसावधानकरिहम
श्रावतहै तबमेंकहीश्रपने
बसीठपगाव्रो राजाकहीकोंन
पगाइये जातेंजोस्वामीकोभक्त
होइ गुणीविचक्षहोइ वक्तर

दीठव्यसनरहित:॥ त्रिमायुक्त॥ ब्रा
ह्मणपराये मनकीजांनै॥ उत्तरफु
रै॥ ऐसौ वसीठ करिये॥ तातें सूवा
पठाइये॥ सुकतुमही याकें साथ
जाऊ॥ तब तु निकह्यौ॥ राजा की आ
ग्या माथे पर पैं या दुष्ट के साथ ऊन
जाऊं हों॥ जातें यह कही है॥ दुष्ट
बुराई करै॥ साध के सिर जाय॥ जा
तें रांवण नें सीता हरी बांध्यो समुद्र:
दुष्ट के साथ न बैठिये न चलिये॥ जे
सें काग के संग न बैठि हंस न मार्यो
चलत बटेरि मारी॥ राजा कही यह
कैसी कथा हैं॥ सूवा कहै उहै॥ उजेंन्य
के पैंडे मैं बन भीत॥ एक बडो पीपर
कौ रूष रहै॥ ता ऊपर ये क हंस ये क का
ग बहुत दिन तें रहैं॥ ग्रीष्म समय वि
षें एक बटोही॥ तीर कमांन निकट
रा षि

घरीएक बीतें मुषकी छांह गई त
ब घाम लागति देषि दयातें वृषउप
रतें हंस छांह कीनी तब काग सुमें
पाइ वाके मुष पर बिष्टा कीनी उडि
गयौ ॥ वह जागि देषे तौ हंस ॥
तब जान्यौ जो याही कौ काम तब
तीर करि हंस मार्यो ॥ तातें हौं कह
तहौं दुष्ट के संग न बैठिये ॥ अरु
उबटेरि की कथा सुनऊ ॥ एक दि
न सब पंछी गरुड की जात्रा कौ स
मुद्र की तीर चले ॥ तहां काग कौ
साथ एक बटेर चली ॥ पैंडे में एक
अहीरी दही लीयें जाय ॥ सो काग
बारबार वह दही षाइ ॥ जब उनदे
ष्यो मटुकी मूडतें उतारी ॥ काग भा
जि गयौ ॥ बटेरि मारी ॥ तातें दुष्ट
के साथ कबऊ न चलिये ॥ तब मैं
कह्यौ भाई सुवा हम सौं ऐसी का

देकहतहो॥हमरोजैसेराजातेसे
तुम॥ सूवाकहीहैतौश्रैसीश्रै
तौऊजैनकीमीठीवातेंषीती
तिनकरिये॥ तुम्हारीदुष्टतावा
तनहींजानी॥जातेऊंराजाते
उपज्यौ॥ मूर्षभलीकस्तूतिकी
येरीकै॥जैसेंमूरषवढईजारस
हित स्त्रीलेनाच्यो॥राजाकही
यहकैसीकथाहै॥ सूवाकहतु
है॥जोबनश्रीनामनगरीहै॥ता
मेंमंदमतिनांमयेकवढईवसे
सोआपनीस्त्रीकोविभचारणी
जाणें॥परिकबहुयेकअबेठन
देषै॥ तबवनिपरिछाकौंअस्त्री
कौंकह्यो॥औरगांवजातहैं॥दि
नाचारिलागिहै॥यहकहिकें
सयेकतेंफिरिआइषाटतरि
छिपिरह्यो॥

सकोरोहीजारबुलायो वासोंमि
लिषाटपरक्रीडाकरत वाकेश्र
गसोंभटकेतेंश्रीजान्यो मरीप
रिक्ष्याकोंभर्त्तोषा ट तरहै यहजा
निडुचतीभई तबजारकहीकाहे
रमतुकाहेनाहि उनिकहीजोमे
रश्रोंनकोंगक्ररगावगयोहै ता
तेयहगावमेरेलेषेंउजारिहै जो
ऐसाहैश्रहतोहाजिक्योंगयो त
बवुनिकहीरेबावरेऐसेनबूझि
येजैसेंतुमकहतहो देखिजोस्त्री
भर्त्ताकोंगारीकदीयेप्रसंनरहै
सोस्त्रीधर्मकोंपावे बनमेरहोग
रमेंरहो पापीश्रधर्म्मात्माहोइ
ऐसोभर्त्ताजाकेंप्रियहै सोउत्त
म लोकपावेश्ररुभर्त्ताश्रीकों
बडोसिंगारहै भर्त्ताबिनापरमसु
दरीकंनीकीनलागे जारतूपा

नफूलकोभोगयेकघडीकोहै
वहतोमेरोठाकुर॥सबअपराध
बकसिबेलाइक॥जोलेंवहजी
वेतोलोंजीवतिहै॥मरिहैतोवा
केसाथिहीजैहूं॥जोतेंमनुष्
केदेहमेंजितनोरोमहै॥इतनेब
र्षस्वर्गभोगकरें॥जोसहगामनी
होय॥अरुजैसोसपहैरोमंत्रके
जोरतेंसापकढै॥तैंनरकतेंस्त्रीपु
रषकोकाढे॥यहशुनिबर्ड्॥उ
कसहितघाटमूडकरलैनाचनल
गो॥तातेंकहतहैं॥मूर्षभक्तीस्त्र
तिकीयेप्रसनहोइ॥राजाहंसकह
तोआगेंकैसीभई॥तबबगुलाक
हीउनिराजाजैसीइस्तीपूजाहोइ
तैसीकरिबिदाकीनी॥पाछेंसूवा
आवतुहै॥यहजानिजैसीबूझि
तैसीकरो॥

कही राजा यह बगुला औरहू देस जायकरि राजाको जथासक्तिका र्य करिआयो राजा दुष्टको स्वभा व यह जो दिनकाजऊ कलह उप जावै राजा कही जो भयो ताकौ कौं न पछितावो अब आगे बू कियेसा कर तब मंत्री कही राजा एकां तकहि है जातें लेषके आकारतें बो लिवेतें नेत्रमुषकी सेनतें चतु र होइ सो मनकी बात जानें तातें एकांतही में मंत्र जानि करिये तब राजा अरु मंत्री दोऊ रहे और सब बिदा कीये तब चक्रवाक कही राज मैं जांनी या काहू को कहे कार्ज क रिआयो जातें बैद्य रोगी ही चाहै अधिकारी गऊ रको बिग्रह ताचा है राजा सूरसे वक चाहै तब राजा कही हे ऊ याको कारन बिचार हिंगे

अबजोकीयोचाहियैशोकहै॥मंत्रीकही
ठोकेजासूसपठाईये॥उनकोकटकओर
बिचारजांनिआवै॥जोतेंअपनेअस्रो
रकेदेसकोब्योहारजांनिबेकूंजासूसने
वेहै॥जाकेजासूसनांहीसोआंधरोहै॥
जातेजासूसरूयेकूपठौतीजावोवृदउ
सांहीरहै॥याकेसाथिसवककहिजे॥जा
तेंयहकहीहै॥तीर्थआश्रमदेवालै॥सास्र
कविपरतछिकरि॥तपसीसंन्यासीकोभे
षकीयेसबसमाचारजांने॥तबमंत्रीकहै
ब गुलापगाडजे॥वाकेबालअस्त्रीइहांआ
निराषिजे॥राजायहबातगुप्तराषिये॥
जोमंत्रश्रौछकांनमेजायतोफूटै॥तोस
माधाननहोइ॥राजाबिचारकहै॥पाये
नीकोजासूस॥मंत्रीकहीतौउमसोंसंग्राम
जीत्यो॥इहिबीचिपोलियैआयकही॥
राजाजंबूदीपतेंसूवाआयोपौरेठाढोहै॥
राजाचक्रवाककोमुष

कही राजायहबगुलाऔरऊदेस
जायकरि राजाकोजथासक्तिका
र्यकरिआयो राजाउष्टकोस्वभा
वमहजोहिनकाजऊकलहउप
जावे राजाकहीजोऐयोताकोकों
नपछितावो अबआगेबूझियेसो
कर तबमंत्रीकही राजाएकां
तकहिहे जातेंलेषकेआकारतेंबो
लिवेतें नेत्रमुषकीसेनतें चे
ष्टासोमनकीबातजाने तातें
एकांतहीमेंमंत्रजानिकरिये तब
राजाअरुमंत्रीदोऊरहे औरसब
निदाकीये तबचक्रवाकहीराजा
मेजांनीयाकाऊकोकहेकार्जक
रिआयो जातेंबेद्यरोगीहीचाहे
अधिकारीबाऊरकोबिग्रहताचा
हे राजासूरसेंवकचाहे तबराजा
कही हेतयाकोकारनबिचारहि

अब जो कोये चाहिये सो कहो॥ मंत्री कही
ऐके जासूस पठाईये॥ उनकों कटक और
बिचार जांनि आवे॥ जातें अपने अरु औ
रके देसको ब्योहार जांनि बेकें जासूस ने
त्रे हो॥ जाके जासूस नांही सो आंधरो है॥
जातें जासूस हये कुपगों तीजा वो॥ उदग
हांहोर है॥ याके साथि सब कहि है जो॥ जा
तें यह कही है॥ तो पे आश्रम देवाले॥ सास्त्र
क्रिपरत छिकरि॥ तपसी संन्यासी कों भे
ष कीये सब समाचार जांने॥ तब मंत्री कह्
ग्रगुलाप ठाइ जो॥ वाके बाल अरु बौहरहां आ
निराषिने॥ राजा यह बात गुप्त राषिये॥
जो मंत्र औ छिकांन मे जाय तो फूटे तो स
माधान न होइ॥ राजा बिचार कह्यो॥ पायो
नो को जासूस॥ मंत्री कही तो उमसों संग्राम
जो सो॥ इदि बी चिपो लियो आय कह्यो॥
राजा जंबूदीप ने स्वा आयो दोरे गढ़ो है॥

चक्रबाककहौ ॥ फरदषानेमैंडेरा
देऊ ॥ पीछैंराजाकौंमिलावहिंगेय
हसुनिपोलिग्रागयौ ॥ तबराजाक
ही ॥ बिग्रहतौउपज्यौ ॥ तौऊबिनबि
चारैंमाहसबिग्रहनकरियै ॥ जातै
पहलेंहीयुधकरनकहै ॥ केनमिछा
डनकहैसोकाहेकौमंत्री ॥ मंत्रकौं
जानिकरिजीतिबेकौजतनकरै ॥ जा
तेयुधमैंसंदेहहै ॥ जोतौसंग्राममैंऔ
रकौंसामर्थनदेषै तौतौंमबेसूर
कहावै ॥ तातेंवाकौंबिरजाभिसंग्रा
मकरियै ॥ समैजांनिजोजतनक
रियेशोकाहनपाइसिद्धहोई ॥ जैसें
बर्षाकालमैंबोयोधानसमैंपाइ
फलै ॥ अरुमहंतकेयेगुणहैंइर
हीतेंडराइनीरैंग्रायेसूरताकरै
ब्यपतिमैंधीर्यकरैं ॥ सर्वकार्जसि
धिउतावलीकीयेनहोइ ॥ ग्रतिउ

डि पाणी है तौ कहा पर्वत फोरि है
राजा विसेष तें चित्रबर्न महा बली
है। तातें बली सों युध करियें सो।
जो गिनाहीं॥ जैसें पयादौ हाथी ल
तकरि मारै तौ कहा मास्यौ जा शत्रु
से में बिन जांनें युध करै सो मूर्ष॥
बली सों युध करियें तें सं चींटी के
पाष मरण कौं आवे॥ अरु जो यु
ध कौ समौ न होइ तौ कछूवा कौ
सो संकोच करि रहै समय पाइ सा
सकौ सो फन काढै यह नीति है जो
छोटौ कहा है उपाव जांनै तौ बडे
सत्रुकौं मारै जैसें नदी को प्रवाह
बडे रूष कौं गिरावै॥ अरु वसू वा
ता लोरा चियें जो लोंग ढमा जियें।
जातें कोट परकौ एक जो धजोध
कौ मारै॥ जा देस में गढ नांही तु
देस में प्रजा रहि न सकौ।

टा तातें बंधक गंभीर ॥ बहुत भांति जंत्र मांहि राषिये ॥ आगें बनराषिये ॥ अंन रस ई धन्न राषिये ॥ तब राजा कही गढ सुधारिबे कों कह करिये ॥ मंत्री कही जो जिहका नाइक होइ ताकों तैसो काम सौंपिये ॥ जो काम देषो न होइ सु पंडितहु के कहे तें न होइ ॥ तातें सारस बुलाइयो ॥ आगें सारस आयो देषि राजा कही सारस तुम को न गढ चिंता रहु ॥ तब जुहार करि कही राजा गढ तौ ये है बहुतनी कौ चितारयो है याके माफ टापू में सब संचे करिये ॥ जातें अन्न को संचो सब संचे ते बडो है सोनौं रूपो मुख में लैते प्रान न रहें अन्न ही तें पे रहें ॥ और लोंन बडो रस है जो बिन सब विंजन गो बर से लागें ॥ राजा कही बेगि संचो करो इहबी

तपो लिया आय कही। राजा सिं
घलदीय येक काग आयो है। राज
के पाव देषन चाहत है। राजा कही
काग सब जानें॥ फर लो देषो। वा कों
राषिये॥ तब मंत्री कही तो जली
पे काग थल कों पछी है। सह मा
रो सत्र कों सहाइ है। पर न राषि
आगे जो आपनौं पछि छोडि औ
र कौं राषे सो मरे॥ जैसें नील रंग्यो
स्यार मार्यो॥ राजा कही यह कै
सी कथा है। मंत्री कहत है। येक
समे येक स्यार गाव के निकटि
फिरत॥ नील के माट में पर्यो॥
निकसि न सक्यो। वे आप को (
मूवो जनाइ परि रही। तब नीलगं
र आइ माट ते काढि बाहरि ना
रि आयो॥ तब उहां तें भागि ब
न में गयो॥ आपनौं रंग दे

चारनलाग्यो। अबमेरौरंगभलो भयोहै। तातैंजुबभाईहोइसो करौं। इयविचारिसबस्यारबु लाई। कह्यौआजबनदेवतामो कोंअपनेहाथिसबैओषधीनक रिअभिषेकरिमोकोंराज्यति लकदीयोहै। तातैंआजुतेयाब नमेंमेरीआग्यामानिरहो। स्या रसबवाकौनयौरंगदेषिडंडवत करिबोल्यो। जैसैंराजाकीआग्या तैसैंहीकरहिंगे। तबआपनीग्या तिकौआदरपाइ। औरहूबनके पशुनसौंबेसियाकहीसकोरा जानयोहै। तबबाघसिंघरीछसे वकपाइकैं। स्यारमारिषेदै। तब सबस्यारदुषीदेषिएकबूढेस्या रकही। तुमदुषमतिकरौ। यहनी तिनाहीजानत। हमयाकौक

मिजानतहैं॥ हमारीइनअवग्या
करी॥ तातैंथोरीही दिनमैंनासक
रिहैं॥जातैंवेसबनिजानेसेवाकर
तहैं॥जैसोवाकोस्यारकरिजानैंतै
सेकरिहौ॥जाइनिकटहोइसब
मिलिसाझकौंपुकारौ॥तबहमा
रोसब्दसुनिस्वभावहीवोऊपुकारि
है॥जोजाकोस्वभावहैसोछाडिन
सकै॥जैसेंकूररराज्यवैठारियैतौ
ऊपनहीचाबिबौनछाडै॥यहसुनि
नेरैंजाइ॥सबमिलिपुकारे॥वह
उकारिसुगा॥तबवाघजान्योमा
रिडारयौ॥तातैंहौंकहतहैं बिना
जानैंपरायौनराषियै॥राजाकही
जदपिऐसीयहै॥तौऊदूरदेसतै
आयोहै॥बुलाइदेषियै॥जोराषि
बलाइकहोगोतोराषहिंगे॥तब
चक्रवाककही

उमे ॥ जा सूसन्नेउन्यो ॥ अब सूवा
की बातें सुनें बिदा करो ॥ अरु
आपनें लोग सब बुलाइ बेग रि
ये ॥ पीछे इत बुलाइये ॥ जातें चा
नक मंत्री इत दीसें नंद नाम राजा
मरायो ॥ तातें अकेलें वे गिइ तन बु
लाइये ॥ सूवा ही कें साथि काग बु
लाइये ॥ पीछें सनापे के त्र करि
सूवा काग बुलाये ॥ सूवा आइ मा
थ नाइ कह्यो ॥ अहो हिरंन्यगर्भ
राजा चित्रबर्न राजा तुम सों यह
आग्या दीनी है ॥ जो प्राण अरु रा
ज्य राख्यो चाहो ॥ तो बेगि आइ हमा
रें पाइनु परे ॥ नातर आपकों गेरक
रहु ॥ तब राजा कह्यो क्रोध करि कह्यो
हमारे हरे कों कुजया गढ को बरजे
यह सुनि मेघबर्न नाम कह्यो राजा मो

कोंआगपादैहतौयातृष्टकोमारोत
बचक्रवाकराजासों अरुकागसोंक
ही॥सभाक्षनकरौलागे॥सोसभानां
हीजहांबृटोनबैठे॥तिबूटेनाहीतेध
रमनकरहि॥सोधर्मनांहीजहांसत्य
नहोइ॥सोसत्यनाहीजहांकपट
होइ॥जातेंधर्मेंइहैजोबसीठमले
छोहोइतऊनमारिये॥बसीठराजाको
मुषहै॥जोकोऊमारिबेकोंमत्ते
गइ॥तोकछूकहनबोले॥अरुइतेके
कहैंआपनीहीनता॥अरुपरायोब
डपनजोमानेंसोमूर्ष॥तातेंकहम
रनोनांही॥वहसबकहे॥यहसुनिरा
जाक्रोधछाडौ॥तबसुवाउडिचल्यो॥
चक्रवाकसूवामनाइआनि॥सोंनके
अलंकारदेविदाकीयो॥तबसूवाउ
जाइअपनेराजासोंजुहारकीयो॥चि
त्रबर्नपूछीसुकतहांकीवा

सी ॥ अरु वृहदंसकैसो ॥ तबसूवाक
ही राजापहलैंहीयहजुधकरियेकपू
रदीपस्वर्गलोकहै ॥ हमसोंवरनीनजा
य ॥ तबराजारा मंत्रीबुलाईमंत्रकर
नलागो ॥ राजामंत्रीनसोंनकहीसूवा
कहतहैसेयामकरिये ॥ अैसेसमे
मंत्रबूझियेसोकहो ॥ मेरेजानेंजुधकी
येहीबनें ॥ श्लोक ॥ असंतुष्टा द्विजान
ष्टासंतोषेण महीपति ॥ सलज्जा गणि
का नष्टा निर्लज्जा च कुलांगना ॥ टी०
जातेंब्राह्मण असंतोषीहोइ राजा
संतोषीहोइ बेस्यालज्याकरै कुल
वधूनिलज्जहोइ ए तथोरेहीदिनमैं
नष्टजाय ॥ यहसुनिदूरदरसीनाम
गीधबोल्यो ॥ राजाआपनेमित्रमंत्री
प्रजानजीकहोहै ॥ सत्रुकेमंत्रीमित्र
प्रजाविरुधहोइ ॥ तोजुधकरिये ॥ अ
रुभूमिमित्रद्रव्यपावतजांनियेतो

युधकरिये॥जातेंजुधकेरो तीनफलहैं॥
राजाकह्यो हमारेलोकनजहषानेंको
है॥किकार्जकोहै॥तोज्योतिषीबुलावो
वेगियात्राकोंनीकोलग्नदेख्यातबमं
त्रीकह्यौराजाअबहीबेगिजात्रानकू
क्रिये॥जोसत्रुकोबलजानेंबिनाबा
कीभूमिमेंजाइतौमायोजाइ॥राजाक
हीमंत्रीमेरेउछाहकोमनभंगमति
करो॥जोपराईभूमिलयोचाहैताको
उपावकहो॥तबगीधकहीराजाक
हेयेबिनकीयेनहोइ॥राजाकोंमंत्री
कीयेंकहासिधिजोउपायनकरिये
जैसेंओषधकोजानेंहीरोगनजाय:
बायेंपैंनजाइ॥तोकराजकीआग्यान
मटिये॥तातेंहोंकहउहों॥राजासुन
ऊ॥जहांपर्वतहोइबनहोइनदी
होइ॥अरुजहांडरकोठोरहोइ॥तहं
सेनापतिकटकरेकठोर — रिच्चे

नी
येकसेनापतिचलेंचलैंसूरआगैंच
लें माफमहलगाकैरभंडारकौलो
गचलै अरुब्योपारीचलै इनकीउ
हैंकौतिपयादेचलैं पाछेयेकऔर
सेनापतिथाकेजनकीषबरिलेतच
लें राजाचलेचलेजोधान्हसहितमा
फचलें सबकीरछ्याकरत जहांपर्ब
तपानीविषमभूमिहोइ तहांहाथी
चलिये बराबरिभूमिमेंघोराचढि
चलिये पानीमेंनावचढिचलिये
पयादेसबगेरचाहिये बरषामेंहा
थीनावकोबलु औरसमेंघोरापया
दकौबलुसदाकरिये विषमभूमि
मेंविषमपेडमेंजोधाराजाकीरछ्याक
रे राजाआपनकुजोगेश्वरकीनिश
औरभूषकरे अरुबनवासीअरुप
र्बतबासीलोगनआगेकीजे जहांराजा
चलेतहांभंडारमाफचलै भंडार

बिनाप्रभुतानाही।।नलेनलेजोधाने
कोंद्र बिदीजे।।दीयेकोननबूझे।जाते
मनुष्यमनुष्यकोसेवकथनहीकेहो
तहे।।मनुष्यद्रव्यहीतैंबडोरछोटोस
त्रुकोंछेकिरहियेदिसलूटिषाइये
सत्रुकोत्रिणअंनइधनमारिलीजे।त
लावफोरिये।।कोटढाहिये।।कूपकपू
रिये।।सबतैंबडोबलहाथीकोजाके
अंगमेंआठआयुधहैं।।चारिपावदोइ
दंतएकसुंडिरिकनछुनं।।अरुकट
ककोंचलेतेकोटहैं।।अरुथोराजा
केभूमिताहीकीजेघोरैनिढियुधक
रतहै।।ताहिदेवतानीतिनसकोंअ
रुकितीकोहरिसवैहैं।।वाकेहाथही
मेहै।।पहलेजोधाआपनीसेनाकोर
ष्याकेरा।।पेडोदिसापयादेनकरिकै
जोंनिये।।स्वनावहीतेमूरजुधजानें।।
स्वामीतेउदासनहोइ।।अमजीतेंहोय

प्रसिद्धहोइ। रजपूतबकतहोइ जा
कीऐसीसेनाहोइ। ताकीजयहोइ
अरुजैसेंगऊकरकेप्रियबचनसों
जोधालरै। तैसेंबकतदीयेंकुलल
रें। जिहकटकमेंजोद्रव्यकरि
सुषीहोइ। ताहिकोउजीतिनसके
गनतीकेबकतनयेहैंकहा वेयु
ह्लेहींनाजें। वाकोंदेषैनलेंभा
जें। जबकाजकरिआवेतबजोष
सादनकीज्येवहदीवैकोंवहराई
ये। गुणनमानेंतोसेवकउदासहो
य। अरुजोराजासत्रकोंजीत्योचा
हेतौथोराथोराचलेंज्योंकटकदु
षीनहोइ। बकतचलेंतोदुषीभयों
सत्रुसुषीहीमारें। सत्रकेभाईबंधु
फोरिआपनेंकरियहिंपीछेंराजाके
मंत्रीबैरासोंनेंदृगपराजियें। जिहतैंरा
जाकेचितउदेगहोय। अरुजासत्रुसकेमं

त्रकैबलसत्रुकौमनभंगकरिये
अथवागोरूहरिये॥उनहिछिडा
इबेकोंप्रधानआवेताहिबाधिये
सत्रुकोदेसउजारियेआपनोबसा
ये॥ अथवाआपनोईकोराषिये॥
जातैबसायहीतेंदामउपज्यो॥राजा
कहीबऊतकहाजातेंआपनोंउ
दैहोइ॥सत्रुकीहानिहोइसोईक
रिये॥यहैनीतिसास्त्रकोपैडो॥नि
नआपनीउमगाउमगमेसास्त्रबि
चारियेतोनमिलै॥तबजोतिषीके
कीयेलगनमेंजात्राकीनी॥तबहरु
जाइहिरंन्यगर्भसोंकही॥राजाचि
त्रबर्नेनीरैंआयो॥मलयपर्वतकै
हैवडीरादीन्हें॥गढकीरषाक
रो॥जातैंवाकोंगीधबडोमंत्रीहै
मैवाकीबातनिहीजान्यो॥ ति॰

हमारे गढ मैं आपनो कोऊ दुष्ट पठ
यो है । चक्रवाक राजा याको गवा
ही को है । राजा कही यह न होइ ।
औ वाको पठयो होतो सूवा को म
हल ही आयो । मंत्री कही तो ऊनये
तेड राये । राजा कही को ऊनयो उप
कार करत है । देषु औरो जो हित क
रे तो बंधु जानिये । बंधु जो अहित होइ
तो सत्रु जानिये । जैसे आपने देह तें
उपजी ब्याधि सत्रु है । बन की औषदि
हित है । सुद्रक नाम राजा । ताके बी
र बर सेवक ऊतो । तिनि प्यारे ही दिन
में राजा के काज को आपने पुत्र को
मार्यो काटि दीये । मंत्री बूझी यह कै
सी कथा है । राजा कहतु है । मैं पहलें
सूद्रक नाम राजा के क्रीडा के सरोव
र मैं कर्पूरकेलि नाम राजहंस ता

कीकर्पूरमंजरीनामबेटी॥तासेंहों
आसक्तभये॥ तहांयेकवीरबरना
मराजपूत॥आइराजाकेंद्वारिठाड़ो
होइ॥पोलियासोंकही॥हौंचाकरी
कोंआयोहों॥मोहिराजाकोंमिला
उ॥तबराजाकोंमिलाइकें॥यहक
ही॥राजाहमसेसेवककोंकायेंही
इतोबर्त्तनदेराषिये॥राजाकहीतेरे
बर्त्तनकितने॥तबउनिकहीपांच
सेपलसोंनोंपावतोरहे॥राजाकही
तेरोजोराकितनोहै॥ उनिकहीदो
इहाथअरुयेकषाडे॥राजाकही
हमसोंनदीयोजाय॥यहसुनिबीरब
रजुहारकरिचल्यो॥ तबमंत्रीकही
ऐसीनकीजिये॥राजाचारिदिनकों
वर्त्तनदेराषिये॥इतनेंलाईकरैकि
नांही॥ तबमंत्रीकेकहेंराजापान
दे वाकोंष्यो॥वाकोऐ

तैनदीयो। राजाजासूमपगयो देषौ
इतनोसोनैकहाकरै तबबीरडेराजा
य: आधोसोनैदेवब्राह्मणकोंदीयो
चोथोहिसोकंगालकोंदयो। येकहि
सोंआपणेंघरषरच्यो। इहभांतिनि
त्यहीराजद्वारिठाढोरहै। तबराजाआ
ग्यादेइतबघडीघडीएकघरिजां
इ एकसमैंअंधियारीचौदसिकीआ
धीरातिकरुणासहितएकस्त्रीराजा
सुंनी। तबराजाबोल्यो हैकोऊदरबा
रि। तबउनिकहीराजाहोंबीरबरहों
राजाकहीदेषिआवकोंनरोवतहै जो
राजाकीआग्यायहकहिचल्यो तब
राजाकहीयहनबूझिये। जोऐसीअं
धियारीरात्तिमेंरजपूतअकेलाजाइ
मेंऊंयाकोंपाछेंजांउ देषोंधौंयहक
हाकरै। तबराजाषांडोलेवाकेपीछैं
चल्यो। बीरबरउहांजाइकेरूपजो

बनसंपूर्ण॥वस्त्रअलंकारयहरें येक
स्त्रीरोवतदेषी॥ तबपूछी तूकौनहे
हि॥तुनिकहीहोंयाराजाकीस्त्रीलछि
मीहों॥ बहुतदिनयाराजाकेआसि
रेरही॥ अबमेंयाहिछाडिहों॥तातें
अहतैरोवतिहों॥तबवीरकहीकों
नेंकूभांति तेरोरहिबौहोईजी॥तुनि
कहीयेकभांतिरहों॥जोतूंसक्तिबर
आपनेंबेटाकोंआपनेंहाथिमारि
सबमंगलादेवीकोंदेहि॥तोमेंबहु
तकालरहों॥यहकहिलोपभई॥त
बवीरघरजायदोऊजगाये॥लछि
मीकोबचनसबकह्यो॥यहसुनि
सक्तिबरआनंदसोंबोल्यो॥धन्यहों
जोमोतेराजाकीरक्षाहोइ॥तोपिता
बिलंबकाहेकरतहो॥तबकुंजो
यहऐसेंकाजआवतोनताहे॥
जातेंधनअरुप्राणपंडितहोइसो

पराए कार्य कों देह ऐक दिना नामें
है। तब सक्तिबरकी माता बोली
जो तुम इतनो कार जतन करउगे तो
इतनो बर्त्तन पाएके रिगतें कें मेंछु
टउगे॥ यह बिचार करि सब देवीके
मंडफ में गये॥ महादेवकी पूजा क
रि॥ पर कही देवी राजा सूद्र कें कों
बिजय होउ॥ राज लक्ष्मी स्थिर होइ
तुम जो बलि मांगो सो लेउ॥ यह क
हि सक्तिबर को माथो काट्यो॥ तब
बीरबर बिचारी॥ राजा के वर्त्तन के
रिगतें तो छूटो॥ अब पुत्र बिना जीव
वन युक्त नाही॥ यह बिचारि आपनों
मूड काटो॥ तब स्वांमी को अरु पुत्र
को साका जानि स्त्री पुनि गरो काटि
मुई॥ आगें राजा यह देषि बिचारत
भयो॥ हम सारिषे जीव बहुत उप
जत है॥ अरु मरत है॥ परिया रज पू

तमारिषेभयेनहोइहै॥यहबिचा
रिराजाकूंआपनोमुडकाटिबेको
षाडालयो॥तबदेवीहाथपकस्यो
कह्योपुत्रऐसोसाहसमतिकर
हि॥अबतेरेराज्यकोभंगनाही॥त
बराजाअष्टांगडंडवतकरिकह्यो
देवीजेमोबिषेंदयाहेंयेतीम्यो
मरीआपुरींतंजीवो॥मेरोजोलि
ष्योहैसोहोइहै॥तबदेवीकह्या
सेवकपरतेरोऐसेहदेषिहोंषुसी।
भई॥जाकूबिजयहोभयेतीम्योंजी
वऊ॥तबबीरबरभठिआपनेपु
त्रपुत्रीसहितघरगये॥राजाबि
नहीजनायेंआपनेंमहलजायसो
रस्यो॥प्रातभयेवीरबरआयद्वा
रेंगढोभयो॥तबराजाबुलाइ
पूछ्यो॥वीरबरतूकहादेषिआयो
तबउंनिकहीराजाएकस्त्रीरो 1

वतकती॥ मोहिदेखिछपिगई॥
औरवाकूबातनाही॥ वाकोबच
नसुनिराजासंतोषपाय विचारत
भयो॥ यहबडोमहापुरषहै॥ बडो
सूरहै॥ याकीस्तुतिनकरीजाय
जातेंदयावंतहोइ॥ प्रियबचनकहै
सूरहोइ॥ अपनीबडाईनकरै॥ दाता
होइ॥ निठुरबचननकहै॥ यहमहा
तकोलक्षणहै॥ येसबातेंसबयामें
हैं॥ आगेंबातहोइ॥ साधुन्हकीसभा
महि॥ बीरबरकीवातरातिकीसब
कही॥ प्रसंनहोइकणाटकोराज्य
दीयो॥ तातेंनयाआयोहोइ॥ ताको
काबुरोहीनकहिये॥ नएकमेंउ
त्तममध्यमअधमहैं॥ तबचक्रव
र्तीकही॥ औरकोंदेखिआपनेंम
नमेंअैसीनधरिये॥ जैसेंछत्रीको

दयापायौदेषिनाकु मास्यौ गयौ राजा कहीयह कैसी कथाहै। मंत्री कहतहै।।श्रजौ ध्याभैं चूडामनि। नाम छत्रीरहै।।तनि धनपाइबेकुं बडौ करि महादेवकी पूजा कीनी।।जबपापक्षयभये।। तबश्रीमहादेवजी की श्राग्यापाइकैं कुबेरश्रुपनें दियौ।।तूश्राजप्रातही। छौरकरबाइ।। हाथलाठीलेमारे छिपिर हिय हि।।तबजौभिक्षुक श्रावे ताहि मारियहि।। तबसन्यासीसानें कौमस्यौ घटुहोइहै।।लै बहुत काल विद्रवकगौ।।तनिप्रातभयेसोई कीयौ।।वौसोईं भयौ।।यह देषि जिनिनाईछौरकीयौहे।।तिनबिचास्यो निधिपाइबेकौं तो यौरौ होन पाइहै।।यहजानि नांऊपुनि छौरकराइ।।लाठीलेघारे ॥

संन्यासी भिख्या कौं आयो ॥ ता दिषैं चि
त्राठी मार्‍यौ ॥ संन्यासी मुवौ ॥ यह दे
षि राजा के सेवक नि नाई मारि डा
रो ॥ ता तैं और की बात देषि बिनु जा
नैं आप कछु न करिये ॥ तब रा
जा कही पाछिली बात न करि कौं
नु जांनैं भलो है कि बुरो है ॥ अब
यह बात रहै ॥ जो अब करनौ होइ
सो कहौ ॥ मलयपर्वत के दुर्गचि
त्रबर्न कौ डेरो पर्‍यो है ॥ अब कहा
करिये ॥ राजा सेंऊं जासूस सेंपु
न्यो है ॥ जो बडो मंत्री गीध ता कैं
कह्यौ उ निन मांन्यो ॥ ता तैं हम मू
र्ष कौं जीत हिंग ॥ जातैं लोभी क्रूर
आलसी कृतग्न प्रमाद ध्यान कातर
मूरष अधीर ॥ जो ध्यान कौ आदर
न करै ॥ ऐसे सत्रु सुषहीं मारियै है
ता तैं जौ लौं वह गढ न छेकै ॥ तौ लौं

उनहिंमारिबेकोंनदीकेघाटपर्व
तकेघाटपोकसेनापतिपठाई
ये॥ जातेंयहकहीहै॥इरंतरते
चलियाकोहोइ॥बडीआगिहो
इडस्योहोइ॥भूषप्यासकरिदु
षितहोय॥असावधानहोइजे
वतहोइ॥व्याधिकरिदुःषित्वक
रिपीडितहोइ॥फूटपर्योहोइ॥
थाकोहोइ॥ बर्षतहोई॥आधीमें
होइ॥कादोंधूरिपानीकरिव्या
प्तहोइ॥चोरनिकरिदुषितहोइ
असोसमोजांनिकरिमारिये॥
अरुडाकेकेडरतेंरातिजागेहो
इ॥अमतेंदिनसोवतहोइतो।
दोरिमारिये॥तातेंहमारेजोबस
मेंपाइजाइमारो॥असीभांतिचि
त्रबर्नकोकटकबहुतमार्यो
तबचित्रबर्नसचिं॥

कही॥ बाबाजी हमारी सेना की रक्षा का हेन करत है॥ कहा मेरौ अप राध है॥ देषौ जातैं राज पाइ॥ मंत्री कौं अनादर करे॥ गर्ब लछमी कौ नास करे॥ बुढाई रूप कौं नास करै॥ चाकर होइ सो लछमी पावै॥ थोरो षाइ सो आरोगिता पावै॥ आरोगि होइ सो सुष पावै॥ अभ्यास तें बिद्या पावै॥ बिजय तें धर्म अर्थ जस पावै॥ तब गीधबोले॥ राजा जो मूर्ष होइ सो पंडित के संसर्ग तें बडाई पावै॥ जैसें नदी के तीर को रूष हरौ रहै॥ अरु मदिरा पान की असक्ती आसक्ति तें सिकार जूवा॥ अनीति को द्रव्य॥ अमार्ग कौ षर्च॥ कठिन बचन बडो दंड राजा के दूषण है॥ अरु राजा के माह सेवक॥ उपाय कौ

आदनिकरे॥सोसंपदाकोंनपावे
जातेंनयायअरुसोहसकुंमेंलछि
मीबसतिहैतुमअपनेकटकके
गबतेंमेरोकह्योनकीयो॥अरु।
मोसौंबुरोबोले॥वाअनीतितेयह
फलहोतहे॥जोराजाकीनीतिचु
कैतोदोषहोइ॥जेअपथ्यकरैतौ
रोगीहोइमरे॥लछिमीतेंगर्बहोइ
मृत्यकोंनकोंनमारे॥स्त्रीकोंनकों
नसंतापकरे॥तातेंमेंकुंबिचारी
बुधिहीनहैनातरमेरीकहीनीति
कोंहरिकरे॥तातेंजाकोंअपनी
बुधिनहीं॥ताकोंसास्त्रकहाकरे॥
जाकोंआंषिनहीं ताकोंआरसीक
हाकरे॥तातेंमेंकुंचुपकरिरहो॥
तबराजाहाथजोरिकही॥बाबा
हेतोमेरोअपराध॥अबजोनब
च्योहेसोलेघरजांऊं॥सोकरकुंगी

धकरी अबहीमनमें उपाव करती हो। जातैदेवतासौं गुरसौं राजासौं ब्राह्मणसौं। बालकसौं वधमैंरा गीसौं गुर्विनसीसौं इर्बलसौं कोधनकरिये उपज्यौ होइ तौ षमाइ जो। तबहसिकैं राजासौं कह्यौ। राजाजि निर्डरह्ल। समाधानधीजेक रह्ल। मंत्रीनकीबुधितवजांनिये तबबिगरेपरमवारें। बैद्यसोजा नियेजेसंनिपातमैंसवारें। सुष्यमें सबैपंडित। अरु अज्ञानी थोरेही मैं अकुलाइ। बडेहैतेधीजेकरि बडोकाजे आरंभहि। जातैतेरही यतापकरिबगीडीगढतोरिकी र्तिपताप करिकटकमहितती हिपरलैजौहै। राजाकही अब थोरेहीकेटकगढकौतोरङ्गे गीधकरीसबहोइहै। जोजीत्यो

चाहेसो बिलंबनकरै॥तातें आ
जुहीजाय गटछे किये॥यहसुनि
बगुला हंससोंकही॥चित्रबर्न
योरही कटस्पे गीधकेकहेआ
जुगटछेकोचाहतहैं॥तबराज
हंसकही अबकहाकरिये॥आ
पनेकटकमें बिचारङ॥कोनल
हे॥तोयहजांनिकेंजाकोंजोहो
इ॥सोंनोंघोडाकपडादीज्यौयह
बातकहीहो॥जोराजाएकोंकों
डीआमारगिपरचेसेलोलाषटका
करिजानें॥समयपाइकोटिऊ
मरचतनसकुचे॥तोराजाकोंल
छिमीनछाडे॥अरुजंहांबिग्रा
हआपदासत्रुमारिबेकों॥सुज
सकोंमित्रकरिबेकों॥प्रियस्त्री
कों॥दरिद्रीभाईबंधकोंइतनी

गोरद्रव्यसुषसोंषरचिये। मूर्षथे
रु षरचकैंडर। सबनसांवे। श्रे
सोकौनहैजोजगातिकोडरगव
रीछाड़े। राजाकहीऐसेसमैंत्र
नित्यागवूकिये। जातेंआपदा
हीलछिमीजोरिमाई। मंत्रीकहै
तोराष्यो। तधनजाइ। तातेंदान
मांनकरिजोधाकोसमाधानक
रिये। जातेंयहकहीहैजोआपनो
परायोजांनै। तछाहीहोय। प्राणछा
डिबेकोनिश्चौराषेकुलीनहोइ
राजाकरिबढायोहोइ। औसोजो
धासत्रकोमारि। राजाकीजयक
रहि। असनीकेपोष्योहोहि सील
करियुक्तहोहि। एकमतहोहि
जुधकोनिश्चता। सत्य। दया। त्यागु
एराजाकेबडेगुनहहि। जौयेगुण

राजातैंनहोंहि।तौलोकपौअय
ज संकरै।राजामंत्रीनकौबडाईस
वैथाकरै।जोजाकौसौप्योहोइ
ताकेभलेंभलाहोई।ताकेंबुरेबु
राहोय।यहजानिजोअप्रतीतीहो
ई।ताकौंप्राणअरधनसौंपियै।अ
रुजाकैंश्रीरबालकपुत्र।मंत्री
होंहिजाकोंराज्यनरहै।जाकेंआ
नंदकौधनहोइ।अरुसेवककौं
दुषसुषनजांनै।ताकौंपृथीधनन
बधे।जिनमंत्रीनभलौबुरोराजा
केसाथिहै।असेमंत्रीकौंराजा
आनंदसौंराषे।जातैंमदकौआ
धरोराजाअयकाजसमुद्रमेंबू
डतमंत्रीअवलंबनुहै।आगैंमेघ
वर्ननामकागजोहै

रकरिराजा सों बोल्यो॥ राज दृष्टि
कौ प्रसाद करउ॥ जुधकरिबेकौं
सत्रु गढ़ के द्वार आयो है॥ जो आ
ग्या पाउं तौ बाहरि निकसि आप
नौं पराक्रम दिषाऊं॥ तौ राजा के
लौंन तैं उरनि होउं॥ तब मंत्री का
ही ऐसी मति करहि जो बाहरि नि
कसिलरियै तौ गढ़ काहे कौं की
यो॥ जैसें नाकउ जल तैं निकस्या कौ
नकउं काज कौं नांही॥ तातें गढ़ तैं
न निकसियै॥ राजा आपु ही जाय
युध देषै॥ जो राजा गढ़ो होइ देषै
तो कातर फुनि सिंघ समान लरै
तब गढ़ के द्वार जाइ बड़ौ युद्ध की
यो॥ तब चित्र वर्न दूसरे दिन गी
धसों कही॥ बाबाजो प्रतंग्या की

नीताको निर्बाहकरो॥ तबगी
धकहीगताइलोहोइ॥ घोरजो
म्हाहैहि॥ राजा मूर्षहोहि॥ असि
व्यसनीहोइ जोधाकायरहोहि
तोगटटूटै॥ यामहियेकोनाही
तातेंगटकेलोगनिसोनेहउप
राजिये॥ बकुतेकालछेकेरहिये
अंनपांनीको निराधनकीजेसब
मिलिसाहसकीजे तोगटपाई
ये॥ तेजैसाबलुहे तैसाजतनकी
ज्ये॥ मंत्रीकानमोकही॥ हमारे
कागभीतरिहोसोकाजकरिहो
तबप्रातकालचारिहृ वारयुध
होतही॥ कागिगावमेंआगिल
गाइकरिपुकारयोगटलीयोला
पेकहिपुकारयो॥ यहसहसुनि
गावकेलोगसबनाजिपांनीमें
पेठे॥ तातेसमयप

तकरिये ॥ नीकौयुद्धकरियेनी
कौपराक्रमकरिये ॥ यहनीति
है ॥ राजाहंमसुषीसुंकुमारदौरि
नसके ॥ तातैंऐकसारसमहित
जाते ॥ चित्रबर्नकेकहकहाश्रा
इछेके ॥ तबहंमकहीसारसतुमे
रेलीयेमतकफहि ॥ तुपराईबेकौ
समर्थहहि ॥ जोइपांनीमैपैठी ॥ हमा
रपुत्रचूडारत्नकेमसस्तकौश्रा
ग्यापाइकरिराजाकहु ॥ तबकही
राजाहमसौंऐसीबातमतकहै
जौलौंचंद्रसूर्यतौलौंतुमकुंसल
रहौ ॥ राजामेरेलोकुमासविछल
तनलौंहूसत्रगढमैपैठिहिं ॥ और
छिमाकरिपुत्र ॥ दातागुणकौ
संग्रहे ॥ ऐसौवाकुंरनपाइये
राजाकहीमक्रूश्ररुनिःकपट
अरुचतुर ॥ औसेसेवगाकुनपाई

ये॥ सारसकु

होइतोमागिये॥

ममैंछा
राजातुमह
रकोंछाडे॥

अस्तहोइ॥

पस्गे॥ तबक
रिजाजरम्नये॥ तब

रुनीतिजोअरुमंत्रीरोईजोबाग्युति
कक्षिरिउडानोंमत्रु॥परबततनकोअस
परजु॥यहितोपदेसमेंबिग्रहना
तीसरोकथानकोसंग्रहसमाप्तन्
ग्रो॥३॥श्रीमहादेवानमः॥शुभंभव
तू॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥आगेबिग्रु
सर्माकह्यो॥विग्रहतोहमकह्यो॥
अबसंधिकोकथाशुनउ॥जाकीयहक
थाहैपहलीकथाहै॥जबउडुराजा
नसोंसंग्रामभयो॥सेनामारी॥उडुबीच
क्रवाकमंत्रीनदोनराजासोंसंधिकर
वाई॥नवराजपुत्रनिकहीयहकैसी
कथाहै॥बिष्णुसरमाकहैउहैउन
राजाहंसचक्रवाकसोंपूछोहंमार
।टमेंआगिकिनलगाईहमारगढ़ी
बासीककोउनकेमिलिलगाई॥किधौं
कोउनकोगढ़मेंरहिकैमिलगाई।
नवचक्रवाककही॥राजातुम्हारासद

पाछेंबहुतकछुकज्ञानभक्तिसारस
मास्यो। तबचित्रबर्नगढमैंपैठि
गढपरकोमालसबलयो। भाट
नकरिस्तुतिकीरतिकटकमैवह
सारसबडोपुन्यात्मा। जोआपना
सरीरमैकरिराजाराष्यो। जातैंग
ढबखराबहुतजनतिहैं। तामैंयु
कपैकोउसमर्थहोइ। तबबिछु
समीबाल्हणकही। यहतौआप
नेंसत्यकरिलिमाहै। अरुयहलोक
मैंआपसरासहितसुषभोगवत
होइहै। यहबातकहीहै। जोसूरस
मामैंठाकुरकेकाजेकोंप्राणछां
डै। तेस्वर्गभोगकरिहैं। अरुसूर
जहांकछुमत्रनकरिमारहोहिं। तेउ
अरुहयलोकपावैं। अपरजौदीनभ
येतौबुरा। अरुराजाकेहाथीघोरघु
यादेनसों। कबहूमनबिग्रहहोत

अरुनीतिजोअरुमंत्रीरईजोबं...
हकरिउडानोमंत्रु॥परबतनके...
रेपरज॥ए हितोपदेसमेंबिग्रह...
मतीसरोकथानकोसंग्रहसमाप्त
यो॥३॥श्रीमहादेवानमः॥...
तु॥श्री॥श्री॥श्री॥श्री॥आगेविग्र
सभीकह्यो॥विग्रहतोहमकह्यो॥
अबसंधिकीकथाअनजानीयक
थाटेपहलीकथाहे॥जबदुअराज
नमेंसंग्रामभयो॥सेनामारी॥...
कबाकमंत्रीनदीकराजासेंसंधि
वाई॥तवराजपुत्रनिकहीयह...
कथाहे॥बिन्नुसरमाकहे...
कैराजाहंसचकवाकसें...
गटमेंआगिकिनलगाई...
वासीककोउनकेभिविद्...
कोउनकोगटमेंग...
तवचक्रवाककही...

जबंधूकागसर्वहीकुटंबसहितना
हींदेषियतु॥ तातेहौंजानतहौंवाह
कौकामहे॥ राजापेकछिनविचारि
कही॥ ऐसीयेबातहे॥ मेरेअभाग्य
तेंयहकहीहे॥ जोबिचारकीयेका
जेनसाय॥ सोमंत्रीकोदोषनाही॥
अपनेंअभाग्यकोदोषहे॥ तबमंत्री
कहीयहऔरहूकहीहे॥ मनुष्यकों
जबआपदापरै॥ तबदैवकोदोष
दोषदेइ॥ आपनीकीनीकीनीअ
नीतिनबिचारै॥ औरजोअपनेहि
तकारी॥ मित्रकोकह्योनशुनै॥ शु
कुबुधिजांनिय॥ कारतेंगिस्योकछ
हाकीसीनाइनष्टजाइ॥ तबराजाक
हीयहकैसीकथाहै॥ चक्रवाकक
हतंहे॥ मगदरदेसमेंयेकपद्मकूलो
त्पलनामसरोवररहे॥ तहांबकृत
कालतेंद्वेहंसरहे॥ तनकोमित्रएक

कछुहारहै॥तहांऐकसमेजीवरस्या
इकही॥आजुइहांवसिसरोवरकी
मछरीकछुहामवमारिहैं॥यहसु
निकछुहाहंससोंकही॥मित्रजीव
रकीबातसुनीअबहौंकहाकरौं॥
हंसकहीअबहीअबहीदेषकेउ
पावबिचारहिंगे॥कछुहाकहीय
हजिनिकहै॥बिचारिबेकौंगेरनां
हीं॥जातेयहकहीहै॥जोआपदा
कैबिनुआयेंउपावकरै॥अथवा
आपदाआयेंहूंउपावकरैतिदो
ऊसुषपावैंहिं॥जोऐसेंकरहैकेहु
होऊ॥कौंनउपावकरैसोनष्टजाइ
ज्योंसरोवरकीमछलीनउपपायौ॥
हंसनकहीयहकैसीकथाहै कछु
हाकहतहै॥पहलेंयासरोवरनें
हीभांतिजबजीवरआयेतबतिन
मछरीमिलिविचारयौ॥ऐकेकै...

नागतबिधाता।तिनकहीहोतीऔर
हीठौरजेहो।इसरीनत्पंनमतिनाम
कही।आगेयहहोइहै।यहबात
कोंनुजांने।जबहोइगोतबउपाव
करहिंगे।यहकहीहैजोउपजीआ
पदाकोंउपायकरैसोवुधिवंतजैसैं
बनियांकीस्त्रीषसमकेंआगेंजारतु
कायो।तीसरीकोनामजदभवषि
उतिपूछीयहकैसीकथाहै।उत्पंनम
तिकहतुहै।बिक्रमपुरमेंसमुद्रदत्त
नामबनियांरहै।वाकीरत्नप्रभास्त्री
अपनेंसेवकसोंरहै।जातेंस्त्रीकेके
छबडोननान्हो।नयेनयेकोंचाहै
जैसेंगाइबनमेंनयेनयेतृणचाहै।
एकदिनवहस्त्रीसेवककेमुषचुं
बनकरतसाहदेषी।तबवहछिनाा
रिषसमकेंआगेंउतायलीआयक
ही।स्वामीयाहसेवकनराषियेइ

नहींगच्चुराइयाउ।मैंपाकौंमुषञ्जनं
हींसृघिरैषो॥वासुञ्जावतिहैयह
श्रुनिसेवकक्रीसायकहीजाकेंघ
रमैंञैसीञ्जीमुषसोघे॥ताघरमेंसे
वकंकेंसंरहे।यहकहिरुसिचाल्यो
तबमाहवाकौंमनाइलायोजोंतें
हेंकहतहोंजबञ्जापदाहारहेत
बनुपावकरिहो॥यहश्रुनिजदनव
पिबोलीजोनावैनाहींसकवडं
नहोइ।जोमावैहैसो बिनानयेनर
हिहैकौंनचिंताकरोतबबिहांन
नयेझीवरजालपसारिदोकुंबांधी॥
उत्पंनमतिमुई॥मुईजोंनिजालतें
काढिभूमिमारी॥तबकुंद्दियेथानी
मेंपरी॥तातेहोंकहतहों॥जोयहलै
उपावकरैसोदुषनपावे॥ तातेकुं
जोञ्जैरसरोवरजावन्यो॥ञ्जरुतो
कुमिलिकरउ॥ उनिकहीयेहमें

तुमकै सो जाई है ॥ जैसे कछुवा क
ही जैसे मैं मै तुम्हारी सा षि स्वाका
स मार्ग चल्यौ जा तु सोई बिचार
ऊ ॥ हंस नि कही कौंन उपाव क
रिये ॥ तब कछुवा कही ॥ तुम एक
लकरी हमने के ति दोऊ जन पक
रौ ॥ बीच तैं हौं पकरि रहुं ॥ तुम लै
उडऊ पानी में मोकों लै राषऊ ॥ हं
स नि कही उपाय तौ नीकौ है ॥ परि
जहां उपाय बिचारिये तहां अपाय ऊ
बिचारिये ॥ जैसें बगुला के देषत ह्वा
वा के बालक न्यौला षाये ॥ कछुवा
कही यह कैसी कथा है ॥ हंस कह
त है ॥ उत्तरपंथ में कावेरी नदी के ती
र ग्रीधवट नाम पर्वत में एक कौ
रूंष है ॥ ता रूंष पर बगुला रहै ॥ ता के
षोडर में सांप रहै ॥ उनि सांप बगुला
नि बालक षाये ॥ वा सों कत्ते बगु

लो निरोव न देखो। येकबूढ़े बगुलाकही
औरतुम यहकरउ। सबमिलिबऊत
मछरी औ निसापके बिलतें न्योराके
बिललों पांतिकरिराखऊ। मछरी
पाबेकलोनतें न्योरासापकोंमारि
हेगो। उनिवैसोई कीयो। तबन्योल
निसापदेषिमार्यो। तबउनिन्येला
रूषपरबगुलाकेबालकहेतिउनेे
सुनिकरिरूषचढिमारे। तातेंहौंक
हतुहो। दोऊ बिचारियहि हमको
तोहिलेजातदेषिपेड़ेमें कोऊहसे
औरकछूकहतहे तबतुमबोलउ
तोगिरिपरऊ। तबमरिहो। तातेंतु
मइहांईरहो। कछुहाकहीकहा
हौंबावरोहांजोबोलिहों। तबउ
हीभांतिलेचले। तबवहिगांतिक
छुहाकोंनरकलरूदेषि। औहोर
मबसंगले

रहतां कछु हाकौ वे पंषी तोये जातहै
जो इहां गिरि परै तौ सूजि षांहि काहकु
हाथ दिलैजांहि ॥ तब उनके उपदेववचन
अनिकै क्रोध करि पंछी बात सुनिकै
कछु हांक हो ॥ उमत्वा टषानं यह कहै
मुषतें तर्कसू भ्रिगि स्यौ ॥ तातें न नग्रहीर
नमारि षायो ॥ जातें हां कहता हो जो मित्र
वचन न आने ॥ ताको बुरो होइ ॥ इह द्विवि
चिजो वगट जा स्यसप ढायो कृतो ॥ तिन
भ्याइ कही ॥ सुगट में ऋषि लनयो कोम
तिराष्यो ॥ ताको फल उत्तम पायो ॥ मेघना
मका गगट जा स्यो ॥ गो धको पढायो ॥ त
वराजा स्या सलेकही ॥ प्रीति तैं उपकार
तें सत्रु को प्रतीति तिनै कूर सो पाछै उपपा
वे ॥ जैसे रूपकृपरि कौसा वन हारे गिरे
तब पंछिया इ ॥ तब जो ॥ घसकहा इहां
तें आगि लाइकरि मेघवनै गयो तब रा
जा चित्रवर्न संतोष पाइ करि मेघवनैंकुं

कर्पूरद्वीपकौराज्यदीजे।जातैंजोसेवग
कार्यकरिआयौहोइ।ताकौंयोगक्र
रनसौंवेनांहीं॥डिबकुरि।मानकरि॥
बचनकरि।दृष्टिकरि॥वाकौसंतोष
कीजे॥तबचक्रवाककही।तौआगें
कहै।तबवहकहतुहै॥वाकौप्रधान
मंत्रीगीधहै।राजायहनबूझिये।वा
कौंऔरकछूप्रजादीजे॥जातैंजोजि
तनेलाइककहोइ।ताकौंतितनौंहीप्र
सादकीजे॥नीचकौउपकारजैसेंवा
रूमेंकौमूतिवे॥अरुराजाबडेकौं।
जागेरबूझियेसोनीचकौंनदीजे॥
यहकहीहै॥नीचबडौगेरपाइकै स्वामि
हीकौंमारणविचारै॥जैसेंमूसावा
घहोइकैंमुनीस्वरकौंमारणचल्यौ
चित्रवर्नपूछीयहकैसीकथाहै॥
तबहरिदरसीकहतहै॥गौतमसु
निकेतपोबनमेंमहातपूनाममुनिर
होतनिआश्रमकें

कौं छोना काग के मुष तें गिस्यो। देष्यो
मूसे कौं षान कौं बिलार आवत देष्यो
पीछें आपने तपस्या के बल तें वह मू
सा बिलार कीयो। पीछें येक कूकर बि
लार कौं षान आयो। तब वह कूकर
कीयो। पीछें वा कौं पकरन ऐक बा
घ आयो। तब वह कूकर बाघ कीयो
तब वह मुनि पहले मूसा कौं देष
तो तैसे देषे तैसोई बाघ कौं देषै औ
र वा मुनि कौं लोक सब कहै। इन पे
क मूसा बाघ कीयो है। यह मुनि कौ
बाघ बिचास्यो। जो लौं यह मुनि जीवत
है। तौ लौं लोगनि की कहावति मोसें
यह न छूटि है। यह बिचारि मुनि कौं
मारिबे कौं चल्यो। मुनि ऊं ध्यांन करि
वा की वह बात जांनी। तब वह बाघ
मूसा ही कीयो। तातें ऊं कहत दोंनी
च कौं बडो पद न दीजे। और यह ब

घमूसारीकीयो॥तातेंजुंकरतुहोंनी
चकों बडो पदनदीजे॥औरयहबा
तशुगमनाही॥सुनियेकबगुलाबहु
तमछरीछोटीबडीषाइकरि॥अपू
वे मानयेमासषाबेकोंबिचारकरि
केकढाकोंधरतके कहांमास्योरा
जाकहीयहकैसीकथाहै॥गीधक
हतहै॥मालवदेसमेंयेकपद्मगर्भ
नामसरोवरहै॥तहांयेकवृद्धोबगु
ला॥असमर्थआपकोंअनुदेगीसो
जनाइकरिरह्यो॥सुहरतेंयेककें
कढादेष्यो॥असपूछोतूकाहैअत
रछाडिकुषीसेरहतहै॥मेरीमछरीजीव
नि आजुहनमछरीनुकेंजीवरआइ
केंमारहिगे॥यहजीवरकोंबिचारन
गरमेंशुन्यो॥तातेंहोंअलोआहारबि
नमरिहो॥यहजांनिमेंआजुहीतें
अहारछाडेो॥तबतालमेंकीमछ

री विचार्यौ॥ एक समैं हमारौ एक बक
हितू हौ लागत है। जो हमकौं कर्यौं
है सो याहीकौं दृक्रिये। जातें एक
तें है सहुउपकार करै तो ऊ वासौं
संधि करिये। जातें उपकार मित्र कौ
लच्छन॥ मच्छरीन कही कै सैं ऊ तुम
हमकौं राषि लेऊ॥ तब बक कही
ऐ कउ पायहै। हौं इहांतें और पानी
मैं लैराषऊं। मच्छरीन डरतें कही लै
राषऊं॥ तब ऊ ष्ट बक एक एक कै
सब मच्छरी षाई॥ आगें केकटाह
कै सौं कही॥ और बक मोऊकौं लै
हां राषऊ। तब बगुला नें ये मांस प्या
रे की इच्छा करी॥ आदरसौं वाकौं लै
चल्यौ॥ तब बक करिपकर्यौ। केक
टानुहां मछीनके हाड काटे देषि बि
चार्यौ॥ मुये तौ है अभागो॥ अब इ
ह समय कछु करनौ है सो कछु करौं जीतें॥

जोलोंडराईये तोलौंलयंनआवे तबडरआयो जांनिये। तबडर छाडि मारिये॥ ओरआपकोंमारनआयो होइ। तबरिबेकों उपायकों नंदे बिये। तबलाइकरि मरिये॥ ओरजोजुधनकरे तौमरनि:संदेहहै। जुधमेंमरिबेकोंसंदेहहै॥ कहाजांनियेआपहीकोंमारिये॥ यहजांनिश्रमसमेंयजुधन लो॥ यहबिचारि बगुलाकोगरो काट्यौ॥ तातें होंकहतहों अपूर्बबस्तते बगुलामुयो॥ तबचित्रबर्नकही॥ सुनितोमंत्रीमेंयहबिचारिहे। मेघबर्नजोहहाकोराजाकरिये॥ तोहहांकी भली भली बस्तहमकोंपहुंचतरहें। तबतांहमि विंधिवनमें सुषीह्वेरहेंगी

धहसिकरिकही॥ जोआगलीबा
तकैविचारैतेसुषमानें॥ सोउधी
होइ॥ जैसेंकुम्हारकेमाडेफारि
ब्रह्मणदुषपायो॥ राजाकहीय़
हकैसीकथाहे॥ मंत्रीकहतुहेरा
जाऐककोकनंदनामनगरहे॥
तहांदेवसर्मा एकुबाह्मनरहै
तिनमेंषसंक्रांतिकोएककरवा
साहसोपायो॥ वहलेकरिमाटी
नकेबासननरेकुम्हारकेघरस
तो॥ बिचारतभयो॥ बेचौतोंदस
कोडीपाऊं॥ उनकोडीनकोश्री
रसरवालेंउ॥ इहभांतिजबमेरे
बहुतपूंजीहोइ॥ तबनारियर
सुपारीमिरचा॥ बडोव्यापारकरि
लाषनिदामउपराजो॥ दामउपा
र्जिचारिव्याहकरोंतबवेस्त्रीई

षीकरिआगैंकालहकरिहै।तब
हौंक्रोधकरिलागीनमारिहौं।।
यहमनोरथकरिलाठीलाइत
बआपनेंसातकौकरवाफूटे।
औरकुम्हारकेबासनफूटे।।तब
कुम्हारयहसबदसुनिधरतीत
रतेंनिकस्यो।।निकलिबासनका
ढिदयो।। ऊपराछिनाइलये।ता
तेंहौंकहतहौं आगिलीचिंतानक
रियै।।तबराजाएकांतकरिगीध
सोंकही।।बाबाअबजुकरनबूकि
येसोकहो।।गीधकही जोराजाग
वीमुर्षहोइ।।ताकेंआगेंजोमंत्री
होयताकीलोगसबनिंदाकरोहि
जेसेंमदकोहाथीसाकरीगली
मेंचले।।सबलोगमहावतकोंगा
रीदेहि।।औरसुनों।।राजायाहग
टतुमआपनेंबलतेंतास्यो।।कि

श्रोतुमारेखतापकरिहमारेरूपा
यतेटूटो॥ मत्रीकहीहमारोकह्यो
कह्यो॥ तौतुम्हारीजीतिभईहै॥ अ
पनैंघरकौंचलौ॥ नाहीतरबर्षाका
लसिरपरआयोहै॥ सत्रुबराबरि
कौहै॥ अबजोयासोंअटकिपरौ
पराईभूमिमेंनिकसिबोकठिन॥
होइ॥ मुषकीमिलहलमलकरिचलि
ये॥ गढतोस्योजसमयोद्रव्यपायो॥
अबचलिये॥ मेरोतौबिचारयहै॥
जातेंमंत्रीधर्मराषे॥ राजाकीसुह
वती॥ अनसुहावती॥ बिनविचारेंक
है॥ जबराजाकौंकाजआइपरै॥
ऐसोमंत्रीराजाकीसहायजांनि॥
ये॥ औरजोबराबरिकौहोइतासों
प्रीतिकरिये॥ जातेंजुधमेंसदेहहै
षाडेकीडुहौंकोतिधारहै॥ औरमि
त्रधनराज्य॥ अपनपौकीर्तिइन॥

कौ मंदेहमैमैलिजुधकरियेसुकारे
कौ। तबराजाकहीयहबातश्रैसी
येहै। तौपहलीकाहेनकहीयरही
बैठरहते। मंत्रीकहीतबहमारेब
चनतुमश्रादिश्रंतिलौंनसुनेंमेरे
बिचारियहलौहीबिग्रहकीनकती
जातेंराजाहिरन्यगर्भकैगुनश्राति
हीकरिबेलाइककैहै।याहीबेरनबू
झिये।जातेंजोसत्यवंतश्रापतेंबडौ
धार्मिक।जाकेनाइबअहोइबल
वंतहोइ।।अनेकयुद्धजीत्योहोई।।
दुष्टनहोंहि।।इनसातऊँसौंप्रीति
करिये।। सोश्रापनेंसत्यरापिबेकौ
वाबोलतनटलै।। बडौहोयसुजा
नऊकौसंकटपरेंबुरौनकरैधार्मि
कस्योंजीतिबोकठिनजातेंसबजा
वाकेसनेहतेवाकेंसंगलागेलरहि
जबश्रापनौंबिनासजांनियातबदृष्ट

ऊसौंप्रीतिकरिये॥ नातरु और क
काल गमावै॥ वाकौ आश्रेन क
रे॥ और जैसैं गाढीमाटी काटेनक
रि बेढीहोइ॥ तौल्नैंनसकिये॥ तैसैं
भाइनकरियुक्त राजाजीत्यौनजा
य॥ बलीसौंसंग्रामहूकियेनाही
जातेंमेघबयारिकेसामहैंकबहू
नचलै॥ जो अनेकसंग्रामजीत्यो है
॥ ताकेप्रातपहीतेसबहारिमाने
हि॥ जैसौ परसराम के नामहीतेंस
बक्षत्री भाजहि॥ अरजोग्वासौंमि
त्यौरहै ताकैबसिसबसत्रुहै
हि॥ याराजामेएसबगुनहैं॥ तातें
यासौंसंधिकरिये॥ तबयहसुनि
चक्रबाकजासमसौंकही॥ बक
तुमबकरिजाऊ॥ औरसंचारहौं
हिसुआंनिआव॥ आगेहंसचक्र
वाकसौपूछी॥ मंत्रीजासौंसंधिन

नकरिये ताहि है ज्यान्यों चाहत है॥
मंत्री कैंही कहो राजसुनक्रौ॥ बालक
वृद्ध॥ बडो रोगी॥ जातिसों बाहरि हो
इ॥ कातर जाके मनले जोधान होइ
लोभी होइ॥ जाके अधिकारी लोभी
होइ॥ जाको बेराग प्रकट होइ॥ स्त्री
भोग ही मैं आसक्त रहै॥ स्थिर चित न
होइ॥ जो मंत्र करै॥ देव ब्राह्मणकी
जो निंदा करै॥ असिधि होइ भाग की
निंद्या करै॥ दुर्भिक्ष करि पीडित हो
इ॥ जाको कटक दुखी होइ॥ जो अ
पने देसतै छूट्यौ होइ॥ जाके बहुत
बैरी होइ॥ ताको मरन निकट आंनि
ये॥ चंचल चित्त होय॥ धर्म सत्य करि
हीन होइ॥ संग्राम न करि भाग्यो होइ
ये तीवी मसों संधि न करिये॥ युध करि
मारिये॥ बालक सों संधि न करिये जा
तें ... वा।

षिकोऊनलरै॥ जातैं बालकइं
प्रमाद न करिसके॥ जातै वृधअ
रोगी येदोऊउछाह॥ सक्तिकरिहीं
न होंहि॥ आपहीते उषपावहि॥ जो
जातिहीन होई सो सुषही मारिये
कातर जुधतैं आपही साजै॥ जाके
लोककायर होहि॥ ते जुधमैं छाडि
जाहि लोभी अंति भाजिजाहि॥ जा
के लोभी होंहि॥ ताकौं वैलोगही
मारैं॥ बेरागीकौं प्रजाहरहीतछा
डे॥ जो भोगकरिआसक्त होईसो
सुषही मारिजे॥ जु एकचित्तहोय
मंत्र न करै॥ ताहमंत्री छाडहि॥ जु
देवब्राह्मनकी निंदाकरै॥ सो अ
धर्म हीते जाय॥ जाको कटकदु
षी होई॥ सुकैसे जुधकरहि॥ जा
ते देस छूटौ होइ॥ सुछोटेकू सत्रुक
रिमारिये॥ जैसे पानीमैं नक्रछोटो

बड़ेहाथीकौंलैजाइ॥ जाकौबङु
तसवहोइ॥ सोजहीजायतहीमा
रिये॥ समैबिनाजांनैंजोबङुतसे
नासहितछोटेङुसत्रसौंसंग्राम
करैसोहारै॥ जैसैकौवारात्रिवि
षैउलूषसैंसंग्रामकरैमरैजैसे
अधियारमैंआरसी॥ जोसत्यधर्म
करिहीन॥ तासौंप्रीतिकरियैतौ
नरहै॥ औरश्रुति॥ संधिकहियेप्री
ति॥ विग्रहकहियेवैर॥ आसनवे
ठिबो॥ जानुजात्रा॥ द्वैधकहिये
भेद॥ आश्रैकहियेराजनुगरिबङु
णराजाकेहद्दिदेसकौजानिवौ
सबहीकर्मनकौकरिवौ॥ उपाद
मनुष्यकीऔरद्रव्यकीसंपदाजे
उबआवै॥ ताकौनसायवैकौउ
पायजानै॥ ममवकी [illegible]

चौमंत्रकेअंग॥ साम॥दान॥दंड॥भेद
एचारिसत्रुबसिकरिबेकोउपाय
उछाहसक्ति॥प्रभुताकीसक्ति॥ऐती
निसक्तिसबअपनीपराईबिचारि
कैंतौसत्रुपरिचढिये॥तौजीतिये॥
जातेंजोलछिमीप्राणकेंदीयेंनप
ईये॥ऐसीचंचलालछिमीनीतिमा
रगसदाचलै॥ताकेंआपुहीघरबैठे
आवै॥जाकैंदबिकोषरचजहांजि
तनोंबूझिये॥तहांतितनोंबंधानदी
ये॥जासूसीअरुमंत्रगुप्तहोइ॥काहू
सोंअप्रियबचननकहै॥सोराजाश्रा
समुद्रतछिथीकोराजाहोइराजा
जद्दपिमंत्रीसंधिकरनकह्योहैतो
ऊजयकेबलकरिराजाअबहीवाको
कह्यौनमांनिहै॥जौतेंजोहौंकहौंसो
करऊसंघलदीपकोराजामहाब

लनामा सारसोहमारो मित्रहैाजं
बूदीपमेंमंडलकरै॥ जातेआप
नीसेनाकी रच्छाकरि॥सत्रुकीसे
नैकोआगेपाछेरातिदिनकरि
मारिकष्टदेहगे॥जातेदोऊता(
तेहांहितोमिलहि॥जैसेंतातेंकी
योलोहमिलै॥राजाकही ऐसीये
करऊ॥तबचक्रबाकबिचित्र
नामबक:कागलदेगुप्तहीसंघ
लदीकोपठायो॥इहबीचिजासू
सबगुलाआनिकही॥सुनियेक
नहांकेसमाचार॥ उहगीधकही
राजासों॥एहमेघबर्नकागगढ
मेंरह्योहैबहुतदिन॥वहराजा
हंसपीतिकरिबिलाइकहैकि
नाही॥तबराजाकागबुलाईपूछै
केसोवहराजाहै॥केसोवाकोमं
त्रीहै

राजा तुम साध्यात रहे हे॥ मंत्री चक्र
वाक सैमैनाही देख्यो॥ राजा कही
तौ तै कैसे वाकौ डरकयो॥ अरु ग
ह्मै तूं कैसे रहन पायो॥ राजा तुजा
की बुती तिकरे॥ ताके डरक रैकौ
न बार॥ जैसौ जाके गोदमैं जु सोवे॥
सु ताकौ जे मारै तौ वह कहा करे॥
राजा सुनौ॥ उतिचक्र वाक मोकौं दे
षत ही जान्यौ॥ परु राजा बड़ौ महंत
तातै मै डरक्यो॥ जातै आपनी नप
मांकौ जो उ जैनकौ सत्य वृक्षा करि
जानै॥ ताकौ सब्रु डरकै जैसे बाल
ण छाग निमित ठग्यो॥ राजा कही य
ह कैसी कथा है॥ काग कहत है॥
गौतम आरन्य मैं एक ब्राह्मण जग्य
करिवे औरगा वृतै एक छाग मोलि
लयो॥ आवत ती तिठगनि देख्यो
तब वे तीन्यो ठग आगे जाइ येके

मैंजुदेजुदेवैवेतीनोरूषतरातब(
वहब्राह्मणयेकहिरगपूछ्यौ॥अ
रेब्राह्मणयहकंकरकांधेपरचढ
येकहांलीयेजातहै॥तनिकहीय
हककरनहोई॥बुकराहै॥आगे
कोसयेकपरदूसैरेंठ्ठहीभांतिपू
छ्यो॥वहसुनिब्राह्मणछागकोंउ
तारिदृष्यो॥बहुरिकाधेलेसंदेहक
रतचल्यो॥जातेंदुष्टनकेबचनतें
साधऊकीमतिसंदेहमेंपरै॥जोइ
नकेबचनकीप्रतीतिकरैसोमरै।
जैसेंचित्रबर्नमुयो॥राजाकहीय
हकैसीकथाहै॥कागकहतहै॥
कौनऊंदेसमेंबडेबनमेयेकामदो
त्कटकासिंघरहै॥ताकेसेवग का
गबाघस्यारयेतीन्यो॥बनमेंफिर
तयेकऊंटदेष्यो॥१
मक ... का

ट आपनैं समाचार कहे । हैं मृग
ते मूलि आयौ हौं । उनि वहलै
सिंघ कौं दीयौ । संघ वाकौं अमैं दा
न दै करि चित्र वन नाम धरिकै रा
ष्यौ । एक समय अति वृष्टि संघ कौं
बिन आहार पाये बिग्रता देषि । इन
तीन हूं बिचारी । जैसें चित्र वन कौं
संघ मारे । सो ऊपाय करे । यह क
हि रिषाइ । यातौं हमारो कहा का
जै सरिहै । तब व्याघ्र कही । राजाय
ह अमै दान दै राष्यौ है । कैसें मारि
है । काग कही । इहि समै राजा छी
न राजा पाप हूं करिहै । जातें मूषी
डा कि निअपनै बेटा कौं षाइ ।
मूषी सापनि अपनैं अंडा षाइ । भू
षो कौंन पाप न करै । जाकी छीन
मनुष्य कै दया नाहीं रहति । और म
द करि माते होइ । असावधान बा

वरोक्रोधी॥अग्यानी॥त्रषोलोभी॥इ
रानोंउन्ना ह्लै॥कामीये सबधर्मको
नकोंनजानहि॥यहबिचारकरि
तीन्यौसंघकीनिकटगये॥तबका
गकहीराजा बहुतजतनकरिषो
ज्यो॥ परआहारकहुंनाहीपायो॥
सिंघकहीतोअबकैसेंजीवहिंगे॥का
गकहीराजाहाथकोआयोआहारबाइ
तहो॥तातेंओरहूंठोरनांहिनेंपाइयतु
सिंघकहीइहांकोनुआहारहो॥काग
कानमेंकही॥यहचित्रबर्नहे॥मारि
षाइये॥तबसंघकही मारियेकैसें॥
मेंयाकोअभेदांनदीयोहे॥जातेंयह
कहीहेनीतिबिषें॥भूमिदान॥सर्बदां
न॥ अंनदान॥आतमदान॥एसबदा
नअभेदानकीबराबरिनकरिसकें
औरसबविधिकरियुक्तअश्वमे
धजग्यकीयेफलहोइ॥ २

नागत रोषें होय। तबकागकही
जातुम मतिडरहु। हमनयाइकरि
हैं जोया आपनौसरीरआपनीही
दैहै। सिंघयहसुनिचुपकैरहौ। त
बकाग सिंघको मनुजांनि। कपटक
रिसबहीकोलेसिंघकेंनिकटगये
कागराजासोंकही। राजाआहारके
ऊनाहीपायतु। मोहिमारषाऊ। तुमब
हुतदिनकेभूषेहो। जातेंजोराजानहो
इ तौप्रजाकेसेंजीवे। जैसेंआयुर्दवि
नाधन्वंतरिन जिवाइसके। औरसबप्र
जाकोमूलराजाहै। वृक्षकोजोमूलर
हेतौ आगेंसबपत्रफूलहैहि। सिंघक
हीवरुमरियेसुभलो। ऐसोकर्मन
लोनाही। पीछेंस्यारहु कागकीसीबा
तकही। सिंघसुनिवहैउत्तरदीनों। त
बचित्रकर्नराजाराजासोंकही। राजाम
रोसरीरषाइकरिआपनोंप्रानरापि

ये॥यहकहतहीस्यंघदाकोपेटफाडि
षायो॥ तातेहौंकहतहौं॥दुष्टकेब
चनतेंमलेऊकीवुधिचलौ॥तबतीस
रेठगिकह्यो॥ अरेबांम्हनयहकूक
रकांधेपरकाहेलयेहै॥तबवाकौ
कहेबांम्हनबोकराकौंछाडि अ
नकरिघरगयो॥उनतीनिहूंनमिलि
वोकरामारिषायो॥तातेंहौंकहतहौं
आपनीउपमांकरिऔरकीघनी हि
करैसुडहकावै॥राजाकहीसेघव
नेतुमबहुतसंत्रनुमेंकैसेंरहेअ
रुकैसीसैंउनसौंप्रीतिकीनी॥कागक
हीराजास्वामीकेकाजकौं॥अरुआ
पनेकाजकौंकहांनाहीकरियेउ
नदीरूषकेमूलकौंषोवतहीवह
वे॥ अरुवुधिवंतहोइसुअपनेंका
जकौंसत्रुकांधेपरचन [illegible] नैमें।
बूडेसांपकरिवहु८

रे॥ राजापूछीयहकैसीकथाहै॥ का
गकहतहै॥ जीर्णोद्याननामबन
में॥ मंदावीनामयेकसरपरहैशुत्र
तिबूटो॥ आहारकोंफिरिनसकैं
तालकीतीररहै॥ येकभीडुकर
हीतेवासोंकही॥ तुमआपकोंआ
हारनाहीषोजत॥ परेईरहतहो
सुकाहेतेतबआपकही॥ जाऊ
कहांमोआगिकोंपूछतहो॥ व
हिरवकरिआश्चर्यतेपूछो॥ तब
सर्पकही॥ याबलपुरमें॥ कोडन्म
नामब्राह्मणकोपुत्रवीसवरष
को॥ अतिगुणी॥ मेंआगपतेंवा
कोंकाटो॥ वाकोंमूर्छितदेषिमांव
तेंभूमिपर्यो॥ पाछेंवागांवकेबा(
सीभाईबंधसबमिलितहांआये॥
जातेंसुषमेंदुषमेंसत्रकेयुधमेंरा
जद्वारमेंसमसानञ्रमसैं॥ जोसंगर

है॥सो बंधु जानि॥ तहां ये कंकपिला
म ब्राम्हण कही॥ और कोउ अन्य तृम्
ये हहि॥ जो इह आतिरावृत्त है। जातें
जो उपज्यो जाकों मृति निश्चे है॥ और
सकल सुषम्हगे कहियत है। सुनि
यह सोक जातें उपज्यो॥ ताकों पह
लें मृत्य की गोद बैठे है॥ पीछें मा
ता की गोद बैठो॥ जैसें धाइ पहलें
आपले पीछें महतारी देइ॥ ऐसे मनुष्य
कों सोक कहा कीजे॥ और सेना सहि
त बडो राजा जुधिस्थिर आदि दे सब
कहां गये॥ उनके वियोग की सोभि दे
नकों भूमि रही है॥ सरीर कों मृत्यु ना
रें है॥ संपदा आगें ही आपदा है॥ संजो
गकें आगें वियोग है॥ तातें उपज्यो सो
नासि है॥ और या ही घरी घरी घटतु
है॥ मूये ही गये जानियतु है॥ जैसें का

चौघटुपानीमैंघरीघरीघुरै॥फूटैं
हीजांनिये। औरजाकौंजनमन
यो॥ ताकौंमृत्यघरी२नीरेंआवति
है जैसेंअपराधीकों॥ राजआग्य
मांनिमारिबेकोंठोरलैचलैं॥ तब
वाकोंवाठोरपगपगनीरेंआवे॥
औरजोबनरूपद्रव्यकोसंयहुजी
वनठकुराई॥ मित्रनकोयेकठौर
बास॥ येसबअनित्यहैं॥ तातेंपंडि
तहोइसोकनकरै॥ जैसेंनदीके
प्रवाहकेवेगकेरिकऊकेकारण
कत्रमिलहि॥ बहुरिवाहीकेबेग
तेंन्यारेन्यारेहोंहि॥ तैसेंप्राणीकेवे
गकरियेकत्रहोंहि॥ अरुन्यारेहोंहि
जैसेंपंचमहाभूतयेकत्रमिलहि॥
तबदेहउपजे॥ वेपाचोंन्यारेहोहि
तबदेहीजाय॥ ऐसीदेहकेउपजे

नमानेंपंडितहोइ॥सुखुषनकरै॥
तातेंमनुष्यजाबस्तमेंजितनो
स्नेहकरै॥ तितनौंसोककोबी
जबोवे॥यासंसारमेंकाऊसोंस
दायेकत्रहिवोनांही॥आपनी
देहसोंसदासंगनाही॥औरसोक
हातेहोइ॥संजोगयेकदिनबियो
गकरै॥जैसेंजन्ममृत्यकोआगमक
हो॥आपनेभाईबंधनकोमिलिबो
मिलहीमैंनीको॥आगेंबिछुरेंदुष
देइ॥जैसेंअपथ्यबस्तुषातहीछि
णमीठी॥आगेंरोगउपारजै॥जैसें
नदीकोप्रवाहजाइपेफिरैनाही
संसारमेंसांधसंगति॥सबसुषतें
अधिकहै॥परिसोऊबियोगरूप
षांडेकरिकाटेहै॥तातेंयहबडौ
दुषहै॥पंडितमृत्यकोंसमझिसब
हीटी

तादिनतें म्रत्युहीसों सामहोदोरत
है॥ तातें संसारमैंकी यहगतिहै
जानि सोककरै सोमूर्ष॥ जोअग्या
नसोककोकारणहै॥ वियोगका
रणहै॥ तैसेंही दिनबाढे॥ घटैकै
सें॥ तातें अग्यानकारण॥ दिनकैं
जातअवस्थानकें घटै सेकोघटै॥ ता
तें आत्माकोंविचारकरिसोक
छाडियें॥ जातैंअकस्मातुहीला
गे॥ आलेमर्मकोंछेदे॥ अैसोजसो
करूपीघावताकोंनसमुझियेवि
सारिहीडारियेयहैऔषध॥ तबकौ
डन्यराखिकरिबोल्यो॥ तोअबगृह
रूपीनमेंवासपर्यो॥ अबहोंबन
हीजैहों॥ कपिलमुनिकही॥ अनु
रागीकोंबनहूमैंदोषउपजे॥ जितें
द्रियघरहूमैंरहैतोदोषनांही॥ जो
फलकीवांछाछाडिदेकैकर्मक

रिबिस्मकोंनजै॥ ताकोघरबनहु
तेंअधिकहै।कौंनकुंआश्रमेंरहै
दुषोपाइकरिजोधर्मकरतहैंस
बजीवमेंदयाकरै॥सोईतपसी।
जानियें॥यहऔरककहीहै।जोप्रा
णराषिबेकौंआहारकरै॥संतति
कौमैथुनकरैं॥सत्यबोलिबेकौं
बचनकहैं॥तेसबदुषकौंतिरहि
यहकहीहै॥आत्मारूपीजोनदी
तामेंस्नानकरहि॥कैसीहैनदी॥
जहांमहाज्ञानघाटहै॥सत्यरूपी
जलहै॥सीलरूपकरारेहैं॥दया
रूपीतरंगहैं॥जातेंपानीकेन्हायें
अंतहकरनशुद्धनहोइ॥औरसु
नु॥जन्ममृत्यु॥बुढाई॥बेदनक
रिव्याधयासंसारमेंकछुसारनां
हीं॥दुषहीकौंसबसुषकरिमान
तहैं।जैसेंज्ञानवाहक॥ज्ञारकौं।

उत्तरे सुषकरि मानैं॥ तबकौंडनि
कही यह बात निश्रैसी है॥ त्रिनि
ब्राह्मणनि मोकों श्रापदीयो॥ श्रा
गुतें तू मेंडकनि कौ वाई है है॥ त
तब ब्राह्मण कही॥ कौंडन्य तेरेह्र
दो उपदेसकों जोग्य है॥ अबउप
देस सुनि॥ संग सर्बथा छांडिये॥
जो न छांडिये करिये तो॥ साधसंग
ति करिये॥ जाते साध को संगस
ब संग तें छिड़ावै॥ यह सुनि वह
ब्राह्मण को धछांडि संन्यासी भ
यो॥ तब तेक ब्राह्मण कोश्रापभो
गवे निमति मेंडकनि के निर्वाह
करन पैइहां आयो है॥ तब वह जि
लपाद नाम मेंडुकन के राजासे
यह वृतांत कह्यो॥ सुनि करिरा
जा जलपाद सर्प की पीठि पर चढ्यो
तब वह सर्प वाकों पीठि पर चढ

मे·२२८मी०
वृ·२२८कुं०
मि·३२३ मं०
क·३२३ धु०
सि२२५ वृ०
कं२१८तु०

सायनार्कस
छायीयत्प
नाडि कादि
सैवेष्ठ युक्
म्याग्लग्न
व्ययनाश

व२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मि३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
क३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
सि४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कं५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
तु६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
वृ७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
ध८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
म९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कुं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ताकाघ्ररापड॰:समहाराजाहुकम ॥
द्वीरराकांनकुंनापगनाव्लागोःजानेंर
छरश्रीगर्णेसजीश्रीअरतश्रीःश्री
गुर्णेसजीश्रापरताषमकुंदीवाम
नापूरवापुंःलमरगहतमारीःता
नपुंकुंरतार्थहगोःश्रीश्ररसतजीकुं
दीपुदःश्रीहीराजाकुंचीतरश्रीमाहा
देवजीकुंगमश्रीहीमाश्रीरीश्रतदीपरीः
माहादेवजीकुंहुकमनातुपरापुंहदे
तोःश्रीरमाहादेवजीकुंनौंकागीःसं
गरामवर्षर्कैटीतनपुंःमाहादेवजी
कुमारीडारतनागोंःत्रीसपुंहदी
व्रंपुःदेतव्हीहीजैःतवश्रीरर्णेसमजी
भरतापतीःतपिवरापुंहतमारीःसं
वृंदेहुरतंपुंःतालदीराजाड्रप्रीःम्हउल
कुमश्रीःरर्णेसजीश्रीवं ।।दीः

आमकर: रागौंलक्ष्मीठश्रीराम
तीमनाईश्रीमहीद: पतीट: तबराजा
नेल युगीतांनीकुंफुरर्तीह: प्रापनदि
श्रीनश्रीपतीट: प्रापुनग्राधीह: तब
रतनश्रीमाहाराजाप्रीतीश्रीउठ है
मीट: तबराजा बाहर ग्राप्री: तब
पाश्रीश्रमु श्रीमीलगी: तब पाश्री
तलाश्रु रतनप्रा: तलामीश्रीरतनमी
पनाईमीरासलीश्रार्ले रश्राश्रीमीश्रु
तबराजाश्रीविलक्ष्मीश्रमारीनरी: तब
उबालक्षु मारबाबु ली सला: रतबलीरा
मलीश्रीपरमीलीश्रीकुमरन श्रीरीश्रीप्री:
गुमजोटीमीमंश्रवीकाईश्रीरतारी: मंश्रठ
श्रीश्राठएहारदी: मंत्रीमंश्रठ श्राठीमीराकु
मानकुहश्रनाश्रमालीडारतार: तबलीग
श्रीमजीसीरांमलगश्रीडेजमारीश्रीरागापा

ोरमैवणी।।घाडिरामनीग्रालहग।
मीगुगारीश्रीःनीरामनीग्रालडग्र।
रारगुगारीगरीःरातला श्रणीतम
तालराजाशीवानद्रुपीग्रुनमगाश्रीः
घाग्ररीगीघ्रीरुद्रश्रमामाघूश्रीघ्रारी
घ्रुरीघ्रतीदेवीजाश्रीश्रमारीईडारीः
श्रीअमारथामगनीहणरीःश्रीहीरा।
गा।उत्रुथी६१श्री।।गीमाजाश्रुलानमा
नमाश्रीघ्रीदेवमलीनाघीःराठावीरा
मणीश्रीगरणीमणीश्रीममरणघ्ररघी
घीःराबश्रीगरणीमणीमारावीनम
उरश्रीगुनमधारीश्रघ्रीरगग्रामाःहरीर
टीलमीश्रीलालगरीतालघाराहश्र
ानाश्रीःश्रीरामनीश्रहीशेतुग।रीग्रा।
।।।मलीलालगुमारीगातीतुमरीजा।श्री
तीरमलीश्रलठरीजागुमनाश्रीगुघु